'..और हमने कर दिखाया'

(देश के कुछ प्रतिभावान बच्चों की कहानियाँ)

प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

BNP - 1925
8/2/18

33/66

ग्रन्थमाला संख्या : 19

'. . . और हमने कर दिखाया'

प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ–226001
दूरभाष : 0522–2614470, 2614471 फैक्स : 0522–2616465
ई–मेल : directoruphindi@yahoo.in वेबसाइट : www.uphindisansthan.in

प्रकाशक :
मनीष शुक्ल
निदेशक
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
लखनऊ

ग्रन्थमाला संख्या : 19

बाल साहित्य संवर्द्धन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 2016

© उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

प्रतियाँ : 1100

मूल्य : ₹ 60=00 (साठ मात्र)

ISBN : 978-93-82175-66-7

मुद्रक
रोहिताश्व प्रिण्टर्स
268, ऐशबाग रोड, लखनऊ
फोन : 2692973

प्रकाशकीय

देश–विदेश की अनेकानेक प्रतिभाओं के सम्बन्ध में यह सच अनेक अवसरों पर सामने आता रहा है कि बचपन में ही उन्होंने 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की तर्ज पर अपनी प्रतिभा का संकेत दे दिया था। भारतीय इतिहास में ऐसी अनेक महान प्रतिभाओं की जीवनियाँ इसका प्रमाण हैं। आधुनिक काल में भी यह म निरंतर जारी रहा है और ऐसे में अब ऐसा माना जा रहा है कि आँख खोलते ही शिशु, बच्चे और किशोर जानने और सीखने की अदम्य आकांक्षा में रचे–बसे होते हैं। ऐसे में कुछ न कुछ पढ़ने और करने के बीच उनकी सक्रियता देखते ही बनती है। समाज विज्ञानियों का तो यहाँ तक मानना है कि आज उनमें यह प्रवृत्ति पहले के मुकाबले कहीं अधिक है। वर्तमान बाल पीढ़ी प्रेम, भाईचारे, अहिंसा, अनुशासन व साहस सरीखे मानव मूल्यों के साथ–साथ तत्काल अधिकाधिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए समर्पित है।

ऐसे में उन्हें उचित मार्गदर्शन हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी बनती जा रही है। इस सम्बन्ध में निरंतर शैक्षिक जगत में शोध हा रहे हैं और प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर ही बच्चों में अन्वेषण की प्रवृत्ति को निरंतर प्रोत्साहन मिल रहा है। इसी का परिणाम है कि बच्चों में नया कुछ कर गुजरने की प्रवृत्ति लगातार बढ़ रही है। ऐसे होनहार बच्चों से अन्य बच्चे और समाज के विभिन्न वर्ग प्रेरणा ले सकें, इस सद् उद्देश्य के साथ ही प्रबुद्ध लेखक प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव ने इस पुस्तक '. . . और हमने कर दिखाया' के लिए कुछ ऐसी प्रतिभाओं का चयन किया है, जिन्होंने ज्ञान–विज्ञान और कला के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों से देश और दुनिया को आश्चर्यचकित किया है। सहसा विश्वास नहीं होता कि देश के किसी अविकसित क्षेत्र की कोई बालिका एवरेस्ट पहुँचती है, तो कोई दूसरा बच्चा संगीत और कला की गहराइयों में डूब कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहा है या विज्ञान और खेलों में अपनी मिसाल आप बन रहा है, मगर सच यही है कि अब आधुनिक भारत की यह उल्लेखनीय उपलब्धियाँ है।

ऐसी प्रतिभाओं से अभिभावक और बाल पीढ़ी प्रेरणा ले सकें, इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान अपनी बाल साहित्य संवर्द्धन योजना अन्तर्गत इस पुस्तक '. . . और हमने कर दिखाया' का प्रकाशन कर रहा है। इसके लिए वरिष्ठ लेखक/पत्रकार प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव ने जो मेहनत और सद्प्रयास किये हैं, उसके लिए हम उनके आभारी हैं। आशा है कि न केवल बाल–मन को यह अनूठी पुस्तक प्रभावित करेगी, उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में अधिकाधिक मेहनत और उपलब्धियों के लिए प्रेरित करेगी, बल्कि अन्य जागरूक पाठक वर्गों के बीच भी सराहना पायेगी।

मनीष शुक्ल
निदेशक

निवेदन

लम्बे कालक्रम में मनुष्य की जो असाधारण उपलब्धियाँ हैं, उनकी पृष्ठभूमि में बचपन का योगदान भी कम नहीं है। कहा जाता है कि बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति सर्वाधिक होती है और वे न केवल विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित सवाल उठाने में सबसे आगे रहते हैं, अपितु उनका उत्तर भी तत्काल पाना चाहते हैं। कालान्तर में यह प्रवृत्ति ही विकास और ज्ञान के उच्चतम शिखरों को सार्थक बनाती है। ऐसे में, जानने और करने की यह बाल जिज्ञासा ही मनुष्य मात्र की वह सर्वप्रमुख धरोहर है, जो अनन्त काल से मानव समाज को अनेकानेक उपलब्धियों और ज्ञान से गौरवान्वित करती रही है।

स्पष्ट है कि ऐसे में बच्चों को यदि समय पर उचित प्रशिक्षण और दिशा निर्देशन प्राप्त हो, तो वे विभिन्न क्षेत्रों में छोटी उम्र में ही असाधारण उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकते हैं। पंचतंत्र व हितोपदेश जैसी कहानियों, गुरुकुलों के अनुशासित जीवन और गहन प्रशिक्षण में इसकी झलक अतीत में भी मिलती है। आधुनिक समय में विकास के साथ–साथ बच्चों को ऐसा मार्ग–निर्देशन लगातार विस्तृत हुआ है और परिणामस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपलब्धियों का दायरा न केवल बढ़ा रहा है बल्कि वे विस्मयकारी हैं। जिजीविषा, प्रशिक्षण, असाधारण परिश्रम और उचित दिशा–निर्देशन के बीच कभी कोई बच्चा या किशोर ज्ञान की विशिष्ट ऊँचाइयाँ छूता है तो कभी कला, संगीत और विभिन्न खेलों में अपनी प्रतिभा का परचम फहराता है। विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में उनकी असाधारण उपलब्धियाँ भी अनेक अवसरों पर हम आपको आह्लादित करती रहती हैं।

ऐसे में आज विशेष रूप से बच्चों को न केवल व्यापक स्तर पर उचित प्रशिक्षण और दिशा–निर्देशन की आवश्यकता है अपितु प्रोत्साहन भी जरूरी है। लेखक और पत्रकार प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव की यह पुस्तक '. . . और हमने कर दिखाया' इस दिशा में मील के स्तम्भ सरीखी है। निश्चय ही उन्होंने देश के अनेकानेक होनहारों के बीच से इस पुस्तक के लिए कुछ प्रतिभाओं का चयन करके स्तुत्य कार्य किया है। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए उन्हें साधुवाद। वह भविष्य में भी नई पीढ़ी के प्रोत्साहन के लिए इस तरह के सद्प्रयास करते रहेंगे, ऐसी अपेक्षा है।

आशा है कि बच्चों, किशोरों और सभी वर्गों के पाठकों के बीच उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के इस प्रकाशन का स्वागत होगा और वे इन प्रतिभाओं से प्रेरणा लेकर बचपन को और अधिक संरक्षित/परिवद्धित करने की दिशा में जागरूक होंगे। देश के सुखद भविष्य के लिए यह जागरूकता अनिवार्य है क्योंकि हम सभी जानते हैं कि बच्चे ही हमारी महान प्राचीन धरोहर, गौरवपूर्ण वर्तमान और सुखद भविष्य के वास्तविक संवाहक हैं।

उदय प्रताप सिंह
कार्यकारी अध्यक्ष

अपनी बात

यह पुस्तक उन मेधावी, प्रतिभावान और रचनाधर्मिता से जुड़े कुछ नौनिहालों की दास्तान है, जिसे आप तक लाने में मुझे दो वर्षों का वक्त लगा। भारत भूमि साहसिक, बौद्धिक और धुन के पक्के होनहारों से भरी हुई है। कम उम्र में बड़ी उपलब्धि हासिल करने वाले इन रोशन चिरागों की जीवन गाथा बेहद प्रेरणाप्रद है, जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी और अपने लक्ष्य को हासिल करके ही माने। कामयाबी की राह में कभी पैसा आड़े आया तो कभी परिस्थितियां। लेकिन इन सभी विजयी बच्चों की कहानी में एक बात जो समान है, वह यह कि उनके माता–पिता और कोच या गुरु का भरपूर सहयोग उन्हें मिला। कहा भी जाता है कि कामयाबी तभी कदम चूमती है, जब सभी लोगों का साथ मिलता है। मेरा तो मानना है कि सभी बच्चों में कोई न कोई प्रतिभा जरूर होती है। बस जरूरत है उसे पहचान कर बाहर निकालने की।

मुझे ऐसे भी बच्चे मिले, जिन्होंने सीधे कक्षा आठ में दाखिला लिया। उनके अभिभावकों को मानना था कि स्कूल में बच्चों की नैसर्गिक प्रतिभा अनावश्यक गतिविधियों में उलझ कर नष्ट हो जाती है। स्कूलों का मुख्य उद्देश्य बस किसी तरह पाठ्यक्रम को रटाकर रिपोर्ट कार्ड बेहतर बनाना होता है। सच्चाई तो यह है कि छोटे बच्चों का पाठ्यक्रम मात्र दो महीने का होता है। आये दिन छुट्टियां और स्कूल वाले ऐसी व्यवस्था करते हैं कि अबोध बालक पढ़ाई के अलावा अन्य क्रियाकलापों में उलझा रहे। सुषमा वर्मा, नैना जायसवाल व सत्यम सिंह ऐसे ही बच्चे हैं, जिन्होंने कम उम्र में हाईस्कूल से स्नातक तक अच्छे नम्बरों से पास किया। यहां मैं मलवथ पूर्णा का जिक्र भी करना चाहूंगा जो मात्र तेरह साल ग्यारह महीने में सबसे कम उम्र की एवरेस्ट फतह करने वाली दुनिया की पहली बालिका बनीं। पूर्णा निजामाबाद, तेलंगाना की रहने वाली एक आदिवासी बालिका हैं, जिनका घर जंगल के बीच में है और उन्हें किसी भी चीज के लिए सात किलोमीटर पैदल चल कर बाजार आना पड़ता है। उनके पिता खेतिहर मजदूर हैं। पूर्णा के साहस के आगे एवरेस्ट को भी झुकना पड़ा।

मुझे उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से बैठ कर देश के कोने–कोने में फैलीं प्रतिभाओं तक पहुंचना था। उनकी जानकारियां हासिल करनी थी। उनके परिवार, गुरु व कोच से बात करनी थी। यह एक बेहद दुरूह कार्य था। लेकिन जहां चाह होती है, वहां राह भी होती है। इस काम में मेरी सबसे ज्यादा मदद बेलगाम कर्नाटक निवासी कोच व बेलगाम की पहचान स्केटिंग के गढ़ के रूप

में दिलवाने वाले सूर्यकान्त हिंडालगेकर ने की। मुम्बई की कविता ठाकुर जी, उज्जैन की संगीता कल्याणी जी ने अवार्ड पाये अनेक बच्चों तक पहुंचने में मेरी भरपूर मदद की। इस यात्रा में कई बच्चे तो ऐसे मिले, जिनके भाई व बहन दोनों ही प्रतिभावान हैं।

जब यह काम शुरू हुआ तो मुझे फोन आते कि हमारे बच्चे को भी इसमें शामिल कर लें। ऐसे में मेरा एक ही फार्मूला था कि बच्चे ने कम से कम राज्य या राष्ट्र स्तर का सम्मान जरूर प्राप्त किया हो। यह जुगत काम आयी और मैं अनावश्यक तनाव से बच सका। सभी खेल संघों ने भी भरपूर सहयोग किया। अनेक स्कूल और स्पोर्ट्स हास्टल भी इस यज्ञ में मेरे हितैषी व सहयोगी बने। मैंने एक सौ पच्चीस से ज्यादा बच्चों का साक्षात्कार किया, जिसमें फिलहाल पचास को आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं। इनका चयन काफी मुश्किल था। मेरी कोशिश होगी कि अगले संस्करण में बाकी बच्चों को भी समेट लिया जाए।

कुछ बच्चे तो इतने प्रतिभावान हैं कि वे गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में एक बार या दो बार नहीं बल्कि तीन–तीन बार दर्ज हुए हैं। कुछ बच्चे देश की सीमा को लांघ कर विदेशों में अपने हुनर का लोहा मनवा चुके हैं। यह हमारा दुर्भाग्य है कि इन हुनरबाजों के बारे में हमें बहुत कम पता है। दक्षिण भारत हो, उत्तर पूर्व हो या मध्य भारत, यहां की प्रतिभाओं के बारे में उत्तर प्रदेश के लोग बहुत कम जानते हैं। इसी तरह दूसरे प्रदेशों के लोग यहां की प्रतिभाओं के बारे में बहुत कम जानते हैं। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रख कर इन प्रतिभाओं को पुस्तकाकार रूप में एक साथ आपके सामने लाने की योजना मन में आयी। हमें खुशी है कि देश की इन नामचीन प्रेरणाप्रद प्रतिभाओं को आप तक पहुंचाने का बीड़ा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने उठाया। इस संदर्भ में मैं अपनी पत्नी रंजना सक्सेना के सहयोग को नकार नहीं सकता, जिन्होंने अपने हिस्से के कीमती वक्त में मुझे काम करने की पूरी छूट दी। किताब आपके हाथ में है, आपकी प्रतिक्रिया और सुझावों का इंतजार रहेगा।

प्रेमेन्द्र श्रीवास्तव
मोबाइल : 09415304676
ईमेल : premendra.sri2011@gmail.com

अनुक्रम

	नाम	पृष्ठ सं.
❑	एवरेस्ट पर पहुंची आदिवासी पूर्णा	1
❑	'भारत की मलाला' रजिया सुल्तान	4
❑	कम्प्यूटर से होड़ करती प्रियांशी	6
❑	'ग्रीन गर्ल' युगरत्ना	8
❑	आखिर 'तमन्ना' की तमन्ना हुई पूरी	10
❑	दूसरों के जीवन में रंग भरती प्रकृति	12
❑	13 साल में सुषमा बनी ग्रेजुएट	14
❑	नन्ही जलपरी स्वप्नाली यादव	16
❑	शौर्य ने छू लिया आकाश	19
❑	जीनियस है यशस्वी	21
❑	चित्रकला हो या अभिनय, सराहे गये निहार	23
❑	गोल्फ ही है अदिति की जिन्दगी	25
❑	शतरंज में बेमिसाल दिव्या देशमुख	27
❑	प्रतिभा के धनी दिव्य प्रकाश पाण्डेय	29
❑	'गगन' छूने की ख्वाहिश	31
❑	नन्हा "पेटेंट होल्डर" हृदेश्वर	33
❑	जन्मजात कलाकार हैरिस इम्तेयाज खान	35
❑	अदभुत प्रतिभा की धनी नैना	38
❑	निक्षेप के कीर्तिमान	39
❑	गिनीज बुक में तृप्तराज	41
❑	अभिनन्दन ने रचा इतिहास	43
❑	"लिटिल बिलगेट्स" हैं अमन रहमान	45
❑	पैदाइशी कलाकार हैं आरुषि	47
❑	अगम की उंगलियों का जादू	49

	नाम	पृष्ठ सं.
❑	प्रतिभा की धनी हिफ्जा बेग	51
❑	करुणा ने किया कमाल	53
❑	बेमिसाल "गूगल गर्ल" मेघाली	55
❑	शतरंज ही है माही की दुनिया	57
❑	मोइन के जज्बे को सलाम	59
❑	स्केटिंग का नया नाम 'निशान्त'	62
❑	"लिटिल ग्रैंड मास्टर" परी सिन्हा	64
❑	मिट्टी में जान डालते प्रियांशु	66
❑	कुशलिया का 'आर्यभट्ट' राशिद	68
❑	तीन बार दर्ज हुआ गिनीज बुक में नाम	70
❑	विनायक यानी जूनियर 'बालामुरली कृष्णा'	72
❑	नन्हा संगीतविद सार्थक	74
❑	सबसे कम उम्र की सी.ई.ओ. श्रीलक्ष्मी	76
❑	कीर्तिमानों का दूसरा नाम सृष्टि	78
❑	कमाल के स्केटर हैं शुभन	80
❑	खेत में अभ्यास करके गोल्फर बना शुभम	82
❑	'सालसा प्रिंसेज' सोनाली मजूमदार	85
❑	सत्यम ने कर दिया कमाल	87
❑	स्वप्निल की विजय गाथा	89
❑	108 राग गाकर बनाया रिकार्ड	92
❑	जीत का नाम है 'तनिष्का'	94
❑	बेमिसाल नृत्यांगना वैष्णवी पाटिल	96
❑	यशी : उम्र कम, लक्ष्य बड़ा	98
❑	हेमन्त का बड़ा कमाल	100
❑	नन्ही ब्लागर पाखी की ऊंची उड़ान	102

एवरेस्ट पर पहुंची आदिवासी पूर्णा

वह मात्र 13 साल 11 महीने की थी, जब उसने दुनिया के पांचवें सबसे ऊंचे शिखर माउंट एवरेस्ट पर पांव रखा। उसका यह विश्व रिकार्ड मात्र एक महीने ज्यादा होने के नाते नहीं बन पाया क्योंकि अमेरिका के जॉर्डन रोमेरो उससे मात्र एक माह कम थे, जब उन्होंने एवरेस्ट फतह की थी। फिर भी, एक कम उम्र की बालिका द्वारा बनाया गया यह अविश्वनीय कीर्तिमान दुनिया में दर्ज हो चुका है। अब आपको यह जानकर और भी हैरानी होगी कि यह बालिका मालवथ पूर्णा, तेलंगाना के एक आदिवासी क्षेत्र की हैं। यहाँ के आदिवासी जंगलों में रहते हैं। कोई भी सामान लेने के लिए उन्हें आज भी सात किलोमीटर तक आना पड़ता है। वहां गरीबी और अशिक्षा का बोलबाला है। आज उन्हें इस उपलब्धि के लिए कई इनाम और अवार्ड मिल चुके हैं। तेलंगाना सरकार द्वारा 25 लाख रुपये, पोगो अमेजिंग किड अवार्ड और एस्पायर अवार्ड उनके लिए खास मायने रखते हैं। उन्हें जितनी खुशी माउंट एवरेस्ट को फतह करने में मिली थी, उतनी ही खुशी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सम्मानित किये जाने पर भी मिली।

आइये, आप भी इस दुर्गम यात्रा के सहयात्री बनिये। इस यात्रा का सूत्रपात हुआ एक आईपीएस अधिकारी प्रवीन कुमार द्वारा। पूर्णा निजामाबाद के जिस अडंरप्रिवलेज स्कूल तेलंगाना सोशल वेलफेयर रेजीडेंशियल एजूकेशनल इंस्टीट्यूशनल सोसायटी में पढ़ती हैं, वहां के सेक्रेटरी आईपीएस प्रवीन कुमार की पारखी आंखों ने एथलिटिक्स में निपुण पूर्णा को सोसायटी द्वारा स्पांसर्ड एडवेंचर स्पोर्ट्स के लिए 100 बच्चों में चुना। फिर उनकी ट्रेनिंग हुई। ट्रेनर शेखर

माउंट एवरेस्ट की 8848 मीटर की ऊंचाई पर पहुंचना तेलंगाना की एक आदिवासी बालिका के लिए अकल्पनीय तो था ही, साथ ही दुरूह भी। जिसने घर की सीढ़ियों के अलावा कभी कोई चढ़ाई न की हो, वह पहली बार में सीधे एवरेस्ट पर चढ़ गयी, यह तो अपने आप में पहली नजर में कल्पना से परे है। यह माता–पिता के सहयोग, तेलंगाना सोशल वेलफेयर रेजीडेंशियल एजूकेशनल इंस्टीट्यूशनल सोसायटी, निजामाबाद के सेक्रेटरी आईपीएस प्रवीन कुमार की दूरंदेशी, प्रशिक्षक की कड़ी मेहनत व पूर्णा की लगन के चलते ही सम्भव हो सका। कुल 52 दिनों की इस उतार–चढ़ाव भरी यात्रा में पूर्णा ने एक हफ्ता सिर्फ मेवे व चाकलेट के सहारे काटे। पूर्णा भविष्य में आईपीएस अधिकारी बनना चाहती हैं।

बाबू और परमेश कुमार ने लगभग दस माह की ट्रेनिंग दार्जिलिंग की दुर्गम पहाड़ियों पर दी। यहां उसने 17 हजार फिट की ऊंचाई तक चढ़ाई की। पूर्णा के शब्दों में – 'आखिरकार हम 16 लोगों की टीम जिसमें डाक्टर व शेरपा आदि शामिल थे, ऊपर पहुंचे। नेपाल की ओर से चढ़ना ज्यादा आसान है। तिब्बत की ओर से चढ़ाई करना बेहद मुश्किल है। हम तिब्बत से अपने अभियान के लिए निकले। साइकिल पंचर बनाने वाले का सत्तरह वर्षीय बेटा मेरा दोस्त सदनपल्ली आनन्द कुमार भी साथ में था। उसे भी इस अभियान के लिए चुना गया था। रास्ते में पूर्णा को उस वक्त काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा, जब एक दो नहीं पूरी छह लाशें मिलीं। बर्फ पर वे एकदम सुरक्षित थीं। कुछ दिनों पहले आये एवेलांच (बर्फीला तूफान) से 16 लोगों की मौतें हुई थीं।

पूर्णा बताती हैं कि ऐसे में मेरे जेहन में आया कि हिम्मत नहीं खोनी चाहिए। मुझे अपने माता–पिता, सेक्रेटरी सर व सभी दोस्त याद आये, जिनकी दुआएं मेरे साथ थीं। हिम्मत लौटी। चढ़ाई जारी रही। तेज ठंडी हवाएं आक्सीजन की कमी के कारण पांव आगे बढ़ ही नहीं रहे थे। आनन्द का सहयोग था। मैं अपने साथ बाबा साहेब अम्बेडकर व पूर्व आईएएस आफिसर एसआर शंकरन की फोटो लेकर आयी थी, जो मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही थी। आखिर 25 मई 2014 को मेरा सपना, मेरे सेक्रेटरी सर का सपना पूरा हुआ।

हमारे सामने शक्तिमान पर्वत व सुनहरी सुबह थी। उस अहसास को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। खुशी के उन पलों में मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे। मुझे अपने ऊपर गर्व महसूस हो रहा था। हमने अपना प्यारा तिरंगा फहराया। अपनी सोसायटी और तेलंगाना राज्य का झण्डा भी फहराया। मुझे अपनी मां और भारत मां की याद आयी। मैंने उनको नमन किया। खाने को लेकर काफी तकलीफ थी। पैक्ड व टिन फूड खाना हमारी आदत में नहीं है। मुझे अपनी मां के हाथ का बना चिकन और चावल बहुत याद आता। अंतिम सप्ताह में मैंने केवल सूखे मेवे व चाकलेट से काम चलाया।

सेक्रेटरी प्रवीन कुमार बताते हैं कि पूर्णा में एक मजबूत दिल हैं। उसके अन्दर कुछ कर गुजरने की आग है। सबसे बड़ी उसकी विशेषता यह है कि वह अनुशासित है। हमारे ट्रेनर्स ने आश्वस्त किया कि वह ऊंचाई के दबाव को झेल लेगी और एवरेस्ट फतह करने वाली दुनिया की सबसे कम उम्र की बालिका बनेगी। हुआ भी वही। सारे दल में वही सबसे पहले एवरेस्ट की चोटी पर पहुंची। बाकी लोग बाद में पहुंचे।

पूर्णा के पिता देवी दास खेतिहर श्रमिक हैं। बताते हैं कि जब उसका चयन

हुआ तो उसकी मां रोने लगी। वह नहीं चाहती थी कि उसकी बच्ची जान जोखिम में डाल कर पहाड़ पर जाए। हमने बड़ी मुश्किल से उसे तैयार किया। लभगभ एक माह तक हमें पूर्णा के बारे कुछ पता नहीं चल पाया। उसकी मां का रो–रोकर बुरा हाल था। फिर जाकर हमें उसकी खैरियत मिली। आज जब उसे मीडिया में प्रशंसा मिल रही है तो उसकी मां भी बेहद प्रसन्न हैं।

10 जून 2000 को जन्मी पूर्णा दसवीं की छात्रा हैं और कई खेलों में माहिर हैं। उनके पसंदीदा खेल हैं कबड्डी, वॉलीबाल और एथलिटिक्स। पढ़ने का बेहद शौक है। फर्राटेदार अंग्रेजी बोलतीं हैं। एक बड़ा भाई है जो बीटेक के द्वितीय वर्ष में है। पूर्णा आईपीएस प्रवीन कुमार को अपना रोल मॉडल मानती हैं। जब उनसे यह पूछा गया कि क्या वे दोबारा एवरेस्ट पर चढ़ना चाहेंगी तो तपाक से बोलीं बिल्कुल लेकिन पढ़ाई पूरी करने के बाद। पूर्णा की मेहनत और लगन ने यह साबित कर दिया है कि आप किसी भी परिवेश से क्यों न हों, यदि आपमें कुछ कर गुजरने की इच्छा है तो वह पूरी अवश्य होगी। करोड़ों बच्चों की प्रेरणा बनीं पूर्णा का कहना है कि बिना समर्पण, जुनून और तय लक्ष्य के कामयाबी हासिल नहीं होती।

●

रजिया सुल्तान को जब प्रथम मलाला यूसुफ जई अवार्ड से नवाजा गया तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। रजिया ने अपने गांव में फुटबाल सिलने वाले बच्चों को तालीम की रोशनी से परिचित कराया और 'बचपन बचाओ' संस्था की राष्ट्रीय महासचिव बनकर राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश के गांवों में घूम-घूमकर गरीब बच्चों को मां-बाप को अपने नौनिहालों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित भी किया। इस काम में काफी दिक्कतें पेश आतीं। लोग समझते कि इसमें उसका कोई लाभ है। लोग बहाने बनाते कि हम गरीब हैं, बच्चों को पढ़ायेंगे तो खायेंगे क्या। पाकिस्तान की मलाला को भले की आतंकियों की गोली खानी पड़ी लेकिन रजिया ने भी लोगों की 'बोली की गोली' कम नहीं खायीं। रजिया डाक्टर बन कर गरीबों की सेवा करना चाहती हैं

'भारत की मलाला' रजिया सुल्तान

रजिया सुल्तान मुम्बई में फेमिना वूमेन अवार्ड लेने आयीं तो उनके विषय में बताया गया कि वे मेरठ के पिछड़े गांव नगलाकुम्भा की हैं, जहां बच्चे फुटबाल से खेलते नहीं थे बल्कि उन्हें सिलकर मां–बाप का रोजी–रोटी में हाथ बंटाते थे। वे स्कूल नहीं जाते थे। कलम की जगह सुई थामकर, स्कूली बच्चों के मनोरंजन और खेल के लिए अपनी नन्ही–नन्ही उंगलियों को फुटबाल सिलते समय घायल कर लेते। रजिया ने भी फुटबाल सिले। उसकी उंगलियां सुई से जख्मी हो जातीं। मां मना करती लेकिन वह कहती कि बाकी बच्चे भी सिलते हैं तो मैं भी सिलुंगी। लेकिन 'बचपन बचाओ' संस्था की प्रधान बन जाने के बाद उसने कसम खायी कि अब गांव का कोई बच्चा फुटबाल नहीं सिलेगा बल्कि स्कूल जाएगा। रजिया ने अपने गांव में ही नहीं बल्कि आसपास के कई गांव में शिक्षा की रोशनी फैलाकर बच्चों को स्कूल जाने का रास्ता दिखाया। यह काम इतना आसान नहीं था। उसे धमकियां मिलीं कि वह बच्चों को बर्बाद करना छोड़ दे। वे कहते हमारे पास फीस नहीं है, हमारे पास रोटी नहीं है, हम कैसे पढ़ायें। जहां चाह होती है वहां राह भी निकलती है। रजिया ने हम सम्भव मदद दिलवायी। आज गाँव का कोई भी बच्चा फुटबाल नहीं सिलता बल्कि रजिया की मदद से अपना बदहाल भविष्य जरूर 'सिल' रहा है।

आइये, अब देश की मलाला रजिया से मिलते हैं। रजिया ने कुरावली मेरठ के एलटीआर पब्लिक स्कूल से इंटर पास किया है। उन्हें डाक्टर बनने के लिए सीपीएमटी की कोचिंग करनी है। चार भाई–बहनों में सबसे बड़ी रजिया को बचपन से ही पढ़ने का बेहद

शौक था, लेकिन मुफलिसी के चलते उसे भी फुटबाल सिलने पड़ते थे। किसान पिता के पास मात्र चार बीघे खेत थे। इससे परिवार का खर्च पूरा नहीं पड़ता था। रजिया के बीए पास पिता फरमान बताते हैं – '2006 की बात है। तब रजिया छठवीं कक्षा में पढ़ती थी। एक फुटबाल सिलने का ढाई से साढ़े तीन रुपया मिलता था। 30 फुटबाल का मटीरियल व धागा मिलता था। एक दिन में एक ही बन पाता था। दिल्ली की एक संस्था 'बचपन बचाओ' के कार्यकर्ता एक बार गांव में आये और उन्होंने बच्चों को पढ़ाई के लिए प्रेरित किया। संस्था के मुकेश सर ने बाल संसद का चुनाव किया और रजिया को प्रधान चुना गया। वह बच्चों के मां–बाप से उन्हें पढ़ने देने के लिए समझाती। बाद में उसे राष्ट्रीय महासचिव चुना गया। रजिया ने राजस्थान, बिहार व उत्तर प्रदेश के गांवों का दौरा कर बच्चों के मां–बाप को शिक्षा का महत्व बताकर उन्हें पढ़ाने को प्रेरित किया। इस काम के लिए रजिया नेपाल तक गयीं। लोग नाराज होते और कहते कि लड़की जात है, इसे सम्भालो। गांव–गांव घूमती फिरती है। हमारे बच्चों को भड़काना बंद करे नहीं तो अंजाम अच्छा नहीं होगा। लेकिन उसकी जिद के आगे मुझे भी हथियार डालने पड़े। अब तक वह 74 बच्चों को स्कूल तक लेकर आयी हैं। रजिया जब 9वीं कक्षा में गयीं तो उन्होंने कहा कि आप बाकी बच्चों को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाते हैं और मुझे हिन्दी माध्यम में डाला है। मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ और रजिया को भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में दाखिला दिलवा दिया। स्कूल की तरफ से कभी कोई शिकायत नहीं आयी। आज मुझे खुशी है उसे पहले अंतरराष्ट्रीय ममाला पुरस्कार से नवाजा गया।

रजिया को उसके पुनीत कार्य के लिए अब तक अनेक संस्थाओं ने पुरस्कारों से सम्मानित किया है। जिनमें 2010 में आईबीएन–7 ने सिटीजन जर्नलिस्ट का अवार्ड दिया, 2013 में इंडिया टीवी का सलाम इंडिया अवार्ड, इसी साल 12 जुलाई को प्रथम अंतरराष्ट्रीय मलाला अवार्ड प्रमुख हैं। रोटरी क्लब की ओर से अवार्ड, मिशिका सोसायटी की ओर से नारी शक्ति सम्मान, उप्र महिला मंच द्वारा हिन्द प्रभा व पिछले दिनों लॉरियल पैरिस फैमिना वूमेन्स अवार्ड भी दिया गया।

मां जाहिदा बताती हैं कि मुझे अपनी बेटी में शुरू से ही ऐसे गुण दिखायी देते थे कि यह बड़ी होकर जरूर नाम करेगी। मुझे अपनी बेटी पर नाज है। मैं तो खुदा से यही कहूंगी कि वह सभी को रजिया जैसी समझदार और दूसरों की मदद करने वाली बेटी दे।

●

कम्प्यूटर से होड़ करती प्रियांशी

सत्तरह साल की प्रियांशी सोमानी आज देश ही नहीं बल्कि दुनिया के लिए गर्व का सबब हैं। 2010 में प्रियांशी उस वक्त चर्चा में आयीं जब उन्होंने जर्मनी के मैगडेबर्ग स्थित यूनिवर्सिटी में मैंटल कैलकुलेशन में ओवर आल टाइटिल जीता। 2010 में पोगो अमेजिंग किड अवार्ड जीनियस श्रेणी व लिम्का बुक आफ रिकार्ड्स में नाम दर्ज करवाया। उनकी इन्हीं उपलब्धियों के देखते हुए 2011 में उसे 'विश्व गणित दिवस' का राजदूत बनाया गया।

प्रियांशी का दिमाग कम्प्यूटर से भी तेज चलता है। मात्र पंद्रह साल की प्रियांशी सोमानी आज अपने देश के लिए ही नहीं बल्कि दुनिया के लिए गौरव बन चुकी हैं। प्रियांशी 2010 में चर्चा में तब आयीं, जब जर्मनी के मैगडेबर्ग स्थित विश्वविद्यालय में "मैन्टल कैलकुलेशन वर्ल्ड कप" व ओवर आल टाइटिल जीता। इस प्रतियोगिता में प्रियांशी सबसे छोटी प्रतिभागी थीं। यहां पर आये 16 देशों के 37 प्रतिभागियों को वे कहीं से भी उनकी प्रतिद्वंद्वी नहीं लग रही थीं। मात्र कुछ ही मिनटों में उसने ओवर आल टाइटिल जीतकर सबको आश्चर्य में डाल दिया। प्रियांशी ने पांच मैन्टल कैलकुलेशन्स में सौ प्रतिशत दक्षता के साथ जोड़, गुणा व स्क्वायर रूट करके सबको पछाड़ दिया। इसी प्रतियोगिता के दौरान उसने दिये गये दस स्क्वायर रूट के सवालों को मात्र 6:28 मिनट में हल कर "कैलकुलेटिंग स्क्वायर रूट" का वर्ल्ड रिकार्ड भी बना डाला। उनकी इन्हीं उपलब्धियों को देखते हुए 2011 में उसे विश्व गणित दिवस का राजदूत बनाया गया। इसके बाद प्रियांशी ने 2012 में तुर्की में हुए मैमोरायड प्रतियोगिता को भी उत्तीर्ण कर लिया।

पुरस्कार व सम्मान पाने का सिलसिला सोमानी के लिए नया नहीं था। 2006 से लेकर 2008 तक उसने एबेकस व मेंटल अर्थमैटिक प्रतियोगिता में राष्ट्रीय चैम्पियनशिप जीत कर उन्हें भी अपनी सफलताओं के अपने खाते में जोड़ लिया था। 2007 में मलयेशिया में हुई प्रतियोगिता में अंतरराष्ट्रीय चैम्पियन बनीं। प्रियांशी जब कक्षा पांच में थीं तो इंटरनेशनल मैथमैटिक ओलम्पियाड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 2008 में मैकमिलन पब्लिकेशन द्वारा पंद्रह देशों में कराये गये मैथमैटिक्स इंटरनेशनल एसेसमेंट में उन्होंने भारतीय स्कूलों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 2010 में पोगो अमेजिंग किड अवार्ड जीनियस श्रेणी के लिए मिला। यही नहीं, उनका नाम लिम्का बुक आफ रिकार्ड्स में भी दर्ज

हुआ। 2010 को मलयेशिया में हुए 16वें मेंटल अर्थमैटिक इंटरनेशनल कम्पटीशन में विशेष अतिथि के रूप में शिरकत करने का अवसर मिला। इसमें 43 देशों ने भाग लिया था। 3 जनवरी 2012 को प्रियांशी ने एक और धमका कर दिया। उसने छह अंकों वाले मेंटल स्क्वायर रूट के दस सवालों को मात्र 2:43:05 मिनट में हलकर एक नया कीर्तिमान बना डाला। 2012 में दक्षिण कोरिया में आयोजित चिओंग शिम इंटरनेशनल एकेडमी मॉडल यूनाइटेड नेशन्स के तीसरे वार्षिक सम्मेलन में "आउटस्टैंडिंग डेलीगेट अवार्ड" दिया गया। इसी साल लखनऊ में सीएमएस द्वारा आयोजित पांचवीं अन्तरराष्ट्रीय यंग मैथमैटिशियन्स कन्वेंशन में कांस्य पदक जीता। इसके बाद 2013 में विशाखापट्टनम में आयोजित राष्ट्रीय गणित सम्मेलन में हुई पहेली प्रतियोगिता में प्रियांशी दूसरे रैंक पर रहीं। इसी साल उन्हें लिम्का बुक आफ रिकार्ड्स ने पुनः 'वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर आफ स्क्वायर रूट' के रूप में दर्ज किया।

16 नवम्बर 1998 को सूरत में जन्मीं प्रियांशी के पिता सत्येन सोमानी व्यापार से जुड़े हैं। मां अंजू सोमानी ने प्रियांशी को छह साल की उम्र से गणित की ओर प्रोत्साहित करना शुरू कर दिया था। हर माता–पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा सबसे अलग कुछ करे। बताती हैं प्रियांशी कि मैंने अपने मां–पापा से बहुत कुछ प्राप्त किया है। मेरी मां ने मेरी इस क्षमता का पहचाना और मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रही हैं। मेरे बड़े भाई ने भी मेरा हौसला बढ़ाया। मेरे अंदर जो साहस, आत्मविश्वास व प्रतिबद्धता है, वह मुझे अपने मां–पापा से मिली है। प्रियांशी को कम्प्यूटर, साहित्य, वाद–विवाद आदि क्षेत्रों और नयी खोज में विशेष दिलचस्पी है। प्रियांशी को खाली समय में शतरंज, फुटबाल, तैराकी, घुड़सवारी और टेबल टेनिस खेलना पसंद है। उन्हें खाने में पिज्जा और पास्ता पसंद है। प्रियांशी अपने काम को अपना रोल मॉडल मानती हैं। वह रूट स्क्वायर में नये–नये कीर्तिमान बनाना चाहती हैं, साथ ही देश का नाम रोशन करना चाहती हैं।

●

'ग्रीन गर्ल' युगरत्ना

'ग्रीन गर्ल' युगरत्ना का नाम पर्यावरण प्रेमियों के बीच सम्मान के साथ लिया जाता है। देश में उसके नाम चर्चा तब हुई, जब वह मात्र 13 की थी और उसे सौ देशों के प्रतिनिधियों के बीच संयुक्त राष्ट्र में जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। तब से लेकर आज तक वह दुनिया के अनेक देशों में पर्यावरण संरक्षण की मशाल थामे भारत का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

'ग्रीन गर्ल' के नाम से जानी जाने वाली युगरत्ना श्रीवास्तव आज पर्यावरण संरक्षण के सक्रिय देशों के लिए बहुचर्चित चेहरा है। युगरत्ना बचपन से अपना काफी समय पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने में लगाती रही हैं। युगरत्ना युनाइटेड नेशन्स द्वारा यूथ के लिए बनाये गये प्रोग्राम 'तुंज़ा' की जूनियर बोर्ड की लीडर हैं। उनको सबसे बड़ा सम्मान सितम्बर 2009 में मिला, जब न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा में सौ देशों के प्रतिनिधियों के बीच में बोलने का अवसर मिला। उन्हें जलवायु परिवर्तन शिखर सम्मेलन में बोलने के लिए यूएन के महासचिव द्वारा आमंत्रित किया गया।

युगरत्ना भारत की पहली बालिका थीं जिन्हें मात्र 13 साल की उम्र में प्रतिनिधि होने का सम्मान मिला था। वह जब मात्र 12 वर्ष की थीं तो नार्वे में युनाइटेड नेशन्स के पर्यावरण कार्यक्रम की जूनियर बोर्ड की 2008 में एशिया और प्रशांत क्षेत्र की प्रतिनिधि बनायी गयीं। उनका यह चुनाव दुनिया के 106 देशों से इंटरनेशनल चिल्ड्रेन कांफ्रेंस में आये बच्चों में किया गया। जर्मनी में 2007 में शुरू हुए 'प्लांट फार द प्लेनेट : द बिलियन ट्री कम्पेन' की ग्लोबल यूथ बोर्ड की उपाध्यक्ष भी हैं युगरत्ना। वह देश भर में 'प्लांट फार द प्लेनेट' अभियान के तहत बच्चों व युवाओं के सहयोग से पंद्रह लाख पौधों को रोपने के लिए संकल्पबद्ध हैं। इसके अलावा देश के 1700 हाई स्कूल से जुड़े पटना के एनजीओ 'तरूमित्र' की सद्भावना राजदूत भी है युगरत्ना। मुम्बई व बंगलुरु (2012) में हुए टीईडी सम्मेलन में बोलने वाली युगरत्ना सबसे कम उम्र की बालिका रही हैं।

पर्यावरण संरक्षण को अपना जीवन मानने वाली युगरत्ना का दायरा एक बार फैला तो वह देश की सीमाएं लांघ कर सुदूर देशों तक चला गया। युनाइटेड नेशन्स के पर्यावरण कार्यक्रम के तहत अंतरराष्ट्रीय बाल व युवा सम्मेलन में प्रशांत

महासागर क्षेत्र की प्रबंध समिति की सदस्या के रूप में 2009 में दक्षिण कोरिया व 2010 में जापान में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 2009 से 2014 तक के लिए युनाइटेड नेशन्स के पर्यावरण कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के सिलसिले में हो रही बैठकों में नैरोबी में 'कोर चाइल्ड' प्रतिनिधि के रूप में जुड़ीं। युगरत्ना ग्लोबल बोर्ड आफ स्टूडेंट इनीशियेटिव की उपाध्यक्ष हैं जो 'प्लांट फार द प्लैनेट : द बिलियन ट्री कम्पेन' योजना में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

युगरत्ना की झोली में अनेक अवार्ड आये हैं, जिनमें नेशनल यूथ आइकन अवार्ड, मुम्बई में यंग अचीवर्स अवार्ड रोटरी क्लब, जीन्यूज द्वारा अवध सम्मान, लायन्स क्लब द्वारा यंग अचीवर्स अवार्ड तथा वूमन इम्पावरमेंट अवार्ड प्रमुख हैं। युगरत्ना अपनी सभी कक्षा में हमेशा टॉप करती रही हैं और अंग्रेजी और साइंस ओलम्पियाड में रैंकर रही हैं।

युगरत्ना का बचपन शामली में बीता। वह मानती हैं कि वहां के लोग बहुत सहयोग करते थे। 2009 में वे लखनऊ आ गयीं। उनके माता व पिता दोनों डाक्टर हैं और पिता शिक्षा जगत से जुड़े हुए हैं। युगरत्ना ने इंटर की परीक्षा सेंट फिडलिस स्कूल से उच्च अंकों से पास की थी। युगरत्ना को संगीत सुनना, किताबें पढ़ना और कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग अच्छा लगता है। खाने में वह काफी नखरीली हैं और मांसाहारी खाना बहुत पसंद हैं, जिसमें मुगलाई उनका मनपसंद व्यंजन है। वैसे राजस्थानी खाना भी उसे भाता है। उनका कहना है कि समाज सेवा में आपकी किसी से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती। आप जो भी तरीका या राह चुनते हैं, वह आपकी अपनी होती है और वही आपको आगे ले जाती है। बस आपके काम में पूर्णता होनी चाहिए। मेरा मानना है कि कोई भी काम छोटा नहीं होता है।

युगरत्ना की मां डा. रोशनी श्रीवास्तव बताती हैं कि हमने पहले से ही तय कर लिया था कि हमें एक ही बच्चा चाहिए, चाहे वह लड़का हो या लड़की। युगरत्ना को हम घर में हिमांशी के नाम से पुकारते हैं और हिमांशी परवरिश सही तरीके हो, इसलिए मैंने कभी नौकरी नहीं की। उसे मेरे हाथ का बनाया खाना बेहद पसंद है और वह कभी–कभी मेरे लिए मैगी, वेज पुलाव और आमलेट बनाती है। मुझे उसकी एक बात हमेशा याद रहती है। उसने 2011 में हरिद्वार में हुए गायत्री महाकुम्भ में एक नयी अवधारणा प्रस्तुत की। उसने कहा कि हमें विवाह में सात नहीं, नौ फेरे लेने चाहिए। आठवां फेरा बालिका भ्रूण हत्या को रोकने की शपथ वाला हो और नौवां फेरा इस शपथ के साथ लेना चाहिए कि वे जन्मदिन व वैवाहिक वर्षगांठ पर एक–एक पौधा लगायेंगे।

●

आखिर 'तमन्ना' की तमन्ना हुई पूरी

दस साल एक दिन की छोटी सी उम्र वाली तमन्ना बालाचंद्रन ने जब महिला जूनियर स्कूबा डाइविंग का रिकार्ड 16 अप्रैल 2014 को तोड़ा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। तमन्ना की ट्रेनिंग तब से चल रही थी जब वह पांच साल की थीं और तैराकी में अपने स्कूल की सबसे तेज व कुशल तैराक होती थीं। उनके गुरु प्रफुल चुग ने सोचा कि तैराकी तो सभी करते हैं लेकिन बात तो तब है जब समुद्र की गहराइयों में उसके दबाव को सहते हुए गोता लगाया जाए। समय प्रबंधन का बेहतरीन तालमेल ही तमन्ना को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिला सका। तमन्ना अब सबसे कम उम्र की स्कूबा डाइविंग प्रशिक्षक बनना चाहती हैं।

तमन्ना बालाचद्रन मात्र दस साल की हैं। उन्होंने स्कूबा डाइविंग में महिलाओं द्वारा सेट सभी रिकार्ड तोड़ कर दुनिया में पहली बालिका होने का गौरव हासिल किया। उसने दस साल एक दिन की छोटी सी उम्र में नया रिकार्ड बनाकर देश का नाम स्वर्णाक्षरों में दर्ज करा दिया। मुम्बई के विबग्योर हाई इंटरनेशनल स्कूल में क्लास छह की स्टूडेंट तमन्ना ने 16 अप्रैल 2014 को मारिशस के समुद्र में यह कमाल कर दिखाया। वैसे जब वे मात्र आठ साल की थीं, तो उन्होंने अपने स्कूल में हुई तैराकी प्रतियोगिता में सारे खिताब अपने नाम कर यह संकेत दे दिया था कि वे किसी बड़े लक्ष्य के लिए अभी से तैयार हैं। तमन्ना जितनी खूबसूरती से तैराकी करती हैं, उससे भी ज्यादा बेहतरीन तरीके से वे एथलिटिक्स में भी झण्डे गाड़ती रहीं हैं। तैराकी व एथलिटिक्स में उन्होंने अनेक पदक अपने नाम किये हैं।

तमन्ना के पथ प्रदर्शक प्रफुल्ल चुग बताते हैं कि अमेरिकी संस्था प्रोफेशनल एसोसिएशन आफ डाइविंग इंस्ट्रक्टर की ओर से तमन्ना को 'जूनियर ओपेन वाटर डाइवर' का प्रमाणपत्र प्रदान किया गया, तो वह बेहद खुश हुई। वह बताते हैं कि इससे पहले यह कीर्तिमान मिस्र की नताशा टर्नर के नाम था जो दस साल तीन दिन की थीं और इसके बाद इला मारिया लोपेज जो दस साल दो दिन की थीं, तमन्ना ने दोनों को पछाड़कर यह कीर्तिमान अपने नाम कर लिया। तमन्ना की तैयारियों को लेकर चुग हमेशा से ही सर्तक रहे। तमन्ना स्कूल टाइम से ही बेहतर स्वीमर रही हैं। यह बात चुग अच्छी तरह जानते थे कि स्वीमिंग में बहुत भीड़ है। बेहतर है कि कोई ऐसा काम किया जाए जो कम लोग करते हों। उसने सीमित पानी में स्कूबा ट्रेनिंग

शुरू की। हमने पैडी (स्कूबा डाइविंग की अन्तरराष्ट्रीय संस्था) के सख्त नियमों का पालन करते हुए गोताखोरी की खास तकनीक सीखने के लिए अंडमान निकोबार के सबसे पुराने गोताखोरी केन्द्र में उसका प्रशिक्षण शुरू कराया। तमन्ना ने सही वक्त यानी अपने दस साल एक दिन पूरा होने वाले दिन यानी 16 जून 2014 को सारी दुनिया को दिखा दिया कि बेटियां किसी से भी पीछे नहीं हैं।

तमन्ना के पिता उन्नी बालाचन्द्रन बताते हैं कि उसकी बड़ी बहन राशि बालाचन्द्रन भी कम उम्र में तैराकी सीखती थी। वह भी अच्छी गोताखोर बन गयी। जब राशि तरणताल में सीखने जाती तो तमन्ना भी हमारे साथ ही जाती। यह एक साल की थी तो तरणताल को देखकर उसमें जाने को मचल जाती थी। हमने पांच साल की उम्र में इसे भी तैराकी सिखाना शुरू किया। स्कूल प्रतियोगिता में इसने अनेक खिताब हासिल किये। फिर बहन की तरह उसे भी गोताखोरी की गुर सिखाने के लिए दस साल से कम उम्र के बच्चों के 'बबुल मेकर' कोर्स कराया, जिसमें स्कूबा डाइविंग (पानी के अन्दर तैराकी) के दौरान हाथों से की जाने वाली बातचीत की तकनीक के साथ ही कानों पर पड़ने वाले पानी के दबाव से बचाव के तरीके सिखाये जाते हैं।

मां रीता बालाचंद्रन बताती हैं कि तमन्ना की एक ही तमन्ना थी कि वह स्कूबा डाइविंग में विश्व कीर्तिमान बनाए। उसका जूनियर ओपन वाटर स्कूबा डाइवर का प्रमाणपत्र दो दिन बाद मिला। अगर दो दिन प्रमाणपत्र और ना मिलता तो कीर्तिमान बनाने का सपना धरा ही रह जाता। हमारा पूरा परिवार तमन्ना के इस अनोखे कीर्तिमान का साक्षी बनने के लिए अंडमान निकोबार के हैवलाक आईलैंड के खूबसूरत समुद्री तट पर पहुँचा था। तमन्ना को हमने जब पांच साल पहले स्वीमिंग पूल में उतारा था तो उसने घुटने–घुटने पानी में तैरना सीखा था और आज समुद्र की गहरायी नाप रही है। वह हमारे लिए बेहद रोमांचित कर देने वाला पल था।

तमन्ना अपने अनुभव के बारे में बताती हैं कि वह इसी तरह स्कूबा डाइविंग करती रहना चाहती है और आगे चलकर सबसे कम उम्र की स्कूबा डाइविंग प्रशिक्षक बनना चाहती है।

●

दूसरों के जीवन में रंग भरती प्रकृति

प्रकृति जब चार साल की थीं, तभी से नेत्रदान के लिए लोगों को प्रेरित करने लगी थीं। उनकी इसी लगन के चलते आज लगभग साढ़े चार लाख लोगों तक वह अपनी अपील पहुंचा चुकी हैं। 50 हजार लोगों ने नेत्रदान का प्रतिज्ञा फार्म भरा है। पांच सौ से ज्यादा लोगों की अंधेरी दुनिया में उसके प्रयासों से रंग भर गये और उनका जीवन खुशियों से भर गया।

समाज सेवा के लिए प्रकृति चंद्रा को दिल्ली में राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड मिला तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्हें यह अवार्ड दिया गया उनकी एक खास सेवा के लिए। उसकी ये सेवा उस वक्त शुरू हो गयी थी, जब वे मात्र चार साल की थीं। वह लोगों को नेत्रदान के लिए प्रेरित करतीं। लोग इतनी छोटी सी बच्ची के मुंह से नेत्रदान की बात सुनकर आश्चर्य में पड़ जाते और प्रतिज्ञा लेते कि वे मृत्यु के बाद अपना नेत्र (क्रॉनिया) जरूर दान करेंगे।

27 नवम्बर 1998 को लखनऊ में जन्मी प्रकृति चन्द्रा जब छोटी थीं तो अपनी मां डा. रंजना के विजन इम्प्रूवमेंट क्लीनिक में जाती थीं। वहां उन्होंने आंखों की तमाम तरह की जानकारियाँ सीख लीं। बचपन में उसकी दोस्ती नेत्रहीन बच्चों से हो गयी। ये बच्चे उनके माता–पिता ने गोद लिये थे। इन्हीं में एक बच्चा था शिवम्। शिवम् को कम दिखता था। एक बार उससे गेंद उठाने को प्रकृति ने कहा, पर वह गेंद नहीं उठा पाया। प्रकृति को उस पर गुस्सा आया। बाद में पिता डा. रूपेश कुमार ने समझाया कि वह देख नहीं सकता क्योंकि उसका क्रॉनिया खराब है। प्रकृति ने तपाक से कहा कि तो मेडिकल स्टोर से खरीद कर लगा दो।

तब उसे पता चला कि अगर कोई मृत्यु के बाद अपना क्रॉनिया दान करे, तभी शिवम् देख सकता है। प्रकृति के बाल मन पर यह बात घर कर गयी। उसी दिन से उसने नेत्रहीनों के लिए कुछ करने की ठानी। तब से लेकर आज तक उन्होंने लगभग साढ़े चार लाख लोगों को नेत्रदान के प्रति जागरूक किया है। इनमें 50 हजार से ज्यादा लोगों ने नेत्रदान का प्रतिज्ञा पत्र भरा है। प्रकृति के इस सद्प्रयास ने अब तक चार सौ से ज्यादा लोग अंधेरी दुनिया से निकल कर रोशनी और रंगों की दुनिया के साक्षी बन चुके हैं। प्रकृति इसे अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मानती हैं।

प्रकृति को नेत्रदान के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए देश के

कोने–कोने में जाना पड़ता था। जगह–जगह कैम्प लगाना पड़ता था। ऐसे में पढ़ाई बाधित हो जाती। प्रकृति बताती हैं–"हमारी एक मैम थीं मंजीत बत्रा, उनका हमें बहुत सहयोग मिलता था। मैं जो कुछ कर पायी, उसमें मेरे मां–पापा के बाद उन्हीं का सहयोग रहा।" वह एक घटना कभी नहीं भूलतीं, "पहले मैं जहां रहती थी, उस मकान के मालिक व उनकी पत्नी ने भी नेत्रदान का प्रतिज्ञा पत्र भरा था। जब उनकी पत्नी की मृत्यु हुई तो क्रॉनिया के लिए पूरी टीम आ गयी। मकान मालिक ने बाकायदा सबको घर से बाहर भगा दिया। लेकिन मैंने हार नहीं मानी। उनका प्रतिज्ञा पत्र दिखाया। बाद में वे तैयार हो गये।"

प्रकृति को लिमका बुक आफ रिकार्ड, इंडिया बुक आफ रिकार्ड व नेशनल बुक आफ ऑनर में बड़े पैमाने पर लोगों को नेत्रदान के लिए जागरूक करने के लिए शामिल किया गया है। इसके अलावा पोगो अमेजिंग किड्स लीडर अवार्ड, भारत गौरव, उत्तर प्रदेश राज्य सरकार का नारी सम्मान, सहयोग इंडिया, जम्मू का इंडियन पर्ल्स अवार्ड, लायंस, जयपुरिया, कबीर पीस मिशन व राजीव गांधी एक्सीलेंस अवार्ड जैसे अनेक सम्मान मिल चुके हैं। प्रकृति दृष्टि सुरक्षा अभियान की ब्रैंड एम्बेसेडर हैं और यूनिसेफ के विटामिन ए के अभियान से भी जुड़ी हुई हैं। देश की महान विभूतियां जैसे पूर्व राष्ट्रपति स्व. एपीजे अब्दुल कलाम, योग गुरु बाबा रामदेव आदि का उन्हें विशेष आशीर्वाद प्राप्त रहा है।

प्रकृति ने लोगों का ध्यान अपने मिशन की ओर खींचने के लिए बच्चों के साथ 2008 व 2009 में रैलियों की अगुवाई की। नेत्रदान के लिए पूर्णरूप से समर्पित प्रकृति ने पिछले साल एक वेब पोर्टल www.beyondthevision.in भी लांच किया। इस पोर्टल द्वारा नेत्रहीनों से जुड़ी सभी समस्याओं का समाधान किया जाता है जिसमें क्रॉनिया की उपलब्धता के अलावा नेत्रहीनों की शिक्षा, स्वास्थ्य, नौकरी व जीवन साथी खोजने तक में सहायता व सहयोग किया जा रहा है। नेत्रदान के इच्छुक व्यक्ति इस वेब पोर्टल पर जाकर अपना प्रतिज्ञा फार्म भी भर सकते हैं। प्रकृति मिस यूनिवर्स बनना चाहती हैं। इसके पीछे इनकी सोच यह है कि इतना बड़ा पद हासिल करने के बाद लोग उनकी अपील पर अधिक ध्यान देंगे।

प्रकृति को डांस का बेहद शौक है। उसने भरतनाट्यम में विशारद तक शिक्षा ग्रहण की है। उसने अब तक नृत्य के अनेक कार्यक्रम किये हैं और कई पुरस्कार भी बटोरे हैं। प्रकृति का कहना है कि जब हम धन, वस्त्र व अन्न दान खुशी–खुशी करते हैं तो मृत्यु के बाद नेत्रदान क्यों नहीं करते? नेत्रदान से आपके नेत्र अमर हो जाते हैं। आप दुनिया में भले ही नहीं रहें लेकिन आपके नेत्र सदैव जिन्दा रहते हैं।

●

13 साल में सुषमा बनी ग्रेजुएट

जब सात साल उम्र की लड़कियां कक्षा दो पास कर रही थीं तो सुषमा ने हाईस्कूल पास कर सबको चौंका दिया। दस साल में इंटरमीडिएट और 13 साल में बीएससी पास कर सबके लिए मिसाल बन गयीं। अद्‌भुत प्रतिभा की धनी सुषमा डाक्टर बनना चाहती हैं। उन्होंने दस साल की उम्र में सीपीएमटी की परीक्षा दी लेकिन उसका परिणाम आज तक इसलिए नहीं निकाला गया क्योंकि वे इस पढ़ाई के लिए बहुत छोटी मानी गयीं।

सुषमा को पढ़ने का शौक है। उसने अपने भाई को सात साल में हाई स्कूल करते देखा था। उसने तभी ठान लिया था कि वह भी सात साल में ही हाईस्कूल करेगी। उसने कर दिखाया। पिता मेहनत–मजदूरी करते थे। घर का खर्च ही पूरा नहीं हो पाता था। महंगी पढ़ाई का खर्च कहां से लाते। मेधावी सुषमा ने हार नहीं मानी। पिता ने सेंट मिराज इंटर कालेज की प्रधानाचार्य श्रीमती अनीता रात्रा से मदद की गुहार लगायी। उन्होंने कक्षा सात से इंटर तक सुषमा की पूरी सहायता की।

सुषमा अब डाक्टर बनने का सपना देखने लगी थीं। उन्होंने बायो ग्रुप से इंटरमीडिएट की परीक्षा दी। सीपीएमटी के लिए फार्म भरा। उन्हें प्रवेशपत्र मिल गया। उसने परीक्षा के लिए कड़ी मेहनत की। लेकिन जब परीक्षा बोर्ड को उसकी उम्र पता चली, जो उस वक्त मात्र दस साल थी, रिजल्ट देने से इंकार कर दिया। उनका कहना था कि इतनी छोटी बच्ची इस कोर्स के लिए उपयुक्त पात्र नहीं है। सवाल यह उठा कि फिर प्रवेशपत्र क्यों दिया गया। मामला मीडिया में काफी उछला। बाद में बोर्ड ने इसके लिए क्षमा मांगी। उसका रिजल्ट आज तक नहीं निकला। सुषमा हार मान कर बैठने वाली नहीं थीं। उन्होंने बी.एससी. में एडमीशन के लिए फार्म भरा। उनके बेहतरीन प्रदर्शन को देखते हुए स्नातक की शिक्षा का भार अवध डिग्री कालेज ने उठाया और सुषमा को पांच सौ रुपया वजीफे के रूप में भी हर माह दिये। उसने बी.एससी. मात्र तेरह साल की उम्र में पास कर लिया है। सुषमा इन दिनों अम्बेडकर विश्वविद्यालय से माइक्रो बायलॉजी में पी.एचडी. कर रही हैं।

जब हाईस्कूल सात साल की उम्र में कर लिया तो इंटरमीडिएट दस साल में क्यों? इस पर सुषमा ने बताया – दरअसल, मेरे भाई व मेरी प्रतिभा के चलते तभी जापान से बुलावा आ गया। वे हमारा आईक्यू टेस्ट करना चाहते थे। वहां

पर हमें जादूगर मैरिक के सामने पेश किया गया और उन्होंने हमसे जितने सवाल किये, हमने सही–सही जवाब देकर सबको आश्चर्य में डाल दिया। इस यात्रा में एक महीना निकल गया और तब तक यहां कालेजों में प्रवेश समाप्त हो चुके थे।

कक्षा आठ पास सुषमा के पिता तेजबहादुर वर्मा का कहना है कि मैं जितनी मेहनत–मजदूरी करके कमाता हूं, उसी में सब खर्चा चलता है। इसका बड़ा भाई भी बंगलुरु में एमसीए कर रहा है। उसकी पढ़ाई में बहुत खर्चा आ रहा है, लेकिन वह किसी तरह अपनी पढ़ाई को जारी रखे हुए है। मेरे लिए तो दोनों ही बराबर हैं। सुषमा जो बनना चाहे बने, मैं उसके साथ हूं।

क्या कोई भी बच्चा तुम्हारी तरह कम उम्र में हाईस्कूल पास कर सकता है? इस पर सुषमा बताती हैं कि बच्चों के स्कूलों में अक्सर साल भर मोटी फीस लेकर केवल एबीसीडी और गिनती ही सिखाते हैं। फिर तीन साल के बाद पहली कक्षा में जाने देते हैं। देखा जाए तो नर्सरी से अपर केजी की पढ़ाई केवल तीन महीने की है। स्कूल अक्सर बाकी चीजों में बच्चों को उलझा कर उनका समय नष्ट करते हैं। मेरे हिसाब से घर में रहकर पढ़ाई सबसे अच्छी होती है, जिसके दौरान बच्चा खेल–खेल में सब कुछ याद कर लेता है। जिसमें मेहनत करने की ललक होगी और पूरा आत्मविश्वास होगा, वही आगे बढ़ जाएगा।

सुषमा एम.एससी. के बाद डाक्टरेट करना चाहती हैं लेकिन सीपीएमटी की परीक्षा देकर डाक्टर बनने का सपना भी वह जरूर पूरा करना चाहेंगी।

●

नन्ही जलपरी स्वप्नाली यादव

स्वप्नाली यादव भारत की पहली तैराक हैं, जिन्होंने मात्र 8 वर्ष 7 माह की अल्प आयु में ग्रीस में सम्पन्न '9वें ओपेन वर्ल्ड स्विमिंग मैराथन' में भाग लेकर देश का गौरव बढ़ाया। इसमें दुनिया के 256 तैराकों ने हिस्सा लिया और दुबई, अमेरिका, कानाडा व इंग्लैंड के विश्वस्तरीय तैराक शामिल थे। 30 किलोमीटर लम्बी दौड़ में स्वप्नाली ने 11 घंटा 10 मिनट सेकेण्ड का समय निकाल कर सबको आश्चर्य में डाल दिया। उन्हें 'नन्ही जलपरी' का खिताब दिया गया।

बाम्बे कैम्बरिज स्कूल से इंटर पास स्वप्नाली यादव ने 30 अप्रैल 2007 में कुनुनुरा पश्चिमी आस्ट्रेलिया में प्रथम किमब्रेले नेशनल लेक अर्ग्रेले स्विमिंग प्रतियोगिता में महिला वर्ग में सबसे कम उम्र की पहली भारतीय प्रतियोगी के गौरव के साथ विजय प्राप्त की। 2007 में ओपेन वर्ल्ड स्विमिंग मैराथन और 2008–2009 में मेस्सिनिकोस गल्फ स्विम जो ग्रीस में सम्पन्न हुए, में 30 किलोमीटर तैर कर एक नया इतिहास रच दिया। इसी साल 24 जुलाई को अमेरिका के न्यूपोर्ट वर्मौंट में मेमफरेमागॉग झील के किनारे आयोजित प्रतिष्ठित 'किंगडम एक्वाफेस्ट' में महिला वर्ग के अंडर–18 में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। इसी उपलब्धि के बाद उन्हें लिमका बुक आफ रिकाड्र्स में जगह दी गयी। 2009 में बरमूडा एटलांटिक ओशन में आयोजित राउंड द साउंड स्विमाथन में स्वर्ण पदक जीतकर उसने सबको आश्चर्यचकित कर दिया। यहां उन्हें 'डलफिन प्रिंसेज' का खिताब मिला। उसने 10 किलोमीटर लम्बी इस जल दौड़ को तीन घंटे और 52 मिनट में पूरा किया।

स्वप्नाली देश की पहली तैराक हैं, जिन्होंने सबसे कम उम्र में तैराकी की तीन अंतरराष्ट्रीय अवार्ड, छह विश्व और 12 राष्ट्रीय अवार्ड अपने नाम किये हैं। 'नन्ही जलपरी' कहलाने वाली स्वप्नाली यहीं पर नहीं ठहरीं। वे अपनी प्रतिभा का लोहा दौड़ और साइकिलिंग में भी मनवाना चाहती हैं। वे साइकिलिंग की अंडर–14 व अंडर–18 की राष्ट्रीय चौम्पियन भी हैं। उन्होंने मलयेशिया में आयोजित इंटरनेशनल ट्रैथिलान (तैराकी, दौड़ व साइकिलिंग) में हिस्सा लेकर रजत पदक जीतकर सबको चौंका दिया। उनकी तमाम उपलब्धियों के चलते उन्हें लिमका बुक आफ रिकाड्र्स में स्थान दिया गया है व पोगो अमेजिंग किड अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। स्वप्नाली इंग्लिश चैनल पार करना चाहती हैं। इसके लिए वे कड़ी मेहनत कर रही हैं। कहतीं हैं, जल्दी यह भी कर दिखाऊंगी . . .।

2010 में कैनेबरा आस्ट्रेलिया में आयोजित श्री चिन्मय कैपिटल स्विम में जीत का परचम फहराया। 2010 में उसे पोगो अमेजिंग किड अवार्ड से नवाजा गया।

5 दिसम्बर 1998 में जन्मी स्वप्नाली की सबसे दिल दहला देने वाली घटना थी आस्ट्रेलिया की लेक अर्गले की 20 किलोमीटर की तैराकी प्रतियोगिता। पैंतीस हजार मगरमच्छों के बीच स्वप्नाली में बिना डरे 7 घंटे 7 मिनट का समय निकाल कर प्रतियोगिता अपने नाम कर ली। खास बात यह थी कि इसमें हिस्सा लेने वाली सभी प्रतिभागी स्वप्नाली से दोगुनी–तिगुनी उम्र के थे। इस उपलब्धि के बाद उन्हें 'क्रोकोडायल प्रिंसेज' का खिताब दिया गया। 20।2 में मलेशिया में आयोजित जूनियर इंटरनेशनल ट्रैथिलान में रजत पदक जीत कर भी उन्होंने अपनी श्रेष्ठता को साबित किया।

स्वप्नाली बताती हैं कि जब वह मात्र छह साल की थीं तो गोरेगांव के ओजोन स्वीमिंग पूल में तैराकी सीखने जाने लगीं। कोच राजू पालकर ने उन्हें प्रारम्भिक शिक्षा दी। छोटी दूरी में उनका प्रदर्शन शुरू में कोई विशेष नहीं था। फिर उन्होंने प्रबोधांकर ठाकरे क्रीड़ा संकुल में तैराकी प्रशिक्षण लेना शुरू किया। यहां के कोच सतीश सोलंकी और संदीप नेवालकर ने उन्हें नये सिरे से शिक्षा देनी शुरू की। उनका प्रदर्शन देखकर दोनों ने तय किया कि स्वप्नाली को लघु के बजाय लम्बी दूरी के लिए तैयार किया जाए। समुद्र में तैराकी का एक अलग ही तरीका होता है। उन्होंने पाया कि स्वप्नाली के अंदर अन्य बच्चों से ज्यादा सीखने व कर गुजरने की ललक व क्षमता है।

डा. रमेश प्रभु ने उनकी काबिलियत को पहचान कर उसे प्रोत्साहित किया। स्वप्नाली बताती हैं कि आज से दो साल पहले जब मैंने मोरा जेट्टी रायगढ़ से गेटवेआफ इंडिया तक 12 किलोमीटर की तैराकी प्रतियोगिता जीतकर एक नया कीर्तिमान बनाया तो मेरा आत्मविश्वास काफी बढ़ गया। 2011 में धर्मतार से गेटवे आफ इंडिया तक की 35 किलोमीटर की तैराकी दस घंटा और 10 मिनट में पूरी की। यह मेरे कैरियर में मील का पत्थर साबित हुआ। फिजीलैण्ड में 19 किलोमीटर तैराकी प्रतियोगिता में उन्होंने अलग ही पहचान बनायी। यहां समुद्र में खतरनाक शार्क मछलियों का वास है लेकिन उन्होंने बिना डरे प्रतियोगिता को अंजाम तक पहुंचाया।

स्वप्नाली यादव केवल तैराकी में अपना परचम नहीं लहरा रही थीं बल्कि साइकिलिंग और दौड़ में भी उसने झंडे गाड़ने शुरू कर दिये। साइकिलिंग में उन्होंने अंडर–14 व अंडर–18 में राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीत कर एक नया अध्याय जोड़ दिया। अभी वह तैराकी में पारंगत होने की दिशा में आगे बढ़ ही रही थीं

कि तभी उन्हें राजेन्द्र सोनी व रवि बागदी जैसे प्रशिक्षक मिले। राजेन्द्र सोनी साइकिलिंग के कोच थे और रवि दौड़ के। उन्होंने स्वप्नाली को सलाह दी कि वह अपने को ट्रैथिलान के लिए तैयार करे। ट्रैथिलान में 1.5 किलोमीटर तैराकी, 40 किलोमीटर साइकिलिंग व 10 किलोमीटर तेज गति से दौड़ करनी होती है। यह अपने आप में बहुत ही चुनौतीपूर्ण खेल है। स्वप्नाली तत्काल इसके लिए तैयार हो गयीं और अभ्यास करने लगीं। चारों कोचों ने उसके साथ–साथ मेहनत की। 5 मई 2012 में फिलीपींस के सूबिक बे में आयोजित सब जूनियर ट्रैथिलान में उसने हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता में वह छठे स्थान पर रहीं। उसके बाद मलयेशिया में आयोजित ट्रैथिलान चौम्पियनशिप में दूसरे स्थान पर रहीं। फिर सिंगापुर में आयोजित ट्रैथिलान प्रतियोगिता में उनका प्रदर्शन बेहतर रहा।

स्वप्नाली की माँ सायली यादव बताती हैं कि पहले हम और मेरे पति विदेशों में होने वाली सभी प्रतियोगिताओं में जाते थे लेकिन काफी महंगा पड़ने की वजह से अब वे ही स्वप्नाली के साथ जाती हैं। वे कहती हैं कि स्वप्नाली जैसी बेटी तो एक लाख बेटों के बराबर है। स्वप्नाली के पिता गोपाल यादव, जो मूलतः यूपी के बस्ती जिले के निवासी हैं, प्रिंटिंग प्रेस चलाते हैं। स्वप्नाली के साथ मजबूती से खड़े गोपाल जी का कहना है 'हमें अपनी प्रतिभाशाली बेटी के सभी सपने पूरे करने हैं, इसके लिए मुझे कुछ भी करना पड़े, मंजूर है।'

मां के हाथ की बनी मछली की शौकीन हैं स्वप्नाली। नृत्य, अभिनय व संगीत का उसे बेहद शौक है। रणबीर कपूर और दीपिका पादुकोण उनके पसंदीदा कलाकार हैं। पढ़ाई में भी आगे रहने वाली स्वप्नाली का कहना है कि उन्हें बहुत कुछ हासिल करना है। मैं इंग्लिश चैनल पार करना चहती हूं। मैं इसे फतह करूंगी जरूर।

●

शौर्य जब मात्र चार साल के थे तो मुम्बई के होटल ताज के चैम्बर्स टेरेस में उनकी 24 कलाकृतियां प्रदर्शित की गयी थीं। इन पेंटिंग्स को जो भी देखता विश्वास नहीं कर पाता था कि वह इस छोटे से बच्चे ने बनायी हैं। विश्वास दिलाने के लिए पिता को वीडियो दिखाना पड़ता। दुनिया का यह पहला बच्चा है, जिसे न्यूयार्क की सुप्रसिद्ध आर्ट गैलरी वार्ड–नासे में पूरे एक साल के लिए एक वाल दी गयी, जहां शौर्य की चित्रकला हर कला प्रेमी का ध्यान खींचती हैं।

शौर्य ने छू लिया आकाश

शौर्य महनोत को देखकर कोई नहीं कह सकता कि उसकी बनाई अमूर्त कलाकृतियों को प्रदर्शित करने के लिए न्यूयार्क की सुप्रसिद्ध गैलरी वार्ड–नासे की एक वाल, साल भर के लिए दी गयी। कोई यह भी नहीं कह सकता कि 2010 में जब वह मात्र चार साल के थे तो मुम्बई के ताज होटल के चैम्बर्स टेरेस में उनकी 24 मास्टर पीस कलाकृतियां लगायी गयी थीं। ताज होटल का चैम्बर्स टेरेस बहुत ही खास लोगों के लिए खोला जाता है जैसे अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा व क्रिकेट वर्ल्ड कप जीतने पर खिलाड़ियों के स्वागत के लिए खोला गया था। वहां अपनी प्रदर्शनी लगाना उस अबोध बालक के लिए भले ही गर्व, आश्चर्य और असीम सुख की बात न रही हो लेकिन दुनिया की नजर में वे बहुत बड़े कलाकार बन गये। समाचार पत्रों ने उन्हें दुनिया का सबसे छोटा अमूर्त कला का पेंटर कहा और उनकी हौसला अफजाई की।

शौर्य जब मात्र तीन साल के थे तो उन्होंने अपनी बहनों की देखा–देखी एक कलाकृति बनायी तो उनके पिता आदित्य महनोत और माता पुष्पा महनोत चकित रह गये। उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। उन्होंने उससे फिर से पेंटिंग बनाने का आग्रह किया, लेकिन उसका मूड नहीं था सो नहीं बनाया। फिर एक दिन जमीन पर कागज फैलाकर रंगों से खेलना शुरू किया। उनकी इस प्रतिभा को चुपके से रिकार्ड कर लिया गया। ऐसे ही जब भी वे पेंटिंग बनाते, माता–पिता बिना व्यवधान उत्पन्न किये दृश्यों को कैमरे में कैद कर लेते, क्योंकि वह भलीभांति जानते थे कि जब वे शौर्य की बनायी कलाकृतियों को जिस किसी को दिखायेंगे, तो वह एकबारगी विश्वास नहीं करेगा।

28 अक्टूबर 2006 को नीमच, मध्य प्रदेश में जन्मे शौर्य के पिता आदित्य, जो कोलोनाइजर हैं, शौकिया पेंटिंग करते हैं। उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था

कि उनका बेटा बचपन में ही इतना बड़ा कलाकार बन जाएगा। नीमच के सेंट्रल स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ने वाले शौर्य बताते हैं – 'मेरी आंखों के सामने एक दृश्य आता है और मैं एक्रेलिक रंगों के साथ उस कल्पना को ड्राइंगशीट पर उतार देता हूं।' शौर्य की मां कहती हैं – 'हमें अपने बेटे पर गर्व है। वह बहुत ही सीधा है। कभी कोई मांग नहीं करता है। जो भी दो, खा लेता है और जो कहा जाता है फौरन मान लेता है।' वैसे शौर्य को इडली पसंद है। उसे फुटबाल खेलना पसंद है और अमेरिकन चित्रकार जैक्सन पोलॉक उसके रोल मॉडल हैं।

फरवरी 2013 में शौर्य की प्रसिद्धि देश की सीमा लांघ कर न्यूयार्क तक जा पहुंची। शौर्य अपने माता–पिता के साथ न्यूयार्क गये। शौर्य के पिता आदित्य बताते हैं– 'न्यूयार्क के 'बेस्ट आफ आर्ट एक्सपो–2013' में शौर्य को अपनी कला के प्रदर्शन के लिए विशेष प्रतिभागी के रूप में बुलाया गया। यह पहला मौका था, जब किसी सात साल के बच्चे की कला को यहां प्रदर्शित किया जा रहा था जबकि उनका सख्त नियम है कि 16 साल से कम के किसी भी कलाकार की कलाकृति वहां प्रदर्शित नहीं होती। शौर्य की चित्रकला के सभी दीवाने हो गये और इस कम उम्र में उनके परिपक्व कार्य को देख कर वहां की वार्ड–नासे गैलरी के अधिकारियों ने उसे पूरे एक साल के लिए एक वाल दी है, जिसमें वह अपनी बनायी कलाकृतियां प्रदर्शित करेंगे। यही नहीं, दो साल पहले उदयपुर की बोगनविलिया गैलरी में चल रही प्रदर्शनी में उसके तीन कलाचित्र एक लाख पैंतीस हजार में बिके।'

शौर्य को अद्वितीय कामयाबी के लिए 2012 में पोगो अमेजिंग किड अवार्ड से नवाजा गया। देश के सुप्रसिद्ध कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण को जब इसके हुनर के बारे में पता चला तो उन्होंने उन्हें पूना आने का निमंत्रण दिया। शौर्य ने उनके सामने एक बेहतरीन पेंटिंग बनायी। पेंटिंग बनाने में इतना मशगूल हो गये कि वे खाना–पीना तक भूल गये। लक्ष्मण भी उसकी प्रतिभा से बेहद प्रभावित हुए। शौर्य के बारे में वाशिंगटन पोस्ट, आबजर्वर और गार्जियन जैसे अखबारों में फोटो सहित साक्षात्कार छप चुके हैं। भारत के भी कई प्रमुख अखबारों में उसके बारे में विस्तार से प्रकाशित हुआ है, लेकिन उनकी माँ कहती हैं कि हमने कभी उसके स्कूल में इस बात का प्रचार नहीं किया कि वह अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाने वाला पेंटर है। सब उससे सामान्य बच्चों की तरह ही व्यवहार करते हैं। वे अपने स्कूल में सभी टीचरों का चहेते हैं। शौर्य बड़े होकर नामी कलाकार बनना चाहते हैं।

●

यशस्वी जब मात्र पांच साल के थे तो उन्होंने मैथमैटिकल कैलकुलेशन में स्वर्ण पदक जीता था। दिल्ली में हुए इस चैम्पियनशिप में उसने पांच हजार बच्चों को पछाड़ कर खिताब अपने नाम किया था। चारों ओलम्पियाड मैथ (आल इंडिया रैंक वन), साइंस, अंग्रेजी सभी में स्वर्ण व साइबर (आल इंडिया रैंक वन) रजत पदक अपने खाते में कर लिये। चारों ओलम्पियाड जीतने वाले वे देश के सबसे कम उम्र के बालक हैं। यही नहीं शतरंज, रोलर स्केटिंग और टेनिस में भी वे अपनी आयु वर्ग में सबको पछाड़ चुके हैं। जब वे मात्र चार वर्ष के थे, तभी से उन्हें रामायण व महाभारत पूरी तरह से याद है। कक्षा ग्यारह की आर्गेनिक कैमेस्ट्री व ट्रिगनोमैट्री जैसे कठिन विषय उनके लिए बच्चों का खेल हैं। 100 तक पहाड़े और तीन मिनट में 50 प्रश्न हल करने की काबिलियत है यशस्वी में।

जीनियस है यशस्वी

मात्र आठ साल के यशस्वी बल्हारा आज भारत के चोटी के प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व बन चुके हैं। यह दावा है उनके पिता डा. देवेन्द्र बल्हारा का जो पिछले पंद्रह सालों से यशस्वी को प्रशिक्षित कर रहे हैं। यशस्वी जब मात्र पांच साल के थे तो उन्होंने मैथमैटिकल कैलकुलेशन में स्वर्ण पदक जीता था। दिल्ली में हुई इस प्रतियोगिता में उसने पांच हजार बच्चों को पीछे छोड़ कर खिताब अपने नाम किया था। यही नहीं, चारों ओलम्पियाड मैथ (आल इंडिया रैंक वन), साइंस, अंग्रेजी सभी में स्वर्ण व साइबर (आल इंडिया रैंक वन) रजत पदक जीत कर अपने खाते में कर लिये। चारों ओलम्पियाड जीतने वाला यह देश का सबसे कम उम्र का बच्चा है। यही नहीं, खेलों में भी उनका कोई सानी नहीं है। शतरंज में दो बार जिला चैम्पियन, रोलर स्केटिंग में चार बार सम्पूर्ण जिला विजेता बनने का गौरव हासिल है। टेनिस में दो बार राज्य विजेता बने। उन्हें गवर्नर अवार्ड व गोल्डेन ऐरो अवार्ड मिलने की घोषणा हुई है। यही नहीं, जब वह मात्र चार के थे, तभी से उन्हें रामायण व महाभारत पूरी तरह से याद है। कक्षा ग्यारह की आर्गेनिक कैमेस्ट्री व ट्रिगनोमैट्री जैसे कठिन विषय उनके लिए बच्चों का खेल हैं। 100 तक पहाड़े और तीन मिनट में पचास प्रश्न हल करने की काबिलियत भी है यशस्वी में।

यशस्वी के पिता डा. देवेन्द्र बल्हारा जो चंडीगढ़ में अपना इंस्टीट्यूट एक्सपेंडिंग होराइजन्स चलाते हैं, बताते हैं कि सभी बच्चें अपने आप में खास होते हैं, पर हमारी शिक्षा पद्धति उनकी काबिलियत को बढ़ाने की बजाय उसमें अक्सर रोक लगाती है। मेरा बच्चा छह माह कुछ दिन का था, तभी इस दुनिया में आ गया था। उसको पालना बेहद मुश्किल काम था।

उसकी परवरिश में हमारी पत्नी पूनम का बहुत बड़ा हाथ रहा। यशस्वी ने लगभग तीन साल की उम्र में बोलना शुरू किया। हमने उसकी ब्रेन मैपिंग कर डरमैटोग्लिपिक्स मल्टीपिल इंटेलीजेन्ट एनालाइसिस रिपोर्ट तैयार की। हमने इसके मस्तिष्क का परीक्षण करके सही दिशा दी। मैंने पाया कि इसे पढ़ने और खेलने का बेहद शौक है। हमने वही किया। इसके लिए दुनिया भर की किताबें और खेल का सामान इकट्ठा कर दिया। आज यह अपनी उम्र से दस साल से अधिक बच्चों से कहीं आगे है। वह दो सौ पेज की किताब दो घंटे में न सिर्फ पढ़ लेता है बल्कि उसको हर चीज याद भी रहती है। अब तक वह पांच सौ से भी अधिक किताबें पढ़ चुका है। बुद्धू से बुद्धू बच्चे को मेधावी बनाया जा सकता है, बस उसके मस्तिष्क को समझना और सही दिशा देना होता है।

यशस्वी की मां पूनम बल्हारा शिक्षिका हैं। बताती हैं कि जब यह छोटा था तो एकदम शान्त रहता था। बोलता भी नहीं था। हम सब बेहद परेशान रहते। डाक्टरों ने बताया कि समय से पहले पैदाइश में अक्सर ऐसा ही होता है। तीन साल का रहा होगा, जब उसने बोलना शुरू किया। तब तो लगता था कि उसने प्रश्नों की जमाखोरी की हुई है। इतने सवाल करता इतने सवाल करता कि हम परेशान हो जाते। इसके सवालों से घबरा कर लोग इससे कतराते। तब इसके पिता ने इसको समझदारी के साथ तैयार करना शुरू किया। इसके सभी सवालों के जवाब मिलने लगे। जब इसने नाडाल को टेनिस खेलते देखा तो अपने पिताजी से कहा कि वह उससे बड़ा खिलाड़ी बनना चाहता है। तब हम करनाल के फफड़ाना गांव में रहते थे। हमारे पति सरकारी स्कूल में शिक्षक थे। हमने उसे करनाल में टेनिस सीखने के लिए दाखिला दिलवा दिया। वहां एक महीने बाद कोच ने कहा कि आपका बच्चा तो एक माह में ही सब सीख गया। आप इसे चंडीगढ़ ले जाएं। हमारे पति ने स्थानान्तरण मांगा तो मिला नहीं। वह नौकरी छोड़ कर बच्चे के लिए चंडीगढ़ आ गये।

8 जुलाई 2006 को जन्मे गुरूकुल, पंचकुला में कक्षा चौथी के विद्यार्थी हैं। अक्सर अध्यापिका उन्हें यह कहकर बैठा देती हैं कि बेटा और बच्चों को भी पूछने दो, तुम्हें तो सब आता है। कक्षा में अव्वल आते हैं। नाडाल और एंडी मूरे उनके प्रेरक व्यक्तित्व हैं। दूध के बने पकवान ज्यादा चाव से खाते हैं। मम्मी की पसंद की पोशाक पहनते हैं। खाली समय में डिस्कवरी चैनल व खेल के चैनल देखते हैं। पढ़ना उनका जुनून है। वह कभी उदास नहीं होते। किताबें उनकी सबसे बड़ी दोस्त हैं। बड़े होकर वैज्ञानिक या टेनिस खिलाड़ी बनना चाहते हैं।

●

निहार ने जब पेंसिल पकड़ना शुरू किया तो उन्होंने जो पहली आकृति बनायी, वह गणेशजी से मिलती जुलती थी। तभी मां–बाप को लग गया था कि यह लड़का मामूली नहीं है। निहार ने चार साल की उम्र पार करते–करते पांच सौ गणेश जी के चित्र बनाकर अपनी प्रदर्शनी लगाकर इंडिया बुक आफ रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करवा लिया।

एक कलाकार की अभिनय कला का प्रदर्शन देखकर निहार बोले, ये तो मैं भी कर सकता हूं। फिर उन्होंने 'ड्रामेबाज' शो में ऑडीशन दिया और हजारों बच्चों में चयनित होकर श्रेष्ठ बीस प्रतिभागियों में पहुंचे। कार्यक्रम में वे द्वितीय स्थान पर रहे और बाद में उन्हें कार्यक्रम प्रस्तोता के लिए "बेस्ट एंकर आफ इयर" का सम्मान मिला।

चित्रकला हो या अभिनय, सराहे गये निहार

अगर आप टीवी के दर्शक हैं तो आप उस बच्चे को अभी तक नहीं भूले होंगे, जिसने अपने अभिनय के दम पर न सिर्फ निर्णायकों का दिल जीता बल्कि अन्य कार्यक्रमों में प्रस्तोता बनकर जी सिने अवार्ड में बेस्ट "एंकर आफ द इयर" का महत्वपूर्ण अवार्ड अपनी झोली में डाल लिया। "एक विलेन" फिल्म में अपने अभिनय का जलवा बिखेरा। यही नहीं गणेश जी पर पेंटिंग बनाना शुरू किया तो उसमें भी मात्र चार साल की उम्र में 500 पेंटिंग्स की प्रदर्शनी लगा कर सबको चौंका दिया। इसके लिए उन्हें इंडिया बुक आफ रिकार्ड से नवाजा गया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं शिरडी के निहार गीते। निहार ने द्वितीय स्थान पर रहकर अभिनय में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा लिया।

"पहले लाइफ ओके पर एक शो आता था हुनरबाज। मेरे बेटे ने देखा और मुझसे कहा कि ये तो मैं भी कर सकता हूं।" बताते हैं निहार के पिता कला अध्यापक हेमन्त गीते। "तभी हमें पता चला कि ऐसा ही एक शो 'ड्रामेबाज' बनने वाला है। हम निहार को लेकर अहमदाबाद गये। वहां हजारों बच्चों के बीच उसे चुना गया। इस शो में पूरे देश से लाखों बच्चों ने ऑडीशन दिया पर मात्र 140 बच्चे चुने गये। बाद में फाइनल सेलेक्शन में लिए मुम्बई बुलाये गये। 4–5 राउंड के बाद केवल 45 बच्चे ही सेलेक्ट हुए और बाद में टॉप टेवन्टी को ही मौका मिला। उनमें निहार भी था। इस प्रतियोगिता में निहार दूसरे स्थान पर रहा। फिर कॉम्पलॉन व बोर्नवीटा चीज के लिए विज्ञापन किया। उसके बाद "डीआईडी डांस का टशन" में

प्रस्तोता बनने का मौका मिला। मिथुनदा के साथ इसकी जोड़ी खूब सराही गयी। फिर इसी हुनर के लिए उसे जी सिने अवार्ड में "बेस्ट एंकर आफ द इयर" का अवार्ड मिला। एकता कपूर की नजर निहार पर पड़ी तो वे भी प्रभावित हुए बैगर नहीं रह पायीं और उन्होंने मोहित सूरी से फिल्म 'एक विलेन' में उसे रखने के लिए कहा। मोहित ने इससे पहले किसी बच्चे के साथ काम नहीं किया था। वे काफी घबराये हुए थे लेकिन पहली बार में सीन ओके हो गया। उन्होंने खुशी से निहार को गले लगा लिया और कहा, "बेटा तू बहुत ऊपर जाएगा।"

निहार मां–बाप की इकलौती संतान हैं। मां कल्पना हेमन्त गीते भी घर पर चित्रकला की क्लास लेती हैं। बताती हैं कि हेमन्त जब बहुत छोटा था तो उसे गणेश जी बनाने का पता नहीं कहां से शौक लग गया। वह जो भी चीज पाता, उसमें गणेश बना देता। फिर हमने उसे अंग्रेजी के एल्फाबेट्स से गणेश बनाना सिखाया। जब मात्र चार साल का था तो वह पांच सौ चित्र गणेश जी के बना चुका था। हमने पुणे में उसकी प्रदर्शनी लगायी। उसका काम खूब पसंद किया गया। अब तक वह दो हजार से ज्यादा गणेश जी के चित्र बना चुका है। इसके लिए उसे इंडिया बुक आफ रिकार्ड में स्थान मिला। निहार में एक बड़ी खूबी यह है कि यह जो भी काम लेता है, उसे बखूबी निभाता है। उसके लिए बाकायदा प्लानिंग करता है और लक्ष्य निर्धारित करता है। उस काम में चाहे जितना समय लगे, जब तक वह संतुष्ट नहीं हो जाता, लगा रहता है। खाने में उसे मेरे हाथ की बनी भिण्डी और पत्ता गोभी की सब्जी बेहद पसंद है। मीठा उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। वह हमेशा अपने से बड़े को दोस्त बनाना पसंद करता है। बच्चों से ज्यादा बड़े लोग उसके दोस्त हैं।

29 दिसम्बर 2006 को जन्मे निहार तीन कक्षा के छात्र हैं। वे हमेशा प्रथम आते हैं। अभिनय व चित्रकला के अलावा निहार जूडो कराटे, नृत्य व गायन में भी माहिर हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी निहार 'इण्डिया रॉ स्टार' कार्यक्रम में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुके हैं। निहार रजनीकांत को अपना रोल मॉडल मानते हैं और सलमान खान के बहुत प्रशंसक हैं। वे उनकी नकल बखूबी उतार लेते हैं। निहार बड़े होकर अभिनेता बनना चाहते हैं।

●

क्रिकेट, हाकी, टेनिस और फुटबाल के शौकीनों को शायद ही जानकारी होगी कि अपने देश की मात्र सत्रह साल की किशोरी अदिति अशोक ने एशियन गेम्स, एशियन यूथ गेम्स और यूथ ओलम्पिक में क्वालीफाई करके यह साबित कर दिया है कि यदि उन्हें सही दिशा–निर्देशन और परिवार का सहयोग मिलता रहा तो वे कुछ भी कर सकती हैं।

अदिति जब मात्र छः साल की थीं तभी से गोल्फ से दिल लगा बैठीं। आज वे नेशनल नम्बर वन और इंडिया पैसेफिक का खिताब अपने नाम कर चुकी हैं। देश दुनिया का कोई भी ऐसा गोल्फ कोर्स न होगा, जहां उन्होंने न खेला हो। 200 से ज्यादा ट्राफियां अपनी झोली में डाल चुकीं अदिति आने वाली चुनौतियों का मुंह तोड़ जवाब देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

गोल्फ ही है अदिति की जिन्दगी

अदिति अशोक एशियन गेम्स व एशियन यूथ गेम्स व यूथ ओलम्पिक गेम्स में गोल्फ के लिए चयनित होने वाली पहली ऐसी सबसे कम उम्र की किशोरी हैं, जिन्होंने अपनी मेहनत व लगन से यह उपलब्धि हासिल की है। वे तीन साल लगातार नेशनल नम्बर वन रहीं हैं और 2012 इंडिया पेसेफिक का खिताब भी हासिल किया। 2008 में जब अदिति मात्र नौ साल की थीं तो 91वीं आल इंडिया लेडीज एमेच्योर गोल्फ ओपेन चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीत कर विजय का जो सिलसिला शुरू किया, वह आज तक जारी है। 12 साल की उम्र में 2011 में 94 वीं आल इंडिया लेडीज गोल्फ ओपेन चैम्पियनशिप की बिल्लू सेठी ट्राफी जीती। मात्र 13 साल की आयु में चंडीगढ़ में आयोजित आल इंडिया लेडीज एमेच्योर ओपेन गोल्फ चैम्पियनशिप अपने नाम कर अदिति ने रिकार्ड बनाया। एक नया कीर्तिमान बंगलुरु के क्लोवर ग्रीन्स गोल्फ कोर्स में उस वक्त अपने खाते में जोड़ा, जब उन्होंने 13 वर्ष 5 माह की अल्प आयु में यंगेस्ट एमेच्योर के रूप में हीरो वूमेन्स प्रो टूअर का वूमेन्स प्रोफेशनल इवेंट अपने नाम किया। इंटरनेशनल गोल्फ कम्पटीशन्स में अदिति ने इंग्लैंड, सिंगापुर, चीन, साउथ अफ्रीका, टर्की, फ्रांस, मयंमार व थाईलैंड जैसे देशों में न सिर्फ भारत का प्रतिनिधित्व किया बल्कि ट्राफियां भी जीतीं। अदिति अब तक 200 से ज्यादा ट्राफियां अपनी झोली में डाल चुकी हैं। उन्होंने कितने टूर्नामेंट्स खेले हैं, यह अब उन्हें भी याद नहीं है। साल में केवल एक माह ही वे स्कूल जा पाती हैं। स्कूल का पूरा सहयोग है। हाईस्कूल में बहत्तर प्रतिशत नम्बर लाकर सबको हैरत में डाल दिया।

अदिति का जन्म 29 मार्च 1998 को बंगलुरु में

हुआ। फ्रैंक एन्थोनी पब्लिक स्कूल से उन्होंने इंटर पास किया है। गोल्फ के अलावा चित्रकला, क्राफ्ट, स्केटिंग व हूला–हूपिंग में भी उनको महारत हासिल है। ओडिसी व्हाइट हाट प्रोपटर से खेलने वाली अदिति को अपनी छोटी–छोटी चीजों से बेहद लगाव है। उन्हें प्यार है अपनी फोरव्हील पुश कार्ट से। उनके पास आज भी बॉल रखने वाले अनेक टी हैं, जिसमें कई टूटे हुए भी हैं। गल्व्स, पानी, नाश्ता और केला हमेशा उनके झोले में रहता है। एक और चीज वे अपने झोले रखना कभी नहीं भूलतीं, वह है नियम की किताब।

अदिति के पिता अशोक गुडल्मनी जो पहले प्रोफेसर थे, अब जमीन के करोबार से जुड़े हुए हैं, बताते हैं कि हमारे शहर बंगलुरू में साल में दो बार गोल्फ कैम्प लगता था। जब अदिति मात्र 6 साल की थी तो एक बार हम भी सपरिवार वहां गये तो मैंने देखा कि वहां दो घंटे तक अदिति गोल्फ खेलती रही। अगले दो दिन बाद वह भी अपनी छोटी सी गोल्फ स्टिक के साथ मैदान में मौजूद थीं।

अदिति देश के लगभग सभी गोल्फ कोर्स में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुकी हैं। उनके पसंदीदा गोल्फ कोर्स में कर्नाटका गोल्फ एसोसियेशन का मैदान है, जहां उन्होंने गोल्फ की एबीसीडी सीखी। इसके अलावा बैंगलोर गोल्फ क्लब जहां उन्होंने पहली बार होल में अपनी बॉल डाली। बैंगलोर के इग्लैटन गोल्फ रिसॉर्ट, आर्मी गोल्फ कोर्स, क्लोव ग्रीन गोल्फ कोर्स व प्रेस्टीज गोल्फशायर क्लब उनके पसंदीदा गोल्फ कोर्स हैं। अलावा इसके ओटाकामंड जिमखाना क्लब, ऊटी, कोडाईकनाल गोल्फ क्लब, कुर्ग गोल्फ क्लब, जयचमराजा वुडीयार गोल्फ क्लब, मैसूर, बोलाराम गोल्फ क्लब, हैदराबाद के अलावा दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, जमशेदपुर, नोएडा, जयपुर, कोयम्बटूर, पंचकुला, चंडीगढ़, चिन्नै, पुणे, अहमदाबाद व गुड़गांव सभी नामी गोल्फ क्लब में अपनी प्रतिभा का जौहर दिखा चुकी हैं। विदेशों के गोल्फ कोर्स में अमेरिका के नार्थ कोलम्बिया स्थित कंट्री क्लब आफ विस्परिंग पाइन पसंद है क्योंकि वहां अदिति के पिताजी ही उनके लिए कैडी का रोल अदा कर रहे थे।

अपनी मां महेश्वरी को अपना रोल मॉडल मानने वाली अदिति को उनके हाथ की बनी दाल, रोटी और चावल बहुत भाता है। शुद्ध शाकाहारी परिवार की होने के बावजूद खेल में प्रोटीन की जरूरत के मददेनजर वे मुर्गा, मछली और कबाब भी बड़े चाव से खाती हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आने वाले समय में देश का एक बड़ा सितारा बनने की तैयारी में हैं अदिति अशोक। उन्हें अपने देश के लिए खेलना बहुत ही भाता है।

●

दिव्या आज शतरंज में हैं और दुनिया की सबसे छोटी महिला शतरंज खिलाड़ी (डब्ल्यू एफ एम) रह चुकी हैं। उन्हें चेस में डाक्टर माता–पिता ने यह सोचकर डाला कि कोई न कोई खेल तो इसे खेलना ही है। शतरंज को लेकर पहले से कोई धारणा नहीं थी, बस सोचा और डाल दिया। दिव्या शतरंज को अपना सब कुछ मान बैठी और अब वे शतरंज में एक जाना–पहचाना नाम बन चुकी हैं। दिव्या अंडर–8 में दुनिया में चौथे स्थान पर, एशिया में अंडर–8 में दूसरे स्थान पर व भारत में अंडर–9 में पहले स्थान पर हैं। दिव्या पढ़ाई में भी अव्वल हैं। वे आगे चलकर पढ़ाई का दामन पकड़े हुए विश्वनाथ आनन्द की तरह ग्रैंड मास्टर बनने का ख्वाब पूरा करना चाहती हैं।

शतरंज में बेमिसाल दिव्या देशमुख

दिव्या देशमुख अभी मात्र 9 साल की ही हैं, लेकिन शतरंज में उनकी उपलब्धियां बड़े–बड़ों के लिए एक मिसाल हैं। दिव्या अंडर–8 चेस में दुनिया में चौथे स्थान पर हैं, एशिया में अंडर–8 दूसरे स्थान पर तथा भारत में (अंडर–9) में पहले स्थान पर हैं। दिव्या देशमुख जब मात्र सात साल की थीं, तभी एक नया रिकार्ड बना डाला था। वे भारत की पहली अल्प आयु महिला एफआईडीई मास्टर (डब्ल्यू एफ एम) बनीं। पिछले साल ईरान में आयोजित एशियन यूथ अंडर–8 शतरंज प्रतियोगिता में ताज अपने नाम किया। यही नहीं डब्ल्यू एफ एम का खिताब भी बनाए रखा।

एक नजर दिव्या के विजय पथ पर डालते चलें। 2012 में नयी दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय स्कूल शतरंज (अंडर–7) में कांस्य पदक, एशियन स्कूल शतरंज प्रतियोगिता में दो स्वर्ण पदक जीते, अखिल विश्व स्कूल शतरंज प्रतियोगिता (अंडर–9) नवे पायदान पर रहीं, एशियन युवा शतरंज प्रतियोगिता (अंडर–8) में स्वर्ण पदक जीता, 2014 में पुडीचेरी में आयोजित राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता में (अंडर–9) में द्वितीय स्थान पर रहीं, दुबई में हुई अंडर–8 शतरंज प्रतियोगिता में दिव्या चौथे स्थान पर रहीं, नयी दिल्ली में आयोजित अंडर–11 शतरंज प्रतियोगिता में 7वें स्थान पर तथा चैन्नै में आयोजित अंडर–9 में भी दिव्या अवल्ल रहीं। 2014 में ताशकंद में आयोजित बिल्ट्ज एशियन युवा शतरंज प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर अपनी प्रतिभा का परचम लहराया।

स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. नमृता देशमुख व पिता डा. जितेन्द्र देशमुख की बेटी दिव्या ने दिल्ली में आयोजित 2012 में एशियन स्कूल शतरंज प्रतियोगिता

जीत कर अपने इरादों को स्पष्ट रूप से अपने सहखिलाड़ियों के समक्ष पेश कर दिया था। दिव्या ने यहां दो स्वर्ण पदक जीते। मां नमृता बताती हैं कि जब हम ईरान पहुंचे तो हमें कतई इस बात का गुमान नहीं था कि दिव्या मात्र सात साल की उम्र में डब्ल्यू एफ एम का खिताब अपने नाम कर एक नया कीर्तिमान बना लेगी। यहां दिव्या ने दो स्वर्ण पदक जीते। दिव्या अभी छोटी है और उसे नहीं मालूम कि उसने कितना बड़ा काम किया है लेकिन उसे इस बात का अहसास जरूर है कि उसने कोई बड़ा काम किया है। भारतीय विद्या भवन की प्रधानाचार्या के हम शुक्रगुजार हैं जिनके सहयोग के बिना दिव्या यह उपलब्धियां हासिल नहीं कर पाती।

नमृता बताती हैं कि हमने पहले से ही तय कर लिया था कि हमारे बेटा या बेटी जो भी होगा, उसे खेल में जरूर डालेंगे। हमने अपनी बड़ी बेटी आर्या को बैडमिंटन में डाला और जब दिव्या साढ़े चार साल की थीं, तब उन्हें आनन्द चेस एकेडमी में प्रवेश दिलाया। दिव्या को शतरंज पसंद आया और उनके कोच राहुल जोशी को भी दिव्या के साथ मेहनत करने में आनन्द आने लगा। जब दिव्या मात्र पाँच साल छह माह की थीं, तब उन्होंने पहली बार नेशनल खेला और देखते ही देखते वे मात्र सात साल की उम्र में दुनिया की पहली यंगेस्ट महिला शतरंज खिलाड़ी बन चुकी थीं।

9 दिसम्बर 2005 को नागपुर में जन्मी दिव्या भारतीय विद्या भवन में कक्षा पांच की विद्यार्थी हैं और शतरंज के अलावा किताबें पढ़ना और ड्राइंग बनाना भाता है। खाने में वे सादा खाना पसंद करती हैं, वह भी रोटी–सब्जी। जब बढ़िया खाने का मन करता है तो रोटी की जगह पराठे बनवा लेती हैं। पढ़ने में तेज दिव्या को शरारत करना अच्छा लगता है। बड़ी बहन उनकी सबसे अच्छी दोस्त हैं। दिव्या अब तक ग्रीस, ईरान, दुबई व ताशकंद में अपने हुनर के झण्डे गाड़ चुकी हैं। दिव्या रोज आठ घंटे अभ्यास करती हैं। विश्वनाथ आनन्द को दिव्या अपना रोल मॉडल मानती हैं और बड़ी होकर उन्हीं की तरह ग्रैंड मास्टर बनना चाहती हैं।

●

दिव्य प्रकाश उन बच्चों के लिए शिक्षा की एक नयी रोशनी लेकर आये जो अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए जमीन नहीं पाते। वे जब मात्र 6 साल के थे तो उनको इग्नू के स्कूल आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के कोर्स क्राफ्ट एंड डिजाइनिंग इन पॉटरी में प्रवेश मिल गया। वे दुनिया के सबसे कम उम्र के विश्वविद्यालय के छात्र बन गये। फिर प्रमाणपत्र धारी। दिव्य बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वे जादूगरी में भी बेहतर दखल रखते हैं और कम्प्यूटर के तो मास्टर हैं। दिव्य बड़े होकर पायलट बनना चाहते हैं।

प्रतिभा के धनी
दिव्य प्रकाश पाण्डेय

उसे आज भी याद है कि जब वे मात्र पाँच साल के थे तो अपने पापा की उंगली पकड़े दिल्ली के बाल भवन में होने वाली ग्रीष्म कार्यशाला में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला सीखने के लिए जाने लगे थे। इस कला के प्रति उनका रुझान तब हुआ, जब वे रंगीन मिट्टी से तरह–तरह की आकृतियां बनाते थे। घर वाले उनकी कल्पनाशीलता पर मोहित थे। उन्हें भी लगता था कि अगर दिव्य को इस ओर बढ़ावा दिया जाए तो वह कुछ खास करेगा। हुआ भी वही। जब वे मात्र छह साल के हुए तो उन्होंने इस क्षेत्र में विधिवत शिक्षा के लिए इच्छा जाहिर की। इतने कम उम्र के बच्चे को कौन विश्वविद्यालय में प्रवेश देता। अनन्तः उन्होंने इगनू के स्कूल आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में प्रवेश दिलाने का मन बनाया। पाठ्यक्रम था सर्टिफिकेट कोर्स इन क्राफ्ट एंड टेक्नोलॉजी इन पॉटरी। प्रैक्टिकल के लिए इग्नू के स्टडी सेंटर 'माटी सृजन' में दो दिनों के लिए जाना पड़ता था। उतना कम लगा तो कुम्हार के पास जाते पॉटरीज की बारिकियां सीखने। दिव्य अपनी कल्पनाशीलता के बल पर सबसे अलग वस्तुओं को निर्माण करते। उन्होंने पेन स्टैंड, जादूगरी में इस्तेमाल होने वाला वाटर आफ इंडिया पॉट (जिसमें हर बार उलटने पर पानी निकलता रहता है), फैन्सी दिये, कलात्मक मॉडल, डिजाइनर फोटो फ्रेम व कलाकृतियां बनायीं। सब कुछ तो ठीक–ठाक चल रहा था लेकिन जब बात पाठ याद करने की आयी तो लगा कि सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा, लेकिन दिव्य कब हार मानने वाले थे। इसका भी हल निकाल ही लिया। वे रोज नियमित सारे काम निपटा कर एक घंटा अपने पिता श्री के.सी. पाण्डेय से कोर्स को कहानी की तरह सुनते। जब कुछ पूछा जाता तो अक्षरशः बता देते। परीक्षा हुई। रिजल्ट आया। दिव्य 76 प्रतिशत अंक

लेकर प्रथम आये। वे दुनिया के पहले सबसे कम उम्र के विश्वविद्यालय के छात्र बन गये, जिसने इतनी कम उम्र में विश्वविद्यालय से स्नातक का प्रमाणपत्र हासिल किया।

पिता केसी पाण्डेय जो सुप्रसिद्ध जादूगर हैं, का कहना था कि दिव्य ने यह लक्ष्य पाने के लिए बहुत ही कड़ी मेहनत की है। उसकी लगन व समर्पण को देखकर कभी–कभी हम भी दंग रह जाते थे। उसे इंडिया बुक आफ रिकार्ड, रिकार्ड सेटर बुक ऑफ वर्ल्ड रिकाड्र्स, यू.एस.ए., उजबेकिस्तान बुक ऑफ रिकार्ड, नेशनल रिकार्ड रजिस्टर में स्थान व कई संस्थाओं के अवार्ड व सम्मान मिल चुके हैं। मां रेवती पाण्डेय बताती हैं कि मेरी दो बेटियों के बाद ही दिव्य का जन्म हुआ। अकेला बेटा होने के बाद भी वह जिद्दी नहीं है। हमारी बड़ी बेटी लक्ष्या व छोटी बेटी भारती की तो यह जान है। खाने–पीने में कभी परेशान नहीं करता। मेरे हाथ का बना राजमा–चावल व छोले इसे बहुत पसंद है।

10 अक्टूबर 2003 को जन्मे दिव्य को सभी घर में मानू के नाम से बुलाते हैं। वे केन्द्रीय विद्यालय, विज्ञान विहार में कक्षा सात के विद्यार्थी हैं। डिस्कवरी, नेशनल जियोग्राफिक व एनिमल प्लैनेट्स जैसे ज्ञानवर्धक चैनलों के प्रेमी दिव्य को फुटबाल सायक्लिंग पसंद है और भ्रमण के बेहद शौकीन है। उन्हें नयी–नयी जगह घूमना और वहां की संस्कृति को आत्मसात करना पसंद है। एक बात बहुत कम लोग जानते हैं कि वे एक अच्छे जादूगर भी हैं। श्री पाण्डेय बताते हैं कि उसने आज से करीब डेढ़ सौ साल पहले भारत में इजाद किया गया 'वाटर आफ इंडिया' सरीखी जादुई ट्रिक को उसके वास्तविक रूप मिट्टी के पॉट में भी बनाया है। उसकी तकनीक उसने पकड़ी और मिट्टी के बर्तन में बनाया जबकि आज कोई भी जादूगर इसे मिट्टी से नहीं बनाता बल्कि बना–बनाया पीतल या स्टील का खरीदता है। अमेरिका के मशहूर जादूगर फ्रांज़ हरारे ने भी उस पॉट की तकनीक को देखकर काफी सराहा और दिव्य से उपहार में प्राप्त मिट्टी का पात्र 'वाटर ऑफ इण्डिया' अपने साथ अमेरिका ले गये।

दिव्य अपने करियर को लेकर फिलहाल चिन्तित नहीं हैं, अगर चिन्ता है तो पढ़ाई की,"मैं पॉटरीज मेकिंग को काफी याद करता हूं। कारण यह है कि मेरी पढ़ाई इससे काफी अस्त व्यस्त हो जाती है। जब भी मन करता है तो थोड़ा बहुत गढ़ लेता हूं। नियमित नहीं कर पाता हूं। मैं अपनी एक एकल प्रदर्शनी लगाना चाहता हूं, जिसमें बहुत ही अलग तरह के पॉट रखूंगा। अभी तो सब कुछ बनाना अच्छा लगाता है, लेकिन पायलट बनने का सपना है। यूं तो मैं कम्प्यूटर में भी बहुत अच्छा हूं लेकिन देखिए, किस्मत किस ओर ले जाती है।"

●

गगन अभी मात्र छह साल के हैं, लेकिन उन्होंने वह कर दिखाया है, जिसकी तमन्ना उनसे काफी बड़ी उम्र के रोलर स्केटर दिल में लेकर न जाने कब खेल से बाहर हो जाते हैं। गगन ने 29 सेकेण्ड में 39 कारों के नीचे से लिम्बो स्केटिंग करते हुए विश्व रिकार्ड बना दिया। उनकी इस उपलब्धि के गवाह बने लोग अपने को धन्य मानते हैं। गगन के यहां तक पहुंचने की दास्तान भी रोचकता से भरी है। गगन अब बड़े होकर स्केटिंग में ही अपना भविष्य बनाना चाहते हैं। अवार्ड लेने से ज्यादा खुशी उन्हें चाकलेट मिलने पर होती है . . . !

'गगन' छूने की ख्वाहिश

छह साल के गगन सतीश को सब लोग उस वक्त अपनी गोद में उठा लेना चाहते थे, जब उसने लिम्बो स्केटिंग में मात्र 29 सेकेण्ड में 39 कारों के नीचे से निकल कर वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ इंडिया का खिताब अपने नाम कर लिया। वह ऐतिहासिक दिन था 31 जनवरी 2014 का। बंगलुरू के ओरिन मॉल में जबर्दस्त भीड़ जुट चुकी थी। तभी एक नन्हे से बच्चे ने, जिसकी आंखों में विजयश्री पाने की चमक स्पष्ट दिखायी दे रही थी, इशारा पाते ही अपने दोनों पैर फैलाये और एक...दो... तीन कार के नीचे से निकलते हुए पूरी 39 कारों के काफिले को पलक झपकते पार कर लिया। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा मॉल गूंज गया। हर कोई गगन की तारीफ करते नहीं थक रहा था। गगन इससे पहले अमेजिंग वर्ल्ड रिकार्ड, सुपर किड्स इंडिया वर्ल्ड रिकार्ड, यंगेस्ट स्केटर अवार्ड, रिपब्लिक होल्डर रिकार्ड तथा एशियाट वर्ल्ड रिकार्ड अपने खाते में जोड़ चुके हैं।

7 नवम्बर 2008 को जन्मे गगन श्री चैतन्य टेक्नो स्कूल में कक्षा एक के विद्यार्थी हैं। सुबह 8.30 से 11.30 तक स्कूल करने के बाद गगन स्केटिंग का अभ्यास करते हैं।

कोच डीसी यथीश बताते हैं कि गगन जब मात्र तीन साल आठ माह का था, तब उसके अभिभावक उसे मेरे पास स्केटिंग सिखाने के लिए लेकर आये। मैंने बच्चे की उम्र को देखकर सिखाने से इंकार कर दिया। फिर वे किसी की सिफारिश लेकर आये तो मैं उसे सिखाने के लिए तैयार हुआ। गगन पहले सामान्य बच्चों की तरह ही था, लेकिन मैंने देखा कि उसके शरीर में गजब की लचक है। तब मैंने उसे लिम्बो स्केटिंग में डालने का निर्णय किया। गगन को पहले बार (छड़ों) के नीचे से निकलने का अभ्यास कराया। वह तीस से चालीस बार (छड़ों)

के नीचे से निकल जाता। फिर हमने तय किया कि उसे कार के नीचे से निकाला जाए। हमें पूरा विश्वास था कि वह यह काम कर लेगा। आखिर उसने किसी को निराश नहीं किया।

देश की एक नामी कम्पनी का सर्विस सेंटर चलाने वाले पिता जीआर सतीश बताते हैं कि हम लोग मूलतः गांव से हैं। हम चाहते थे कि मेरा इकलौता बच्चा किसी खेल में अपना भाग्य आजमाए। हमें लगा कि स्केटिंग में गगन अच्छा कर सकता है। किसी भी खेल में सफल होने के लिए कम उम्र से ही प्रयास किये जाएं तो सफलता मिलने की गुंजाइश बढ़ जाती है। यही सोचकर हमने गगन को स्केटिंग में डाला।

मां हेमा बताती हैं कि गगन जब छोटा था तो पार्क में छोटे–छोटे बच्चों को स्केटिंग करते बड़े गौर से देखा करता था। हमने तभी सोच लिया था कि उसे स्केटिंग सिखायेंगे। हमने प्रयास किया और यथीश सर ने उसे सिखाने के लिए हामी भर दी। आज वह जो भी है, वह यथीश सर की मेहनत का नतीजा है। हेमा बताती हैं कि गगन को रोटी, चपाती व चाट बहुत पसंद है। चाकलेट गगन की कमजोरी है। वह पानी–पूरी बहुत ही चाव से खाता है। टीवी देखना, तैराकी और साइकलिंग गगन के प्रिय शौक हैं। गगन बहुत ही मेहनती व बड़ों की बात मानने वाला शिष्य है। स्कूल की सभी शिक्षिकाएं उसे बेहद मानती हैं। वह पढ़ायी में भी अच्छा है।

गगन बड़े होकर स्केटिंग में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं। इसके लिए वे अभी से कड़ी मेहनत कर रहे हैं। उनके लक्ष्य में सौ कारों के नीचे से एक मिनट बीस सेकेण्ड में निकलने के अलावा नेशनल खेलना भी शामिल है।

●

हृदेश्वर सिंह भाटी को आज दुनिया में सभी जानते हैं। उन्होंने एक ऐसे शतरंज बोर्ड आविष्कार किया जिसे तीन से लेकर साठ लोग एक साथ खेल सकते हैं। मात्र नौ साल की अल्प आयु में शतरंज बोर्ड का पेटेन्ट करा कर वे भारत के पहले व दुनिया के पहले विकलांग बच्चे बन गये हैं। हृदेश्वर 65 प्रतिशत विकलांग हैं। वे अपने आप कुछ भी नहीं कर पाते। उन्हें एक घातक बीमारी ड्यूशन मस्क्यूलर डिस्ट्राफी है, जिसमें मांसपेशियां निष्क्रिय होने लगती हैं। हृदेश्वर में दुनिया के लिए कुछ कर गुजरने का जोश देखने लायक है। वे बड़े होकर वैज्ञानिक बनना चाहते हैं और भारत को खुशहाल देखना चाहते हैं।

नन्हा "पेटेंट होल्डर" हृदेश्वर

हृदेश्वर सिंह भाटी को आज सब उन्हें 'मिनी स्टीफन हॉकिंस' के नाम से जानते हैं। वह जब मात्र नौ साल के थे तो उन्होंने चेस की दुनिया में जो नया आविष्कार कर दिखाया, वह अपने आप में अनोखा ही नहीं आश्चर्यजनक था। वे भारत के पहले व दुनिया के पहले ऐसे विकलांग बच्चे हैं, जिन्होंने अपना पेटेंट लिया। उन्होंने एक ऐसा शतरंज बोर्ड इजाद किया, जिसमें छह लोग खेल सकते हैं। आज उनके पास तीन पेटेंट हैं, जिसमें 12 व 60 लोग एक साथ शतरंज खेल सकते हैं। 100 लोगों के खेलने वाला शतरंज बोर्ड बनाने की तैयारी में हैं। उनकी इस खोज के लिए उन्हें केविन केअर एबिलिटी अवार्ड, चाइल्ड इनोवेटर अवार्ड, बाल रत्न अवार्ड व प्राइड आफ राजस्थान अवार्ड के अलावा स्कूल से अनेक अवार्ड मिल चुके हैं।

यही नहीं, उन्होंने अपने जैसे व्हील चेयर पर रहने वाले बच्चों के लिए कम पैसे में एक मोबिलिटी व्हील चेयर डिजाइन की है। इसके अलावा उन्होंने मारुति इको वैन में रैम्प जुड़वा कर बड़े–बुजुर्गों व सबको एक नयी राह सुझायी है। 16 गुणे 16 व 25 गुणे 25 का सुडूको तैयार कर उसे भी पेटेंट के लिए भेजा हैं। इसी तरह की तमाम चीजें वह अपनी व्हील चेयर पर बैठे–बैठे इजाद किया करते हैं। ''प्राकृतिक आपदा मुक्त दुनिया'' का एक प्रोजेक्ट बना कर यूएन को भेजा है। उनका कहना है कि ये एअरकंडीशनर नहीं है, ये तो टेम्परेचर कंडीशनर हैं। उन्होंने एक वास्तविक एअर कंडीशनर भी तैयार किया है जो ऐसी हवा देता है जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हो। उसमें शुद्ध ऑक्सीजन, सगंध पौधों व केवड़े आदि की हवा होगी, जिससे अनेक तरह की बीमारियां भी दूर हो सकेंगी।

हृदेश्वर की प्रेरक व्यक्तित्व चेस ग्रैंडमास्टर व पांच बार की ओलम्पिक चैम्पियन हंगेरियन–अमेरिकन सुसन पोल्गर कहती हैं कि हृदेश्वर जैसे जीनियस कम ही पैदा होते हैं। उसका आईक्यू बड़े–बड़ों को मात कर सकता है।

गणित के प्रोफेसर पिता एस.एस. भाटी कहते हैं कि एक बार मैं अपने बेटे के साथ शतरंज खेल रहा था कि तभी उसका एक दोस्त आ गया तो हृदेश्वर बोला कि कितना अच्छा होता कि सभी लोग शतरंज खेल पाते। तभी से उसने ऐसे शतरंज बोर्ड को इजाद करने की कोशिशें शुरू कीं। तब वह डीपीएस जयपुर में चौथे स्टैंडर्ड में पढ़ रहा था। फिर एक दिन उसने तीन लोगों के खेलने वाला शतरंज बोर्ड तैयार कर मुझे दिखाया। मैंने उसमें एक दो छोटे–मोटे बदलाव किये। आपको तो पता ही होगा कि शतरंज का आविष्कार भारत में ही हुआ है और उसके बदले रूप का आविष्कार मेरे बेटे ने किया है। हृदेश्वर नैसर्गिक प्रतिभावान व्यक्तित्व हैं, लेकिन वह एक घातक बीमारी से जूझ रहे हैं, जिसका नाम है ड्यूशन मस्क्यूलर डिस्ट्राफी। वह 65 प्रतिशत विकलांगता के दायरे में है। उसकी मसल्स धीरे–धीरे निष्क्रिय हो रही हैं। व्हीलचेयर के सहारे ही काम कर सकते हैं।

मां मीनाक्षी कंवर राठौड़ जो स्कूल में पढ़ाती हैं, बताती हैं कि आज से छह साल पहले हमें पता चला कि उसमें इस तरह की बीमारी है। हम उसे घर में हार्टी के नाम से पुकारते हैं। हमें उसका जोश और दूसरों की मदद करने का जज्बा बेहद पसंद है। वह खुश रहता है और सबको खुशहाल देखना चाहता है। यूं तो उसे फास्ट फूड बेहद पसंद है लेकिन नुकसान न करे तो मैं पिज्जा, बर्गर, रोल्स आदि घर पर बना देती हूं। उसे पार्टी करने का बेहद शौक है। खाली समय में वह वीडियो गेम और दुनिया के कामयाब लोगों के बारे में जानने में बिताता है। उसे दोस्त बनाने का भी शौक है और उसका सबसे खास दोस्त उसका चचेरा भाई केशव है। दोनों साथ ही रहते हैं।

3 सितम्बर 2002 को जन्मे हृदेश्वर डीपीएस जयपुर में कक्षा आठ के विद्यार्थी हैं। हृदेश्वर रचनात्मक तो हैं ही, साथ ही जीयोमेट्री, गणित, कम्प्यूटर डिजाइनिंग, वीडियो गेमिंग और प्रोजेक्ट डिजाइनिंग में माहिर हैं। स्टीफन हॉकिंस व विल्मा रूडोल्फ व सुसन पोल्गर से बेहद प्रभावित हैं और उन्हें अपना प्रेरक व्यक्तित्व मानते हैं। स्कूल में अव्वल होने के कारण सभी उन्हें बेहद चाहते हैं और हमेशा मदद को तैयार रहते हैं। दुनिया की हर मुसीबत का हल उनके पास है। हृदेश्वर बड़े होकर वैज्ञानिक बनना चाहते हैं।

●

हैरिस दुनिया के ऐसे अनोखे बाल कलाकार हैं, जिन्होंने कभी किसी कला विद्यालय का मुंह नही देखा और न ही कोई उनका कला गुरु ही है। लोगों के कहने पर उन्हें जब एक कला विद्यालय में ले जाया गया, तो वहां के प्रिंसपल ने कहा कि इन्हें किसी भी प्रशिक्षण की जरूरत नहीं है। अगर आप किसी को सिखाने के लिए लगायेंगे तो इसकी नैसर्गिकता खो जाएगी। वह इसे अपनी तरह का ही बना देगा। आज अपनी इसी अनोखेपन के कारण हैरिस ने "यंगेस्ट पोर्ट्रेट आर्टिस्ट" का विश्व कीर्तिमान बनाया है।

जन्मजात कलाकार
हैरिस इम्तेयाज खान

हैरिस इम्तेयाज खान जब मात्र तीन साल के थे तो एक बार शेर का रेखाचित्र बनाया। घर वालों की नजर पड़ी और बात आयी गयी हो गयी। फिर उन्होंने गांधीजी का चित्र बनाया। काफी अच्छा था। फिर तो शायद ही कोई स्वतंत्रता सेनानी बचा हो, जिसका रेखाचित्र उन्होंने न बनाया हो। खास बात यह कि उन्होंने इस विधा की शिक्षा नहीं ली। उनका कोई गुरु नहीं है। न्यूयार्क में हुए वर्ल्ड आर्ट कम्पटीशन में भाग लिया था, पर उसने हैरिस से काफी बड़ी उम्र के कलाकारों ने यंगेस्ट पोर्ट्रेट आर्टिस्ट के रूप में विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। आईबीएन चैनल द्वारा पांच सबसे कम उम्र के कलाकारों के बीच उन्हें चुना गया। पूर्व राष्ट्रपति डा. कलाम द्वारा उन्हें एक प्रशंसा पत्र भी दिया जा चुका है। हैरिस को अब तक अनेक पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण पुरस्कार है – 2007 में हेल्पो फाउंडेशन द्वारा सम्मानित किया जाना। पुणे के पुलिस विभाग द्वारा आयोजित ड्राइंग कम्पटीशन में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परचम लहराया। इसके अलावा पुणे फेस्टीवल में लाइव डेमो और पुणे के आगा खान पैलेस में सम्मान, 2008 में प्राइड आफ पुणे बने व साथ में लंदन की यात्रा, पेडेलाइट द्वारा आयोजित इंटरनेशनल आर्ट व क्राफ्ट कम्पटीशन में विजयी रहे। पुणे में आयोजित कॉमन वेल्थ यूथ गेम्स में स्पेशल परफार्मेंस दी, 2009 में इंटरनेशनल ज्यूरीड शो, ताज फाउंडेशन द्वारा आयोजित स्टेट लेबल आर्ट कम्पटीशन, नेशनल एक्रान आईएमक्यू कान्टेस्ट में इमेजीनेशन चैम्पियन, हुंडई द्वारा आयोजित आर्ट कम्पटीशन व 2010 में अमेरिका बेस्ड मैगजीन लोन स्टार क्रिसेंट में एक जानकारी पूर्ण लेख। तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने पुणे आगमन पर हैरिस से मुलाकात कर उन्हें आशीर्वाद

दिया, पुणे के मेयर द्वारा गौरव पदक अवार्ड से सम्मानित, दैनिक भास्कर ने देश के जीनियस 25 बच्चों में जगह दी तथा 2011 में भारत सरकार द्वारा नेशनल अवार्ड फार एक्सेप्शनल एचीवमेंट का सम्मान मिला। हैदराबाद की संस्था एनीगुरु एनीमेशन ने बेस्ट एनीमेटर का पुरस्कार दिया।

3 मार्च 1998 में बुरहानपुर मध्य प्रदेश में जन्मे हैरिस इम्तेयाज खान जब पांच साल के थे, तो पुणे आ गये। हैरिस रिम इंटरनेशनल स्कूल में बारहवीं के छात्र हैं। हैरिस को ड्राइंग के अलावा पढ़ने, बास्केटबाल और शतरंज खेलने का शौक है। लेनार्डो द विंची को अपना प्रेरक व्यक्तित्व मानने वाले हैरिस का सबसे पसंदीदा काम मोनालीसा है। हैरिस को यूं तो स्केच में महारत हासिल है लेकिन पोट्रेट बनाने में वे चारकोल के साथ उंगली के पोर से शेडिंग का काम करते हैं। कैनवास पर चारकोल, एक्रेलिक, वाटर कलर, आयल व चाक आदि से अपनी कल्पनाओं को रंग भरते हैं। उनका सबसे पसंदीदा विषय महात्मा गांधी हैं। अलावा इसके मदर टेरेसा, रवीन्द्र नाथ टैगोर, पंडित नेहरू जैसे सौ से अधिक स्वतंत्रता सेनानियों के रेखाचित्र बना चुके हैं।

हैरिस जब मात्र आठ साल के थे, तब उनकी पहली प्रदर्शनी जनवरी 2007 में पुणे के न्यूक्लीयस मॉल में "8 ईयर ओल्ड चाइल्ड डज इट आल" शीर्षक से लगी। फिर "देशी थाल" टाइटिल से पुनः न्यूक्लियस मॉल में मई में लगी। "रंग दे आजादी" शीर्षक से पुणे के एसजीएस मॉल में अगस्त में प्रदर्शनी लगी। "कहां तुम चले गये" टाइटिल से न्यूक्लियस मॉल में अक्टूबर में प्रदर्शनी लगी। "हैरिस–9" के नाम से अंधेरी स्थित मुम्बई आर्ट गैलरी में दिसम्बर से जनवरी 2008 तक प्रदर्शनी, मुम्बई के मलाड स्थित इनआर्बिट मॉल में गणतंत्र दिवस पर लगी प्रदर्शनी, पुणे के वाकिंग प्लाजा में लगी प्रदर्शनी जिसमें 25 मिनट में पोट्रेट बनवाने वालों की लाइन लग गयी। आठवीं प्रदर्शनी का शीर्षक था "मास्टर्स स्ट्रोक" और यह जनवरी 2009 में पुणे के एपर्चर इंडिया आर्ट गैलरी में लगी तथा उसके बाद नवम्बर में "बाल दिशा" टाइटिल से प्रदर्शनी मुम्बई के नेहरू आर्ट गैलरी में लगी। 2014 में पुणे के नोवोटेल में डब्ल्यू ओ डब्ल्यू इंटरनेशनल आर्ट शो में 17 देशों के 70 कलाकारों के काम का प्रदर्शन किया गया। उसमें हैरिस की कला की न सिर्फ सराहना हुई बल्कि सामाजिक कल्याण के लिए कलाचित्रों की बिक्री भी हुई। उनके रेखाचित्र व प्रदर्शनियों को दिलीप कुमार, आमिर खान, राजपाल यादव, तनुश्री दत्ता, सुरेश कलमाडी, रामगोपाल वर्मा व प्रिया दत्त आदि ने खूब सराहा।

घरों की अन्तःसज्जा के व्यवसाय जुड़ीं हैरिस की मां हुमा खान बताती हैं

कि हम लोग पहले छोटे से शहर बुरहानपुर में रहते थे। वहां हैरिस के दादाजी जो गांधीजी के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में शरीक हुए थे, अक्सर उसको महात्मा गांधी और अन्य क्रांतिकारियों की कहानियां सुनाया करते थे। वह महात्मा गांधी से बेहद प्रभावित हुआ और उसने सबसे ज्यादा महात्मा गांधी के रेखाचित्र बनाये। शायर पिता इम्तेयाज खान बताते हैं कि हमारे परिवार में सभी सृजनशील हैं। मुझे अच्छा लगता है यह माहौल। मैं तो हैरिस से कहता हूं कि ऐसे काम करो कि तुम्हें लोग याद रखें। सभी की मदद हो सके, ऐसा भी काम जरूर करो। हैरिस अपनी कलाकृतियों तभी बेंचता है, जब उसे पैसा किसी के कल्याण के लिए देना हो। हैरिस आगे आने वाली चुनौतियों के लिए अभी से अपने को तैयार कर रहा है।

एक बहन और एक भाई में सबसे बड़े हैरिस को अपनी मां के हाथ का बना व्हाइट चीजी चिकन, तंदूरी चिकन व पास्ता बहुत पसंद है। हैरिस बताते हैं कि उन्हें इस बात का दुख है कि आज उनके दादाजी उनके साथ नहीं हैं। जब मेरी पेंटिंग "पावर हाउस" अच्छे दामों में बिकी और उसका सारा पैसा मानव कल्याण में गया तो मुझे खुशी हुई कि मैं छोटा सा बच्चा कुछ लोगों की मदद कर सका। हैरिस बड़े होकर नामचीन कलाकार बनना चाहते हैं। भविष्य में उनका सपना है कि वे "हैरिस आर्ट फाउंडेशन" नाम से एक कल्याण कोष खोल कर ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंदों की मदद कर सकें।

●

अदभुत प्रतिभा की धनी नैना

दोनों हाथों से लिखने में माहिर नैना ने मात्र आठ साल में हाईस्कूल व दस साल की उम्र में इण्टरमीडिएट पास कर सबको आश्चर्य में डाल दिया था। नैना टेबलटेनिस में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के 18 स्वर्ण पदक प्राप्त कर चुकी हैं। नैना मास कॉम से ग्रेज्युएट हैं और उसकी उम्र मात्र 15 साल है।

जिस उम्र में बच्चे खिलौने से खेलते हैं, सुपर गर्ल नैना ने अपनी काबिलियत का लोहा मनवा दिया। आठ साल की उम्र में ही 2008 में आईजीसीआईई बोर्ड (यूनिवर्सिटी आफ कैम्ब्रिज) से हाईस्कूल पास कर एशिया में पहली सबसे छोटी बालिका होने का गौरव प्राप्त किया। 10 साल की उम्र में 2010 में आंध्र प्रदेश बोर्ड से उसने इण्टरमीडिएट की परीक्षा पास की। नैना अब 15 की हुई हैं और वह हैदराबाद के सेंट मैरिस कॉलेज से बीए (मॉस कम्युनिकेशन) कर चुकी हैं और पोस्ट ग्रेज्युएशन की छात्रा हैं।

नैना की प्रतिभा तो सात साल की उम्र में दिखने लगी थी, जब उन्होंने रामायण श्लोक की सीडी रिकार्ड की। पढ़ाई के साथ ही उसकी रुचि खेलों में भी कम नहीं है। टेबल टेनिस में नेशनल चैम्पियन कैडेट अंडर–12 में वह विश्व में टॉप छह में आयीं। नैना ने टीटी में 18 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्वर्ण पदक हासिल कर देश का नाम रोशन किया। नेशनल लेवल पर टेबिल टेनिस सब जूनियर में हैट्रिक लगाते हुए स्वर्ण पदक भी हासिल किया।

नैना की प्रतिभा की फेहरिस्त अभी पूरी नहीं हुई है। दोनों हाथों से लिखने की कला ने उन्हें लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना दिया है। नैना प्यानो बजाती हैं और बेहतर गाती भी हैं। कम्प्यूटर में कोरल ड्रा और फोटोशॉप के सहयोग से उसने एक से एक बेहतरीन कलाचित्र भी बनाये हैं। नैना को खाने में तंदूरी चिकन उन्हें बेहद पसंद है। कुकिंग का शौक चढ़ा तो उसमें भी उनकी अलग पहचान बनी। उन्होंने स्वादिष्ट हैदराबादी बिरयानी केवल 25 मिनट में बना डाली। अब वे समय को और भी कम करने का प्रयास कर रही हैं।

पिता अश्वनी और मां भाग्यलक्ष्मी को नैना पर गर्व है। नैना बड़ी होकर आईएएस अफसर बनकर गरीबों की सेवा करना चाहती हैं।

●

निक्षेप के कीर्तिमान

टीवी पर फ्रेंच ओपेन टेनिस देखकर एक छह साल के लड़के निक्षेप ने तय कर लिया कि वे भी इस खेल में कुछ कर दिखायेंगे। 2005 में उन्होंने टेनिस रैकेट उठाया तो कीर्तिमान पर कीर्तिमान बनाते चले गये। निक्षेप ने टेनिस की सभी जूनियर श्रेणी में 60 से अधिक पदक जीतकर एक अलग स्थान बनाया है। अंडर–14 में एशिया टेनिस संघ व इंडिया टेनिस संघ की रैंकिंग में वे पहले स्थान पर थे। निक्षेप ओलम्पिक, ग्राट स्लाम व डेविस कप का हिस्सा बनकर चमकना चाहते हैं।

निक्षेप ने लान टेनिस में इतने कम समय में जो मुकाम बनाया है, ऐसा विरले ही कर पाते हैं। उन्होंने टेनिस की सभी श्रेणी (अंडर 12, 14,16,18) में कर्नाटक राज्य व राष्ट्रीय स्तर के 60 से अधिक पदक व कप जीते हैं। निक्षेप एशियन टेनिस संघ द्वारा आयोजित अंडर–14 में चार बार एशियन एकल और तीन बार डबल्स का खिताब भी अपने नाम कर चुके हैं। बंगलुरु में जन्मे निक्षेप बीआर ने 2011 में कतर दोहा में अंडर 14 में टेनिस प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर सबको चौंका दिया। 2011 में उसने हैदराबाद, पुणे, बंगलुरु व लखनऊ में चार स्वर्ण पदक झटक कर सबको अचम्भित कर दिया। निक्षेप एशिया टेनिस संघ व भारत टेनिस संघ की रैंकिंग में पहले स्थान पर पहुंच चुके थे। 2012 में मनीला–फिलीपींस व मलयेशिया में हुए अंडर–14 विश्व जूनियर सर्किट प्रतियोगिता में वे तीसरे व नवें स्थान पर आये। अंडर–14 में राष्ट्रीय रैंकिंग में वे पांचवें स्थान व एशियन टेनिस संघ की रैंकिंग में छठे स्थान पर रहे। 2013 में कोरिया में खेले गये जूनियर डेविस कप अंडर–16 में वे चौथे स्थान पर रहे और मैक्सिको में होने वाले जूनियर डेविस कप के लिए चयनित हो गये। अंडर–16 में उनकी रैंकिंग चार है।

घर में नाइकी के नाम से बुलाये जाने वाले निक्षेप का टेनिस के खेल के प्रति कैसे रुझान बढ़ा, बताते हैं– 2004 में टीवी पर मैंने फ्रेंच ओपेन टेनिस का खेल देखा, मुझे अच्छा लगा। तभी निर्णय लिया कि मैं भी इसी खेल में कुछ करूंगा। 2005 के अंत में मैं रैकेट और पानी की बोतल लेकर कोर्ट पर पहुंच गया। टेनिस के बारे में मेरे माता–पिता ज्यादा नहीं जानते थे लेकिन उन्होंने हमेशा हौसला बढ़ाया। मैं भाग्यशाली हूं कि मेरे इस सपने को पूरा करने में मेरे माता–पिता और व प्रशिक्षक ने बहुत सहयोग किया। शुरुआत

में जोसेफ व सुभाष सर व अर्जुन गौतम सर ने खेल की बारीकियां सिखायीं। मेरे प्रशिक्षक आदित्य सचदेव सर मेरी ताकत हैं और हमेशा मेरे पीछे स्तम्भ की तरह खड़े रहते हैं।

17 जनवरी 1998 बंगलुरु में जन्मे निक्षेप ने यहीं के श्री वाणी स्कूल से हाईस्कूल किया। अब वह सुराना कालेज में इंटरमीडिएट उत्तीर्ण कर चुके हैं। निक्षेप खेल के साथ–साथ पढ़ाई में भी उतने ही अच्छे हैं। निक्षेप कहते हैं – दिन में टेनिस खेलता हूं और रात में पढ़ाई करता हूं। मां चाहती थीं कि मैं डाक्टर बनूं लेकिन मेरे लगाव और झुकाव को देखते हुए अब वह भी चाहती हैं कि मैं टेनिस में ही अपना नाम करूं। मेरा एक छोटा भाई है। वह भी टेनिस में भविष्य बनाना चहता है। जब मैं बाहर रहता हूं तो मैं उसे बहुत याद करता हूं। मुझे चेन्नई एटीपी ओपेन का बेसब्री से इंतजार रहता है। यहां मुझे राफेल नाडाल को खेलता देखना बहुत भाता है। पिता बीके रवि कुमार जमीन सम्बंधी कारोबार से जुड़े हैं और मां बीजी शोभा निक्षेप के खेल में कोई भी बाधा न पड़े, इसका पूरा ख्याल रखती हैं। शोभा जी कहती हैं– निक्षेप के खेल में किसी प्रकार की कमी न रह जाए, इसका ख्याल रखना पड़ता है। महंगाई के इस दौर में विदेश भेजना काफी महंगा पड़ता है।

मैं उसके साथ पुणे, मुंबई, अहमदाबाद, दिल्ली, चंडीगढ़, चेन्नई, कोयम्बटूर, मदुरै, हैदराबाद, सिकंदराबाद, लखनऊ, त्रिवेंद्रम, विजयवाड़ा व शोलापुर जा चकी हूं। 2011 में लखनऊ में एशियन अंडर–14 टेनिस टूर्नामेंट में निक्षेप ने अपने वर्ग में एकल व डबल्स दोनों फाइनल जीत लिये। इसी साल 14 नवम्बर को हम काफी दिक्कत में थे, जब निक्षेप को उत्कृष्ट खेल के लिए बाल एवं महिला विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय बाल सम्मान के लिए चुना गया था और उसी तारीख को ही उन्हें कर्नाटक सरकार द्वारा भी सम्मानित किया जाना था। उसके छोटे भाई निनाद ने उसकी ओर से राज्य सम्मान हासिल किया। 2012 में ही निक्षेप के अद्वितीय खेल की बदौलत उसे पोगो अमेजिंग किड अवार्ड से सम्मानित किया गया।

निक्षेप अपनी मेहनत व लगन की बदौलत अपने रोल मॉडल रोजर फेडरर की भांति बनना चाहते हैं। निक्षेप का सपना है कि वे ओलम्पिक, ग्रैंड स्लैम व डेविस कप का हिस्सा बनें और उसे जीत कर देश और अपने माता–पिता का नाम रोशन करें।

●

गिनीज बुक में तृप्तराज

गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में तृप्तराज पाण्डया दुनिया के सबसे कम उम्र के तबला वादक के रूप में दर्ज हैं। तृप्तराज के गिनीज बुक में नाम आने की कहानी भी कम रोचक नहीं है। तृप्तराज जब मात्र तीन साल के थे तो उन्होंने एक रात डेढ़ बजे अपनी मां से इशारों में कहा कि गाना गाओ, मैं तबला बजाऊंगा। तृप्तराज तब तक बोल नहीं पाते थे। मां ने सोचा कि इतनी रात को तबला सुनकर सभी लोग जाग जाएंगे, उन्होंने मना किया। लेकिन तृप्तराज पर तो जैसे तबला बजाने का भूत सवार था। वे जिद पर अड़ गये। मां वीना पाण्डया ने एक लोरी गाना शुरू किया। तृप्तराज ने उन्हें कोई गीत गाने का इशारा किया। मां ने गीत गाना शुरू किया तो तृप्तराज ने तबले से ठेका देना शुरू किया। तबले की आवाज सुनकर पिता अतुल पाण्डया भी जग गये। जब उन्होंने तृप्तराज को तबला बजाते देखा तो उन्होंने इसे रिकार्ड कर लिया। यही रिकार्डिंग उन्होंने गिनीज बुक वालों को भेज दी। तीन साल के बाद उन्हें सूचना मिली कि वह दुनिया में सबसे कम उम्र के तबलावादक का खिताब जीत चुका है।

तृप्तराज पाण्डया बचपन में उंगलियों के इशारे से बोलते थे। कारण यह था कि वे तीन साल के बाद बोले। उसके पहले उनका सारा काम इशारों में ही चलता था। इन्हीं उंगलियों ने जब तबले पर नाचना शुरू किया तो ऐसी धुन निकली कि घर वालों के साथ–साथ पूरी दुनिया ने दांतों तले उंगली दबा ली। तीन साल के तृप्तराज के इसी हुनर ने उसे गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में वर्ल्ड यंगेस्ट तबला परफार्मर के खिताब के साथ दर्ज करा दिया। यही नहीं, यूनिक वर्ल्ड आफ रिकार्ड और इंडिया बुक आफ रिकार्ड में भी उनका नाम दर्ज है। तृप्तराज अब तक सौ से ज्यादा संगीत के कार्यक्रम पेश कर चुके हैं।

'जब तृप्तराज छोटा था तो मेरी मां भजन गाती थीं तो ये पीछे से ठेका दिया करता था। तब ये अट्ठारह महीने का था। घर के सभी समान को तबले की तरह बजाता। उसकी उंगलियां हर वक्त चलती रहतीं। मेरी मां ने उसे एक ढोलकी लाकर दी। अब तो इसने दिन रात उसी को अपना खिलौना बना लिया।' बताते हैं तृप्तराज के पिता टैक्स कंस्लटेंट अतुल पाण्डया। 'तृप्तराज जब दो साल दो महीने का था, तब उसने अपना पहला कार्यक्रम पेश किया था सोमाया कालेज में। उसके बात तीन साल में आकाशवाणी

में उसने अपनी कला का प्रदर्शन किया। अब तक तृप्तराज 100 से ज्यादा कार्यक्रम पेश कर चुके हैं। उन्हें बाल कला रत्न अवार्ड, यूनिक वर्ल्ड रिकार्ड, अवार्ड आफ एक्सलेंस, बाल रत्न अवार्ड, आकाशवाणी व दूरदर्शन से प्रशस्ति पत्र, इंडिया बुक आफ रिकार्ड सहित अनेक पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। तृप्तराज को साउथ ईस्ट एशिया के नौ होनहार बच्चों में शामिल किया गया है। कच्छी गुजराती बाल गौरव अवार्ड के अलावा जीटीवी के वंडर किड कार्यक्रम में भी प्रस्तुति दे चुके हैं। बंगलुरु में सत्य साईं प्रशांत निलियम में दस हजार दर्शकों के समक्ष आधे घंटे तक तबलावादन कर सबको आश्चर्य में डाल दिया।

मां वीना पाण्डया बताती हैं कि जब तृप्तराज को मैं और मेरी सासू मां लोरी, भजन और गीत आदि सुनाते तो उसकी उंगलियां तेजी से चलने लगतीं। कभी वह अपने पेट तो कभी दूध के गिलास को ही तबला बना लेता। पहले तो हमने ध्यान नहीं दिया लेकिन मेरी सासू मां ने कहा कि यह कोई साधारण बालक नहीं है। इसे तबला सिखाओ। हमारी परेशानी यह भी थी कि तृप्तराज तीन साल तक सिर्फ माई के अलावा कुछ नहीं बोल पाते थे। हमने उसे दो साल की उम्र में स्कूल में डाला, जिससे वह दूसरे बच्चों को देखकर बोलना सीखे। लेकिन वह तीन साल के बाद ही बोला तो ऐसा बोला कि उसका सुर ताल अब सारी दुनिया सुन रही है।

23 अक्टूबर 2006 को जन्मे तृप्तराज चौथी कक्षा के छात्र हैं और स्कूल में हमेशा अव्वल आते हैं। तृप्तराज को अपनी मां के हाथ की बनी पूरनपोली बेहद पसंद है। तृप्तराज की एक बड़ी बहन तृषा भी हैं जो हाई स्कूल में पढ़ती हैं। दोनों में जहां बेहद प्यार है, वहीं कभी–कभी छोटी–मोटी लड़ाइयां भी हो जाती हैं। तृप्तराज रोज एक से दो घंटे तबले का रियाज करते हैं। उनके गुरु ज्ञानेश्वर पोपलगढ़ को तृप्तराज में बेहद सम्भावनाएं और उम्मीदें दिखायी देती हैं। बताते हैं कि अभी वह बच्चा है लेकिन उसमें सीखने की ललक गजब की है। वह तबले के अलावा अन्य वाद्य यंत्र भी बजा लेता है। खाली समय में तृप्तराज टीवी पर कार्टून चैनल के अलावा कम्प्यूटर पर वीडियो गेम्स, क्रिकेट, साइकिलिंग और फुटबाल खेलना पसंद करते हैं। रितिक रोशन के प्रशंसक तृप्तराज की दो ही ख्वाहिश हैं, एक तबला सम्राट जाकिर हुसैन साहब के साथ संगत व देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के समक्ष अपनी कला का प्रदर्शन। तृप्तराज बड़े होकर तबला–वादन में ही अपना नाम देश की सीमाओं से बाहर ले जाना चाहते हैं।

●

अभिनन्दन ने रचा इतिहास

बश्वेसर सर्किल, बेलगाम में लोगों का हुजूम इस अनोखे कीर्तिमान का गवाह बनने के लिए लालायित था। जीटीवी के कार्यक्रम "शाबाश इंडिया" की टीम हर क्षण को कैमरे में कैद करने के लिए तैयार थी। जैसे ही एक्शन की आवाज आयी, उन्होंने अपने दोनों हाथ पैर क्रास की भांति फैलाये और इन्हीं तने हाथ और पैर पर लुढ़कने लगे। एकदम सटीक शुरुआत। बैलगाड़ी के पहिये (कार्टव्हील) की तरह वह गोल–गोल लुढ़कने लगे। एक... दो... तीन और इसी तरह वे 37 मिनट और 53 सेकेण्ड में 1321 बार पहिये की भांति लुढ़ककर विश्व रिकार्ड बना चुके थे। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा परिसर गूंज रहा था। वे दुनिया का पहले बालक बन गये थे, जिसने यह अनोखा रिकार्ड बनाया था। इससे पहले कैलोराडो के डॉन क्लैप्स ने 1293 चक्कर बनाकर गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना दर्ज कराया था।

आइये मिलते हैं इस रिकार्डधारी बच्चे से। यह बच्चा है बेलगाम कर्नाटक का अभिनन्दन सडलगे। उनकी इस उपलब्धि के लिए उनका नाम वर्ल्ड रिकार्ड एकेडमी, लिम्का बुक आफ रिकार्ड व इंडिया बुक आफ रिकार्ड में भी दर्ज हो गया। अभिनन्दन कराटे में ब्लैक बेल्ट धारी भी हैं। अभिनन्दन ने जब यह रिकार्ड बनाया, तब वे मात्र नौ साल के थे। अभिनन्दन की मां सरोजा सडलगे बताती हैं कि जब नन्दीश (वे अभिनन्दन को इसी नाम से सम्बोधित करती हैं) दूसरी कक्षा में था, तब काफी कमजोर रहता था और अक्सर बीमार पड़ जाता। हमारे घर के पास ही जूडो कराटे की कक्षा लगती थी। मैंने सोचा कि जूडो कराटे से शरीर स्वस्थ रहेगा, यही सोचकर जूडो कराटे में दाखिला

अभिनन्दन जब बच्चे थे, तब खेल–खेल में अपने हाथ–पांव को खींचकर शरीर को पहिये की तरह जमीन में लुढ़काते। बचपन का यह शौक उनके जीवन में एक नया मोड़ लेकर आया। उनकी इस अदा को देख कर जूडो कराटे अकादमी के कोच ने उन्हें प्रशिक्षित करने की सोची। वे जूडो कराटे के साथ कार्टव्हील (बैल गाड़ी के पहिये) का भी अभ्यास करने लगे। फिर जब वे नौ साल के हुए तो दुनिया के सामने आये और देखते–देखते ही छा गये। टीवी, समाचार पत्र व पत्रिकाओं में उनकी उपलब्धियों का बखान होने लगा। यही नहीं, अभिनन्दन जूडो कराटे के साथ–साथ अपनी पढ़ाई को लेकर बेहद गम्भीर रहे और हाईस्कूल में 92 फीसद अंक प्राप्त कर अपने मेधावी भविष्य का संकेत दे रहे हैं।

दिलवा दिया। उनके सर गजेन्द्र कक्टीकर ने एक दिन उसे कार्टव्हील की तरह लगातार लुढ़कते हुए देखा। उन्होंने कहा कि ये तो इसके अंदर एक नैसर्गिक गुण है। एक दिन यही गुण इसका नाम ऊंचा करेगा।

कोच गजेन्द्र बताते हैं कि शुरू–शुरू में वह कार्टव्हील करता तो मुझे लगता कि ज्यादा करने से हाथ–पैर में खिंचाव आयेगा। अभी वो बच्चा ही था। लेकिन जब उसने बताया कि वह तो यह बचपन से करता आ रहा है और सौ–दो सौ बार करने से उसे थकावट तक नहीं तक होती तो मेरी हिचक जाती रही। अभ्यास जारी रहा। उसने इतनी कम उम्र में जो कीर्तिमान बनाया, वह आज तक कायम है। उसकी इस उपलब्धि के लिए उनके माता–पिता और वह खुद प्रशंसा का हकदार है।

मां सरोजा बताती हैं कि हेमलता मैडम ने जी टीवी की "शाबाश इंडिया" टीम से बात की और उनके दिशा निर्देशन में अभिनन्दन ने 37 मिनट और 53 सेकेण्ड में 1321 चक्कर लगाकर विश्व कीर्तिमान बना दिया। मैं तो कोच गजेन्द्र जी और हेमलता जी को इसका पूरा श्रेय देती हूं, उन्हीं की बदौलत अभिनन्दन को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। प्रवक्ता पिता बी. सडलगे बताते हैं कि पढ़ाई के प्रति उसका जुनून देखने लायक है। वह जूडो कराटे के कक्षा से छुट्टी लेकर पढ़ाई पर भी ध्यान देता है। अब वह इंटर में पहुंच गया है। इन दिनों वह अमृता विद्यालयम् में पढ़ने गया है। वह हास्टल में रहकर पढ़ाई कर रहा है।

10 मई 1998 को जन्मे अभिनन्दन ने हाई स्कूल में 92 प्रतिशत अंक लाकर सबको चौंका दिया। नृत्य के शौकीन अभिनन्दन जूडो कराटे में राज्य और राष्ट्रीय विजेता बन चुके हैं। मां के हाथ के बने श्रीखण्ड पर जान छिड़कने वाले अभिनन्दन पूरी तरह से शाकाहारी हैं। अभिनन्दन का एक छोटा भाई भी आदित्य। वह कक्षा आठ में पढ़ता है। मां–बाप और आदित्य सभी अभिनन्दन को बहुत याद करते हैं। अभिनन्दन बड़े होकर सीए कर, आईएफएस बनना चाहते हैं। वे इन्कम टैक्स अधिकारी बनकर देश में व्याप्त भ्रष्टाचार भी मिटाना चाहते हैं।

●

"लिटिल बिल गेट्स" हैं अमन रहमान

कम ही लोगों को यह पता होता है कि उनके अंदर क्या–क्या क्षमताएं हैं। कहा यह भी जाता है कि होनहार विरवान के चीकने पात होते हैं या पूत के पांव पालने में ही दिखायी दे जाते हैं। हम बात कर रहे हैं देहरादून के एक प्रतिभावान बालक अमन रहमान की। अमन जब मात्र तीन साल के थे, तभी उन्होंने एक एनीमेशन फिल्म बनाकर जमाने को बता दिया था कि वे कोई साधारण प्राणी नहीं हैं। उनकी उड़ान भी काफी ऊंची है। अमन एकमात्र ऐसे बालक हैं, जिनको गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड ने वर्ल्ड यंगेस्ट कालेज लेक्चरर के रूप में दर्ज किया है।

आठ साल का मासूम सा लड़का कुर्सी पर खड़े होकर बड़े लोगों को एनिमेशन फिल्म बनाने से सम्बन्धित बाकायदा लेक्चर दे तो शायद यह बात आपके गले के नीचे जल्दी नहीं उतरेगी। लेकिन यह सच है और शायद देहरादून के अमन रहमान देश के पहले ऐसे प्रवक्ता होंगे जो इतनी कम उम्र में लोगों को पढ़ाने जैसा दुरुह कार्य कर रहे हैं। एक कहावत है कि अगर हम चने को मुट्ठी में दबायें तो पसीने से उममें भी अंकुर निकल आयेंगे। मतलब ये कि आपमें काबिलियत है तो आप कितनी भी कम उम्र के क्यों न हों, प्रतिभा सबके सामने आकर ही रहेगी। अमन रहमान पर यह बात एकदम सटीक बैठती है।

अमन ने जब होश सम्भाला तो अपने अब्बू को स्कूटर रिपेयरिंग की दुकान पर पाया। उनकी आमदनी खींचतान के छह हजार से अधिक नहीं थी। तीन बच्चे, अम्मी और घर की सारी जिम्मेदारी उन्हीं पर थीं। बड़े भाई काफी समय से कम्प्यूटर की मांग कर रहे थे तो अब्बू ने किसी तरह से जोड़–जुगाड़ करके एक पुराना कम्प्यूटर दिलवा दिया। तब अमन की उम्र मात्र तीन साल ही थी। वे भी भाई को क्रसर आगे–पीछे खिसकाते देखते। उनके लिए कम्प्यूटर कोई नायाब चीज से कम नहीं था। अमन अपने खिलौने छोड़कर कम्प्यूटर की जादुई दुनिया के दीवाने हो गये।

भाई से इजाजत लेकर पहली एनिमेशन फिल्म बनायी। नाम था "डांसिंग एल्फाबेट्स"। उनकी इस उपलब्धि पर कोलम्बो की पेन इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ने उन्हें डाक्टर आफ आनर्स की उपाधि देकर सम्मानित किया। थोड़े बड़े हुए तो

कम्प्यूटर की भाषा समझने लगे। लगभग छह साल की उम्र तक पहुंचते–पहुंचते वे देहरादून में कालेज आफ इंटरेक्टिव आर्ट्स में बाकायदा अध्यापक बन गये। वे सप्ताह में एक दिन एनिमेशन की बारीकियां बीएससी के छात्रों को पढ़ाते।

पिता मुजीबुर्रहमान बताते हैं कि जब उन्हें पता चला कि उनका छोटा बेटा एनिमेशन फिल्म बनाने की काबिलियत रखता है तो उन्होंने उसे कालेज आफ इंटरेक्टिव आर्ट में दाखिला दिलवा दिया। जिस कोर्स को सीखने में पंद्रह महीने लगते हैं, अमन ने मात्र तीन माह में सीख लिया। पांच माह बाद उन्होंने अपना कम्प्यूटर प्रोग्राम तैयार कर सबको चौंका दिया। हमें लगा कि हमारा बेटा दुनिया का सबसे कम उम्र का लेक्चरर बन गया है। हमने गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में उसका नाम दर्ज कराने के लिए लिखा। उन्होंने समय मांगा है। क्रिकेटर सचिन तेन्दुलकर व युवराज सिंह अमन की प्रतिभा का लोहा मान चुके हैं। पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने उन्हें "प्राउड चाइल्ड" की उपाधि से नवाजा। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने उन्हें लैपटॉप उपहार स्वरूप दिया तथा अट्ठारह साल तक की शिक्षा का खर्च उठाने का वादा किया। उत्तराखंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री बीएल खंडूरी ने भी सम्मानित किया। उन्हें उत्तराखंड सरकार की ओर से एक लैपटॉप व एक लाख का चेक इनाम के रूप में मिला है। कालेज आफ इंटरेटिव आर्ट्स की ओर से वजीफा भी मिल रहा है।

अमन बताते हैं कि वे अब तक डेढ हजार एनिमेशन फिल्में बना चुके हैं। उनमें राइट टू वोट व क्षयरोग पर बनायी फिल्म उन्हें ज्यादा पसंद हैं। कम्प्यूटर पर कितने घंटे काम करते हैं, इस पर उनका कहना था कि छुट्टियों के दिनों में तो आठ घंटे तक काम करता हूं, लेकिन स्कूल के दिनों में होमवर्क भी होता है तो चार घंटे तो बैठता ही हूं। 26 जुलाई 2000 को जन्मे अमन देहरादून के सेंट थामस कालेज से इंटर पास कर चुके हैं। उन्हें ब्रिलियेंट स्टूडेंट होने के कारण दो क्लास का ग्रेस मिला है। अमन को एडॉब, फ्लैश, फायरवर्क, ड्रीम, वीवर, माया, 3–डी मैक्स तथा अट्ठारह अन्य सॉफ्टवेयर पर काम करने में महारत हासिल है।

पिता मुजीबुर्रहमान बताते हैं कि आस्ट्रेलिया की एक कम्पनी ने अमन को बुलाया कि वह उनकी कम्पनी में काम करें लेकिन मैंने और मेरे बेटे ने तय किया कि हम देश के बाहर नहीं जाएंगे। अभी अमन की पढ़ाई भी है। अमन बड़े होकर एनिमेशन फिल्म में ही देश का नाम ऊंचा करना चाहते हैं। वे गरीब बच्चों को मुफ्त पढ़ाने के लिए एक स्कूल खोलने का सपना भी संजोये हुए हैं।

●

पैदाइशी कलाकार हैं आरुषि

इस बात पर शायद ही कोई यकीन करेगा कि मात्र चार माह की बच्ची जो ठीक से बोल न पाती हो, वह आड़ी–तिरछी लकीरें खींचकर कलाकृतियां बनाने लगे। यह कोई कल्पना या फिल्मी कथा नहीं है बल्कि सच्चाई है। आरुषि भटनागर के बारे में यह बात एकदम सत्य है कि वह जब केवल ग्यारह माह की थीं, तब उसकी 52 चित्रकलाओं की प्रदर्शनी लगी और लोगों ने इतनी छोटी सी उम्र की लड़की की कल्पना की उड़ान को देखा तो देखते ही रह गये। जब वे मात्र 18 महीने की थीं, तभी उनकी एक कलाकृति 5,000 रु. में बिकी। उनकी इस कामयाबी के लिए गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकाड्र्स में सबसे कम उम्र की व्यावसायिक चित्रकार की रूप में उन्हें जगह मिली।

मां विनीता भटनागर बताती हैं कि जब वह मात्र चार माह की थी तो अपने गीले नन्हे हाथों व पैरों से दीवार पर कुछ गढ़ दिया करती थी। हमने हाथ में रंग लगाया तो उसने आड़ी तिरछी लकीरें बना दीं। ध्यान से देखने में वह कलाकृति जैसी लगतीं। फिर वह अक्सर घर की दीवारों, खाने की मेज, चादर, दरवाजों, मेज, अल्मारी, कापी–किताब, मोजों–जूतों, फर्श और यहां तक कि फूलों पर भी अपनी तरह से रंग भर दिया करती थी। फिर ग्यारह माह की छोटी बच्ची की 52 कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगी। जब वह 18 माह की थी तो उसकी पहली कलाकृति 5000 रुपये में बिकी। आरुषि अब तक दस बड़े शहरों में 21 बार अपनी एकल प्रदर्शनी लगा चुकी हैं। उसने लगभग 3000 से ऊपर कलाचित्र बनाये हैं।

क्या कोई इस बात पर यकीन करेगा कि मात्र चार साल की बच्ची कलाकृतियां बना सकती है। क्या कोई इस बात पर भी यकीन करेगा कि मात्र ग्यारह महीने की बच्ची अपनी 52 कलाकृतियों के साथ एकल प्रदर्शनी करती है। क्या इस बात पर यकीन करना आसान है कि मात्र 18 महीने की बच्ची की कृति 5 हजार में बिक जाती है और उनका नाम गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज कर लिया जाता है। यह सारे कमाल कर दिखाये हैं उज्जैन की आरुषि ने। वे दुनिया की पहली ऐसी पैदाइशी कलाकार हैं, जिनका नाम इतनी कम उम्र में गिनीज आफ वर्ल्ड रिकाड्र्स में व्यावसायिक फनकार के रूप में दर्ज हुआ है।

पिता शैलेन्द्र भटनागर बताते हैं कि जब आरुषि सेंट मीरा नर्सरी स्कूल में पढ़ती थी, तो वहां हर साल आर्ट और क्राफ्ट की प्रदर्शनी लगा करती थी। आरुषि

की चित्रकला को देखकर लोगों को यकीन ही नहीं होता था कि यह इस नन्ही सी बच्ची ने बनाया है। वहां की अध्यापिका रुबी करना का कहना था कि वह जिस तरह से प्रकृति को चित्रित करती है, वह बड़े से बड़े चित्रकार को भी सोचने पर मजबूर कर दे। आरुषि की एकल प्रदर्शनी में अक्सर बड़े चित्रकार भी आया करते थे और मेरी बच्ची का काम और उम्र देखकर वे आश्चर्य में पड़ जाते कि ऐसा रंग संयोजन और स्ट्रोक तो लम्बी साधना के बाद ही कोई कर पाता है।

आरुषि ने अब तक अनेक पदक जीते हैं। आरुषि को पहली ट्राफी तब मिली, जब वह मात्र एक साल की थीं और भोपाल में आयोजित प्रदेश स्तर की प्रतियोगिता में प्रथम आयी थीं। हैदराबाद में हुई – राष्ट्रीय कला प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने के बाद आरुषि ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। "यंगेस्ट आर्टिस्ट आफ द इयर" जैसे सभी महत्वपूर्ण अवार्ड अब तक उनके काम की गवाही दे रहे थे। वे जहां भी गयीं अवार्ड के साथ लौंटीं और अपनी पहचान छोड़ आयीं। सम्मान मिले तो मिलते ही गये। अन्तरराष्ट्रीय बाल समारोह के अवसर पर नयी दिल्ली के राष्ट्रीय बाल भवन में एकल प्रदर्शनी लगाकर तमाम देशों के बच्चों को अचम्भित किया। इंदौर की एमरेल्ड हाइट्स स्कूल की कला दीर्घा का उद्घाटन आरुषि के हाथों कराया गया। वकानकर कला संस्थान, उज्जैन, नेशनल बाल भवन, नयी दिल्ली, नारायण कला मण्डप, इन्दौर, रेखांकन कला संस्थान, भोपाल व पोगो टीवी चैनल में इनकी बनायी कलाकृतियां दीवारों की शोभा बढ़ा रही हैं। आरुषि चटक रंगों को ज्यादा पसंद करती हैं। आरुषि अपनी कलाकृतियों में प्रकृति को महत्व देती हैं और उसे साकार करने में पोस्टर कलर, एक्रेलिक, रंगीन पेंसिल, वैक्स, स्केच पेन व तैल रंग का भरपूर इस्तेमाल करती हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि उनका कोई प्रशिक्षक नहीं है। पहले उनके पिता थोड़ा बहुत गाइड किया करते थे लेकिन बाद में उन्हें लगा कि उसके नैसर्गिक विकास और अलग पहचान के लिए जरूरी है कि उसे मुक्त छोड़ दिया जाए। नतीजा बेहतर ही रहा, वह कहते हैं।

आरुषि एक एनजीओ से जुड़कर अपनी कमायी का पैसा उसमें दान करती हैं ताकि गरीब बच्चों का भविष्य बन सके। वह गरीब बच्चों के साथ खेलती हैं और उनकी छोटी–मोटी जरूरतों को पूरा करती हैं। आरुषि कहती हैं कि उन्हें रंगों से खेलना भाता है। रंग मेरे लिए जीवन जीने का आधार हैं। मैं रंगों के बिना एक पल भी नहीं रह सकती। मुझे प्रकृति से जुड़े चैनल देखने का शौक है। मैं पूरी दुनिया घूमना चाहती हूं। 1 जून 2002 को उज्जैन में जन्मीं आरुषि को सबसे ज्यादा खुशी पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल से मिल कर हुई थी। आरुषि बड़ी होकर नामी चित्रकार बनना चाहती हैं।

●

अगम की उंगलियों का जादू

अगम बचपन में जब बोतल से दूध पीते थे तो उनकी उंगलियां बोतल को ही तबला बना लेती थीं। बोतल हटते ही वे पेट को तबला बना देते। उनके इसी जूनून ने उन्हें लिमका बुक आफ रिकार्ड्स में यंगेस्ट तबला प्लेयर आफ इंडिया का अवार्ड दिलवा दिया। नेशनल चिल्ड्रेन अवार्ड, पोगो अमेजिंग किड अवार्ड के अलावा वे शाबाश इंडिया, सारेगामा लिटिल चैम्प व हिन्दुस्तानी हुनरबाज जैसे रियालटी शोज में भी छाते चले गये।

तबला वादकों में अगम शिंगारी आज भले ही अन्जाना सा नाम न हो लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने के लिए उन्हें काफी मशक्कत करनी पड़ी। अगम जब मात्र तीन साल नौ महीने और पंद्रह दिन के थे तो उन्होंने पहला संगीत का कार्यक्रम किड जी स्कूल में दिया था। मां श्वेता शिंगारी बताती हैं कि उससे कहा गया कि गायत्री मंत्र पर तबला बजाए, लेकिन जब लड़कियों के ग्रुप ने मंत्र पढ़ना शुरू किया तो उसने बजाने से इंकार कर दिया। बोला–ये बेसुरा गा रही हैं। इतने छोटे बच्चे को लय ताल का इतना अच्छा ज्ञान देखकर सभी चकित रह गये। मां श्वेता बताती हैं कि जब बचपन में हम इसे दूध पिलाते थे तो यह दूध की बोतल पर अपनी उंगलियां लय से चलाया करता था। अगर बोतल हटा लो तो पेट पर उंगलियां चलाने लगता था। धीरे–धीरे इसे तबला बजाने का इतना जुनून सवार हो गया कि घर की हर चीज को तबला बना देता।

अगम का यही जुनून उसे बुलंदियों की तरफ ले गया। जब वह मात्र छह साल के थे तो उन्हें 2007 में लिमका बुक आफ रिकार्ड्स ने "यंगेस्ट तबला प्लेयर आफ इंडिया" के खिताब के साथ जगह मिली। 2011 में अद्वितीय उपलब्धि के लिए नेशनल चिल्ड्रेन अवार्ड तथा 2012 में पोगो चैनल की ओर से पोगो अमेजिंग किड अवार्ड से नवाजे जा चुके हैं। इसके अलावा शाबाश इंडिया, सारेगामा लिटिल चैम्प, हिन्दुस्तानी हुनरबाज व फनजाबी चक दे जैसे टीवी रियालटी शो में भी नाम कमा चुके हैं। अगम हैदराबाद में ईटीवी चैनल, इंदौर में जीटीवी और मुम्बई में पोगो चैनल में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं। दिल्ली में डीएवी पब्लिक आल स्कूल्स टैलेंट कम्पटीशन में उन्होंने सभी बच्चों को परफार्मिंग आर्ट में पछाड़ते हुए डीएवी मैनेजमेंट कमेटी गोल्डेन अवार्ड अपने नाम कर लिया। जालंधर में हर साल होने वाले प्रसिद्ध नेशनल हरवल्लभ संगीत

सम्मेलन में पुरस्कार जीता। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने दस हजार का पुरस्कार व स्टेट अवार्ड दिया। दूरदर्शन जालंधर में कई लाइव प्रोग्राम दे चुके हैं अगम। अब तक अगम 150 से ज्यादा शील्ड व मेडल अपने खाते में जोड़ चुके हैं। यही नहीं, उन्हें जो सीसीआरटी वजीफा दो साल से मिल रहा था, उनके टैलेंट और प्रोग्रेस को देखते हुए दो साल के लिए बढ़ाया गया।

अमृतसर में 17 फरवरी 2001 में जन्मे अगम को मां के हाथ का बना राजमा–चावल पंसद है। अगम ईश्वर को दिल से मानते हैं और बिना भगवान का स्मरण किये कोई काम शुरू नहीं करते। बैडमिन्टन खेलना, फिल्में देखना, गाने गाना, एनिमल किंगडम व कार्टून चैनल देखने के अलावा रोज अखबार पढ़ना उनके शौक में शामिल है। यहां के डीएवी पब्लिक स्कूल में कक्षा 9 के विद्यार्थी अगम अपने स्कूल में शिक्षक व बच्चों का दुलारे हैं। उन्हें हमेशा अस्सी प्रतिशत से अधिक नम्बर मिलते हैं। उन्होंने तबला बजाने के शौक को कभी पढ़ाई पर हावी नहीं होने दिया।

अगम अपने दादू विजय शिंगारी के खास चहेते हैं। दादू की वजह से अगम यहां तक पहुंच सके। दादू बताते हैं कि 3 फरवरी को उस्ताद जाकिर हुसैन साहब अपने वालिद की स्मृति में एक कार्यक्रम रखते हैं। उसमें शिरकत करने का न्योता मिला। वहां पंडित जसराज ने इसका हुनर देखकर खूब आशीर्वाद दिया। दादू बताते हैं कि अगम रोज एक से दो घंटे रियाज करते हैं। आजकल उसे उस्ताद बलविन्दर विक्की तबले की बारिकियां सिखा रहे हैं। बलविन्दर जी अगम से इतना प्रभावित हैं कि चार घंटे सफर करके कपूरथला से अमृतसर आते हैं तबला सिखाने।

अगम तबला उस्ताद जाकिर हुसैन के बहुत प्रशंसक हैं और उन्हीं की तरह भविष्य में बनना चाहते हैं। अगम का सपना है ग्रैमी अवार्ड जीतना। अगम का कहना है – "मुझे हर हाल में ग्रैमी अवार्ड जीतना है और इसके लिए जितनी भी मेहनत करने की जरूरत है, मैं तैयार हूं।"

●

प्रतिभा की धनी हिफ्जा बेग

गणित के सवालों को खेल–खेल में हल करने वाली हिफ्जा को उसकी इस अनूठी प्रतिभा ने राष्ट्रपति पुरस्कार तक दिलवा दिया। गाजियाबाद के मसूरी इलाके के गांव कुशलिया में छोटी सी जोत के स्वामी व मजदूरी करने वाले कज्जाफी बेग की बेटी हिफ्जा अद्वितीय प्रतिभा की धनी हैं। बरसात के दिनों में टपकती छत के नीचे पल–बढ़ रही हिफ्जा जब मात्र पांच साल की थी, तभी से घर के हिसाब–किताब को पलक झपकते जोड़ दिया करती थी। माता–पिता यह जानते तो थे लेकिन आर्थिक तंगी के चलते वे स्कूल भेजने की सोच भी नहीं सकते थे। लोगों के दबाव व अनेक चीजों में कटौती कर, हिफ्जा को किसी तरह स्कूल भेजा तो वह कक्षा दो में पहुंचते ही दशमलव के बड़े–बड़े गुणांक का फल पलक झपकते निकालने लगी। हिफ्जा की इस खूबी को जब मीडिया ने उजागर किया तो दिल्ली को ह्यूमन ट्रस्ट सोसायटी ने उसकी पढ़ाई का खर्च उठाने का आफर दिया। 2012 में हिफ्जा को डीपीएसजी इंटरनेशनल डासना में दाखिला मिल गया। फिर क्या था, घर की तकदीर जैसे खुल गयी। इसी साल उन्हें नेशनल चाइल्ड अवार्ड के लिए चुन लिया गया। इस खुशी को पूरे कुशलिया गांव ने साझा किया। पिता कज्जाफी भावुक होते हुए बताते हैं कि जब मेरी बेटी राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के साथ खड़ी थी तो मेरी आंखें भर आयीं। फरवरी 2013 में हिफ्जा को एनडीटीवी कोकाकोला स्कूल सपोर्ट प्रोग्राम के तहत यूपी से चुना गया। बेटी के कारण देश के महान खिलाड़ी सचिन तेन्दुलकर व ऐश्वर्या राय से मिलने का मौका भी मिला। तेजी से गणना करने के लिए हिफ्जा को 2012 में लिम्का बुक

गांव की मिट्टी में पली–बढ़ी हिफ्जा खेल–खेल में गणित के कठिन से कठिन सवालों को पलक झपकते हल करने लगी तो लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर मीडिया में जब बच्ची की काबिलियत के कसीदे पढ़े गये तो दिल्ली की एक संस्था ने मदद के हाथ आगे बढ़ाये। अब तो गाड़ी चल निकली। देखते–देखते इनाम–इकराम की जो झड़ी लगी, वह आज़ तक जारी है। राष्ट्रपति द्वारा नेशनल चाइल्ड अवार्ड, एनडीटीवी और कोकाकोला स्कूल सपोर्ट प्रोग्राम के तहत यूपी से उसे चुना जाना, उसकी अद्वितीय प्रतिभा का लोहा मनवाने के लिए काफी है। हिफ्जा बड़ी होकर आईएएस अधिकारी बनना चाहती है।

आफ रिकार्ड के लिए दर्ज किया गया है। प्रदेश के राज्यपाल ने भी सम्मान स्वरूप कम्प्यूटर प्रदान किया।

गरीब किसान कज्जाफी बेग बताते हैं कि जब हमारे दो बच्चे हुए तो हमने तय किया कि हमें और बच्चे नहीं चाहिए। हम अपने बच्चों की अच्छी परवरिश चाहते थे। इस पर हमारे रिश्तेदारों ने कड़ा एतराज किया और हमारा हुक्का–पानी बंद कर दिया। यानी कि हमें अपने समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। हमारी मुसीबतें कम नहीं हो रही थीं। एक बार मैंने अपनी बेटी से खेती के दौरान खुरपा उठा लाने के लिए कहा तो वहां दो पुलिस वाले आ गये और हमें धमकी देकर ले जाने लगे कि तुम बच्चों से मजदूरी करा रहे हो। मैं किसी तरह बच पाया। मुझसे यह भी कहा गया कि केवल अपने बेटे को ही पढ़ाओ, तुम बेटी का नाम स्कूल से कटवा दो। अब इस बात को लेकर मुझे बेहद तनाव रहता है कि कोई मेरी बेटी को नुकसान न पहुंचाए।

मां रजिया बेग का कहना है कि जब हिफ्जा और उसका भाई पांच–छह साल के थे, तभी गणित के कठिन से कठिन सवालों को पलक झपकते हल कर लिया करते थे। गांव के स्कूल मास्टर कहते थे कि अच्छे स्कूल में बच्चों को डालो लेकिन हमारे पास पैसे नहीं हुआ करते थे। बाद में हमें मदद मिली और बच्चों का नाम अच्छे स्कूल में लिख पाया। मैं नहीं पढ़ पायी लेकिन चाहती हूं कि हिफ्जा जितना पढ़ना चाहे, पढ़े। चाहे हमारे समाज में कितना भी विरोध क्यों न हो, चाहे जितनी मुसीबतें आयें, चाहे हमारा सब कुछ बिक जाए, तो भी बेटी को पढ़ायेंगे जरूर।

हिफ्जा को दुनिया के सभी मुल्कों की राजधानियां तथा अनेक जानकारियाँ कंठस्थ हैं। खाली वक्त में टीवी पर हिफ्जा को समाचार, डिस्कवरी व कार्टून चैनल देखना पसंद है। बास्केट बाल उसका पसंदीदा खेल है। मां के हाथ के बने छोले–भटूरे की शौकीन, 30 मार्च 2004 को जन्मी, कक्षा छह की छात्रा हिफ्जा का कहना है कि वह बड़ी होकर आईएएस अधिकारी बनकर गरीबों की मदद करना चाहती हैं। हिफ्जा जिलाधिकारी अपर्णा उपाध्याय से मिली थीं। वह उनके व्यक्तित्व से काफी प्रभावित हुईं। वे हिफ्जा की रोल मॉडल बन गयीं। हिफ्जा भी उन जैसी ही बनना चाहती हैं।

●

करुणा ने किया कमाल

7 मई 2014 का दिन बेलगाम (कर्नाटक) के लिए एक नया इतिहास लिखे जाने का सुनहरा दिन बनने वाला था। सभी सुबह 7:30 पर लिंगराज कालेज परिसर स्थित केएलई सोसाइटी के स्केटिंग रिंक में सांस रोके खड़े थे। आज उनके नगर की उभरती लिम्बो स्केटिंग प्रतिभा छह वर्षीय करुणा राजन वाघेला एक नया इतिहास रचने जा रही थीं। ठीक समय पर आत्मविश्वास से ओतप्रोत करुणा ने रिंक में प्रवेश किया और अपने हाथ–पांव को 180 डिग्री तक फैलाया, मानो आकाश में टेक आफ करने जा रही हों। इशारा मिलते ही अब तक मुर्दा पड़े स्केट के पहियों में मानो जान आ गयी हो। चक्कर पे चक्कर लगने लगे। दर्शक दम साधे उसको चक्करघिन्नी की तरह घूमते देख रहे थे। करुणा ने सात किलोमीटर की दौड़ आठ इंच ऊंचाई के 196 बार (लोहे के राड) को 29 मिनट 12 सकेण्ड और 12 माइक्रो मिनट में पूरा कर नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। इससे पहले यह कीर्तिमान नागपुर की सृष्टि शर्मा के नाम था। उनका कीर्तिमान तीन किलोमीटर की दूरी का था। उनके इस कीर्तिमान को इंडिया बुक आफ रिकार्ड, एशिया बुक आफ रिकार्ड व रिकार्ड रिपब्लिक होल्डर आफ इंडिया रजिस्ट्री आफ वर्ल्ड रिकार्ड ने दर्ज किया।

पिता राजन वाघेला जो पेशे से प्लम्बर हैं, बताते हैं कि उनकी चारों बेटियां बेटों से कम नहीं हैं। वे कड़ी मेहनत करके तीनों को अंग्रेजी माध्यम में पढ़ा रहे हैं। खेल में निपुण होने के नाते बच्चों को खास पौष्टिक आहार भी देना पड़ता है। मेरी बेटियां जो भी करना चाहें करें, मैं कभी उनके रास्ते में नहीं आऊंगा।

छह साल की उम्र में जब लड़कियां अपने बचपन को मौज मस्ती के साथ जी रही होती हैं, उस अवस्था में करुणा वाघेला पांव में स्केट्स बांध, अपने हाथ–पांव को 180 डिग्री में फैलाकर, स्केट्स को गति देने में लगी हुई थीं। लिम्बो स्केटिंग में नया कीर्तिमान स्थापित करने के लिए वह स्केटिंग रिंक में दौड़ीं तो 29 मिनट और 12 सेकेण्ड के बाद जब स्केट्स के पहिए थमे तो करुणा ने एक नया कीर्तिमान बना डाला था। वह सात किलोमीटर लगातार चलीं और पूर्व में तीन किलोमीटर लिम्बो स्केटिंग के कीर्तिमान को ध्वस्त कर दिया। इस उपलब्धि के लिए उनका नाम इंडिया बुक आफ रिकार्ड, एशियाबुक आफ रिकार्ड व रिकार्ड रिपब्लिक होल्डर आफ इंडिया में दर्ज हो गया। करुणा अब स्पीड स्केटिंग में नया कीर्तिमान बनाना चाहती हैं।

आज की तारीख में एक जोड़ी स्केट्स की कीमत चार हजार रुपये है। तीन–तीन बेटियों को स्केट्स दिलवाना आसान नहीं था, अगर कोच श्रीकांत जी मदद न करते।

कोच श्रीकांत हेडालगेकर पिछले 20 वर्षों से बेलगाम रोलर स्केटिंग अकादमी चला रहे हैं और अब तक 45 हजार बच्चों को स्केटिंग में पारंगत कर चुके हैं। वह बताते हैं कि करुणा जब मेरे पास आयी थी तो चार साल की थी। मैंने पाया कि उसके शरीर में गजब की लचक है। लिम्बो स्केटिंग की पहली शर्त ही यही होती है। फिर क्या था हमने तय किया कि वह सबसे ज्यादा दूरी का लिम्बो स्केटिंग में कीर्तिमान बनायेगी। उसका कठिन प्रशिक्षण दो साल तक चला। उसने हमें निराश नहीं किया। हमने गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज होने के लिए सारे दस्तावेज भेजे हैं।

चार बहनों में तीसरे नम्बर की करुणा सबकी दुलारी हैं। सभी बहनें आपस में मिल–जुल कर अभ्यास करती हैं। पढ़ाई में भी तीनों बहनें अव्वल आती हैं। सबसे बड़ी बहन शिवानी 12 साल की हैं और स्केटिंग में राष्ट्रीय स्तर तक खेल चुकी हैं। उनसे छोटी श्रेया 10 साल की हैं और वे भी स्केटिंग में राज्य स्तर तक खेल चुकी हैं। चौथी बहन अभी ढाई साल की हैं और वे भी अपने नन्हे पांव में स्केट बांध कर अभी से अभ्यास करने लगी हैं।

मां सोनाली गृहस्थी सम्भालती हैं, बताती हैं कि उनके समाज में बेटियों को खेल में डालने पर काफी विरोध रहा, लेकिन जब बेटियों ने अपनी मेहनत और लगन से नाम कामकर हमारे सामज की नाक ऊंची की तो अब सब प्रशंसा करते नहीं थकते। हमने पहले ही सोच रखा था कि हमारे बेटा हो या बेटी, हम उन्हें खेल में जरूर डालेंगे। बेलगाम स्केटिंग के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। सो हमने भी उन्हें स्केटिंग में डाला। करुणा मेरे हाथ का बना मुर्गा बहुत स्वाद से खाती है। उसे मीठे में खीर बेहद पसंद है।

8 मई 2008 को जन्मीं करुणा डी.पी. गर्ल्स इंग्लिश मीडियम स्कूल बेलगाम में दूसरी कक्षा की छात्रा हैं। स्केटिंग के अलावा करुणा तैराकी में भी बेहतरीन प्रदर्शन करतीं हैं। करुणा बड़ी होकर आईएएस अधिकारी बनना चाहती हैं।

●

मेघाली नाम है उस भारत की बेटी का, जिसने मात्र सात साल की उम्र में देश दुनिया की इतनी सारी जानकारियां अपने नन्हे मस्तिष्क में समेट लीं कि उसे 'गूगल गर्ल' का खिताब मिल गया। यही नहीं, एक बार एक चैनल ने गूगल ब्वाय और उन्हें साथ–साथ बैठा कर उनका आईक्यू टेस्ट किया। गूगल गर्ल ने पूरे आत्मविश्वास के साथ सभी सवालों के जवाब देकर दर्शकों की भरपूर प्रशंसा बटोरी। गूगल गर्ल को कभी पढ़ाने की जरूरत नहीं पड़ी। वह स्वतः ही क्लास में अव्वल आ जाती हैं। बाबा रामदेव जी उसकी प्रतिभा से खासे प्रभावित हैं। डा. कलाम से प्रभावित मेघाली बड़ी होकर अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनकर देश का नाम रोशन करना चाहती हैं।

बेमिसाल "गूगल गर्ल" मेघाली

उम्र–नौ साल, विद्यार्थी – कक्षा चार की, रिपोर्ट कार्ड–100 फीसदी, नाम– मेघाली मालबिका स्वेन, उपब्लधि–वर्चुअल इंसाइक्लोपीडिया आफ वर्ल्ड फिजिकल जियोग्राफी और गूगल गर्ल का खिताब। मेघाली को दुनिया के 196 देशों के न सिर्फ राजधानियों के नाम कंठस्थ हैं बल्कि वहां की भाषा, मुद्रा, नदियां, जनसंख्या, क्षेत्रफल, उनकी दिशा व झंडे तक बखूबी याद हैं। जितनी तेजी से सवाल मेघाली तक आता है, उससे भी तेजी से जवाब हाजिर रहता है। सवाल पूछने वाला हैरान रह जाता है कि वह तो सवाल पूछने के लिए रात भर तैयारी करके आया था और मेघाली ने तो बिना देरी के फटाफट जवाब दे दिया।

उड़ीसा सरकार की प्रशासनिक सेवा में अधिकारी के पद पर तैनात पिता प्रफुल्ल कुमार बताते हैं कि मेघा (घर में इसी नाम से पुकारते हैं) जब मात्र चार साल की थी, तभी क्रिकेट वर्ल्ड कप खेला जा रहा था। तमाम देशों के खिलाड़ी आये थे और उनके बारे में हम सब चर्चा करते। अक्सर हम बातचीत में किसी खिलाड़ी के देश का नाम गलत बता देते तो वह तुरन्त टोक देती। हमें लगा कि उसका रुझान इस तरफ है। हमने उसे तमाम देशों के बारे में बताना शुरू किया और उसने भी जबर्दस्त तरीके से सबका नाम, मुद्राएं, झंडे, भाषा और जनसंख्या आदि याद कर लीं। ज्ञान का भण्डार यहीं तक सीमित नहीं रहा। सभी प्रमुख नदियों और उनके निकलने के स्थान, पर्वत, पठार, द्वीप, रेगिस्तान, समुद्र, महासागर, खाड़ियां, गल्फ देश, चैनल्स, सभी 196 देशों की सीमाएं किस देश से लगी हुई हैं, यहां तक की हर जानकारी उनकी उंगलियों पर रहती हैं। स्कूल में भी वह अक्सर सबको

चौंका देती हैं। बड़ी कक्षा के बच्चे भी जब किसी संशय में होते हैं तो सही उत्तर पाने के लिए इन्हीं के पास आते हैं। उनके पास आने की वजह यह है कि अक्सर नेट पर जानकारियां अधूरी व गलत भी होती हैं।

7 फरवरी 2006 को भुवनेश्वर में जन्मी मेघाली को चित्रकला का बेहद शौक है। वह रोज पांच से छह घंटे ड्राइंग बनाती हैं। वह किसी भी कहानी का ड्राइंग द्वारा सजीव चित्रण करने में महारथ रखती है। प्रकृति प्रेमी मेघाली ने बड़े प्यार से दस लव बड्र्स, तीन कबूतर, एक कुत्ते का बच्चा व तीन खरगोश पाले हैं। मां–बाप की इकलौती संतान मेघाली को खाने में आलू पराठा व पनीर कोरमा पसन्द है। मां नवनीता बताती हैं कि वह खाना खाने में चोर है। बहुत दौड़ती है, तब जाकर एक रोटी या पराठा खाती है। उसका वजन मात्र 19 किलो ही है। हमें अपनी बेटी से कोई शिकायत नहीं है। वह बेहद संवेदनशील व प्रतिभाशाली है लेकिन अगर वह ठीक से खाना खाने लगे तो हमें बेहद खुशी मिलेगी। एक बार जब उसे जी टीवी वालों ने 'गूगल ब्वाय' कौटिल्य के सापेक्ष पेश किया था तो वह समय सभी के लिए गौरव का था। मेघाली ने पूरे आत्मविश्वास के साथ सभी सवालों का सही उत्तर दिया और सबकी प्रशंसा बटोरी। मेघाली की तारीफ देश के सभी बड़े अखबारों ने दिल खोल कर की है। यही नहीं, देश के सभी नामचीन चैनलों पर अनेक बार उसे बुलाया गया, जिसमें गूगल गर्ल वर्सेज गूगल ब्वाय, इंडियाज गूगल गर्ल, गूगल गर्ल वर्सेज केबीसी विनर, गूगल गर्ल विद बाबा रामदेव, उड़िया चैनल में एसटीवी, नक्षत्र न्यूज, ओटीवी, ईटीवी दूरदर्शन आदि में छायी रहीं।

भुवनेश्वर के साईं इन्टरनेशनल में मेघाली के सभी प्रशंसक हैं। उन्हें स्कूल के सभी महत्वपूर्ण समारोहों में विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता है। सभी विषयों में अव्वल आने वाली मेघा को कभी होमवर्क के लिए नहीं टोका गया। वह एक महीने में ही अपना सारा पाठ्यक्रम खत्म कर देती हैं। कक्षा में वह अन्य विषयों की किताबें पढ़ती हैं। वे बड़ी होकर डा. कलाम की तरह वैज्ञानिक बनना चाहती हैं। खगोल व अंतरिक्ष में खास रुचि होने के कारण वह भारत का नाम स्पेस रिसर्च में ऊंचा करना चाहती हैं।

●

यह यकीन करना जरा मुश्किल है कि कोई बच्ची शतरंज की इतनी दीवानी हो सकती है कि वह रोज 8–9 घंटे अपना वक्त केवल शतरंज के साथ बिताती हो। सात साल की माही अमित दोशी इसका जीता जागता उदाहरण हैं। उन्हें शतरंज का नशा इतना ज्यादा है कि वे अक्सर अपना खाना खाना तक भूल जाती हैं। नतीजा यह है कि वे फीडे रेटिंग (स्टैंडर्ड) खिलाड़ी बन कर एशिया महाद्वीप में रैंकिंग हासिल कर चुकी हैं। गुजरात के पहले ग्रैंडमास्टर तेजस बाकरे व महिला ग्रैंडमास्टर स्वाति गाटे भी माही के खेल से खासे प्रभावित हैं और मानते हैं कि उसमें शतरंज के प्रति जो लगन है, वह उसे एक दिन बहुत ऊंचाई पर ले जाएगी। विश्वनाथ आनन्द को अपना रोल मॉडल मानने वाली माही विश्व विजेता बनने का ख्वाब पाले है।

शतरंज ही है माही की दुनिया

मोक्ष को प्रशिक्षक प्रदीप ब्रह्मभट्ट शतरंज के दांव–पेच सिखाते थे। मोक्ष की साढ़े तीन साल की बहन उन्हें रोज खेलते देखती। एक दिन मोक्ष को अपनी चाल समझ में नहीं आ रही थी। छोटी बहन ने एक चाल बतायी और मोक्ष और कोच दोनों चौंक गये। फिर क्या था। मोक्ष की छोटी बहन माही अमित दोशी के इशारे पर शतरंज बोर्ड पर हाथी, घोड़े और ऊंट दौड़–भाग करने लगे। लड़ाइयां लड़ी जातीं। सतर्क आंखों से सामने वाले की चालें समझ कर पैंतरेबाजी से हाथी व घोड़े कब्जे में किये जाते। शुरू–शुरू में मुकाबले जल्दी खत्म हो जाते लेकिन समय बीतता रहा। अनुभव बढ़ता गया, लड़ाइयां लम्बे समय तक चलतीं। कभी–कभी बिना किसी नतीजे के बाजी खत्म हो जाती।

नन्ही माही को अब मजा आने लगा था। वह अब आठ–नौ घंटे रोज शतरंज से जुड़ी रहतीं। सामने वाला भले ऊब कर बंद करने की फरमाइश करे लेकिन माही को तो जैसे खेलने का जुनून सवार रहता। समय आ गया था कि वह शतरंज प्रतियोगिताओं में अपने हाथ आजमाये। वही हुआ, जिसका सबको विश्वास था। माही अपनी आयु वर्ग में सभी को हराकर अपने से बड़े वर्ग को चुनौती देने लगीं। राष्ट्रीय प्रतियोगिता में माही ने अंडर 7 में 5वां स्थान प्राप्त किया। मात्र 6 साल की उम्र में फीडे रेटिंग (1180) खिलाड़ी बन गयीं। गुजरात राज्य शतरंज संघ के सचिव भी मानते हैं कि माही जैसा कोई शतरंज खिलाड़ी नहीं है, जिसने इतनी कम उम्र में एशिया महाद्वीप में रैंकिंग हासिल की हो। माही इसी साल खेली प्रतियोगिताओं में अंडर 9 वर्ग में राज्य

प्रतियोगिताओं में द्वितीय स्थान, स्कूल राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 12 वां स्थान तथा पुरी में हुए रेटिंग प्रतियोगिता में पहले स्थान पर रहीं। गुजरात के पहले ग्रैंडमास्टर तेजस बाकरे का भी कहना है कि माही का आज जो प्रदर्शन है, वह उसे बहुत ऊपर तक लेकर जाएगा। उसमें गजब की व्यूह रचना प्रतिभा व ऊर्जा है। महिला ग्रैंडमास्टर स्वाति गाटे भी मानती हैं कि माही एक दिन उनकी तरह ग्रैंडमास्टर बनेगी।

माही के कोच प्रदीप ब्रह्मभट्ट बताते हैं कि जब वे माही के भाई मोक्ष को प्रशिक्षित करते थे तो माही अपने गुड्डा–गुड़िया को छोड़ कर हमारे पास बैठ कर शतरंज की हर चाल को बहुत ध्यान से समझती। वह शतरंज बोर्ड पर गोटें एकदम सही तरीके से सजा लेती। पहले तो हमने ध्यान नहीं दिया लेकिन जब उसने खेलने की इच्छा जाहिर की तो हमने उसका इम्तहान लिया। उसने जिस अंदाज और कुशलता के साथ शतरंज खेला, वह हमें अचम्भित करने वाला था। हमने उनके पिता डा. अमित दोशी से बात की। और इस तरह माही का शतरंज का सफर शुरू हुआ। माही जिस तरह रोज 8–9 घंटे अभ्यास करती है, वह उसे एक दिन विश्व विजेता बनने में जरूर मदद करेगा।

पिता डा. अमित दोशी बताते हैं कि हम लोग आणन्द जिले के खम्बात में रहते हैं। मेरा क्लीनिक यहां होने से हम अपने फीडे रैंकिंग वाले बेटे के लिए अच्छे शतरंज प्रशिक्षक नहीं खोज पा रहे थे। हम सब अहमदाबाद आ गये और मैं रोज एक सौ दस किलोमीटर की दूरी नापता हूं। मुझे खुशी है कि मेरी बेटी अपनी उम्र से कहीं ज्यादा कामयाबी हासिल कर रही है। "माही की लगन और मेहनत काबिले तारीफ है। वह स्कूल और शतरंज के अलावा कुछ भी नहीं जानती।" बताती हैं मां मुक्ति, "शतरंज के जुनून में वह खाना तक भूल जाती है।

13 नवम्बर 2007 जन्मी माही डिलाइट पब्लिक स्कूल में पांचवें की छात्रा हैं। गुजरात स्पोर्ट अथारिटी द्वारा माही को हर माह साढ़े चार हजार रुपये स्कॉलरशिप मिलती है। माही को जब भी खाली वक्त मिलता है तो वे तारक मेहता का उल्टा चश्मा, बाल वीर और महाराणा प्रताप जैसे सीरियल देखना पसंद करती हैं। माही को सबसे ज्यादा मजा अपने बड़े भाई मोक्ष को मात देने में आता है। विश्वनाथ आनन्द को अपना रोल मॉडल मानने वाली माही विश्व विजेता बनना चाहती हैं।

●

मोइन के जज्बे को सलाम

मोइन तैराकी के राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर के अनेक अवार्ड अपनी झोली में डाल चुके हैं। मोइन न तो अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं और न ही अपने हाथों से कुछ उठा सकते हैं। उनके शरीर में शून्य कैल्शियम होने के कारण अब तक 200 से ज्यादा फैक्चर हो चुके हैं। ऑस्टियोजेनेसिस इम्परफेक्टा नामक बीमारी से ग्रस्त हैं मोइन। उनकी लम्बाई मात्र सोलह इंच और वजन सोलह किलो है। उन्हें किसी स्कूल ने दाखिला भी नहीं दिया। उनकी मां ने उन्हें घर में ही पढ़ा–लिखा कर काबिल बना दिया है। वे कम्प्यूटर के उस्ताद हैं और आगे चलकर सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहते हैं।

मोइन मुश्ताक जुनैदी की कहानी किसी परिकथा से कम नहीं है। आज भले ही उन्हें सारी दुनिया जानती है, लेकिन एक वक्त ऐसा भी था, जब वे कमजोर हाथ–पांव की वजह से न तो अपने पैरों पर खड़े हो सकते थे और न ही कोई सामान उठा सकते थे। मोइन ने अंतरराष्ट्रीय विश्व खेल प्रतियोगिता में अमेरिका में तैराकी में बैक स्ट्रोक और फ्री स्टाइल में स्वर्ण पदक जीत कर और इंग्लैंड में हुई अंतरराष्ट्रीय विश्व खेल प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन कर देश का नाम ऊंचा किया। इससे पहले वे राष्ट्रीय खेल व राज्य स्तरीय अनेक सम्मान अपने नाम कर चुके हैं। इस उपलब्धियों के लिए उन्हें इंडिया बुक आफ रिकाड्र्स, इंद्रधनुष सम्मान, बीआर मोनटेज पुरस्कार, सागर प्रशस्तिपत्र आदि मिले व जीटीवी पर आयोजित "शाबाश" रियलिटी शो में उन्होंने अपने हुनर का जलवा बिखेरा।

मां कौसर जुनैदी बताती हैं कि जब मोइन पैदा हुए तो नार्मल बच्चे की तरह ही थे लेकिन नौ माह में इनके शरीर में अजीबोगरीब परिवर्तन होने लगे। कोई हाथ भी लगाता तो हड्डियां चूर–चूर हो जातीं। शरीर में शून्य कैल्शियम होने के कारण हड्डियां क्षण भंगुर हो गयी थीं। मोइन चलने–फिरने में लाचार हो गये। डाक्टरों ने इसे एक दुर्लभ आनुवंशिक बीमारी बताया। डाक्टरों ने बताया कि हजार में से किसी एक बच्चे को ऑस्टियोजेनेसिस इम्परफेक्टा या ब्राइटिल बोन सिंड्रोम नाम की ये बीमारी होती है। हम कई डाक्टरों से मिले। सभी तरह की पैथी आजमायी, लेकिन नौ साल तक कोई विशेष लाभ नहीं मिला। अंत में हमें पता चला कि इसका कोई इलाज नहीं है। हमने डाक्टर और दवा दोनों से नाता तोड़ लिया और इसका नाम किसी स्कूल में

लिखाने का मन बनाया। हमें दूसरा झटका तब लगा, जब विकलांगों के स्कूल ने भी इस नाजुक बच्चे को दाखिला देने से मना कर दिया। फिर मैंने फैसला किया कि मैं इसे पढ़ाऊंगी–लिखाऊंगी। मैंने पाया कि इसके हाथ पांव जरूर कमजोर थे लेकिन इसका दिमाग बहुत ही तेज है। इसे जो भी सिखाया जाता, यह तुरन्त सीख लेता। उर्दू, अरबी, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं पर इसकी मजबूत पकड़ हो गयी। इसका आईक्यू भी अन्य बच्चों से ज्यादा था। फिर मैंने इसे कम्प्यूटर के बारे में बताना शुरू किया। कम्प्यूटर में भी वह जल्द ही माहिर हो गया। आज वह कम्प्यूटर पर हर तरह के खेल खेलता है।

मोइन के जीवन में नया मोड़ तब आया, जब उमेश कलघटगी नाम के कोच ने हमसे सम्पर्क किया और कहा कि वे उसे तैराकी में लाना चाहते हैं। ये हमारे लिए एकदम मुश्किल में डालने वाला क्षण था। मैंने अपने पति के साथ मशविरा किया। अन्त में हमने सोचा कि अगर ये तैराकी में नाम पैदा कर सका तो इसका जीवन सार्थक हो जाएगा। उमेश सर ऐसे ही विकलांग बच्चों को तैराकी सिखाते थे। उन्होंने विश्वास दिलाया कि आपके बच्चे को कोई नुकसान नहीं होगा और मात्र इक्कीस दिनों में यह तैरने लगेगा। उनकी बात एकदम सच निकली। केवल पंद्रहवें दिनों में मोइन बिना किसी की सहायता के तैरने लगा। जनवरी 2009 में मोइन ने तैराकी के लिए कदम रखा और इसी साल कोलकाता में आयोजित राष्ट्रीय पैरालिम्पिक्स तैराकी प्रतियोगिता में 50 मीटर फ्रीस्टाइल व बैकस्ट्रोक प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीता। मोइन एक घंटे से ज्यादा तैराकी करते हैं तो उनके दोनों पैर जम जाते हैं। लेकिन वे इससे घबराते नहीं हैं।

मोइन के कोच उमेश कलघटगी बताते हैं कि मोइन के माता–पिता एक बार सीएम साहब से मिलने आये। वे सीएम से तो नहीं मिल पाये, लेकिन मुझसे मुलाकात हो गयी। तब मैंने उन्हें मोइन को तैराकी सिखाने पर जोर दिया। मोइन तब ग्यारह साल के थे। जिस बच्चे को छूने मात्र से उसकी हड्डियां टुकड़े–टुकड़े हो जाती हों ऐसे बच्चे को तैराकी सिखाना अपने आप में चैलेंज था। लेकिन हमारी मेहनत रंग लायी। अब तो मोइन अच्छे तैराकों की बराबरी करने लगा है। मोइन अब अटठारह साल हो गये हैं और उनकी लम्बाई सोलह इंच व वजन सोलह किलो है। एशियन गेम्स में मोइन इसलिए नहीं जा पाये क्योंकि इनसे कम्पटीशन करने के लिए कोई भी बच्चा न तो उनकी लम्बाई का मिला और न उम्र का।

20 नम्बर 1998 को बेलगाम (कर्नाटक) में जन्मे मोइन की एक बड़ी बहन व छोटे जुड़वां भाई हैं। मांसाहार के शौकीन मोइन को मां के हाथ का बना चिकन फ्राई बेहद पसंद है। मोइन खाली समय में कैरम, फिल्में और लैपटॉप पर खेल

खेलते हैं। शेरो–शायरी लिखने का शौक रखने वाले मोइन पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को अपना रोल मॉडल मानते हैं। मोइन शाहरुख खान के प्रशंसक हैं और अमिताभ बच्चन व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलने के इच्छुक हैं। मोइन बताते हैं कि उनके पास अनेक डाक्टरों व हिकमतों के फोन आते हैं कि वे उनके पैरों व हाथों को बिल्कुल सीधा कर देंगे लेकिन मैं उन्हें मना कर देता हूं कि मैं ऊपर वाले के दिये इसी चोले में खुश हूं। मोइन एशियन गेम्स में मौका न मिल पाने से थोड़ा मायूस तो हुए लेकिन निराश नहीं हैं। मोइन बड़े होकर साफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहते हैं।

●

निशान्त ने दो साल पहले जब शहीदों की याद में 180 डिग्री पर दोनों पैर फैला कर लिम्बो स्केटिंग द्वारा दो किलोमीटर की यात्रा पूरी की, तो वहां मौजूद सभी दर्शकों ने खड़े होकर उसका अभिवादन किया। उसका नाम वर्ल्ड रिकार्ड एकेडमी में आया और फिर लिम्का बुक आफ रिकार्ड्स व इंडिया बुक आफ रिकार्ड्स में भी दर्ज हुआ।

निशान्त यहीं नहीं रुके। उन्होंने बेलगाम से दिल्ली तक रोलर स्केटिंग द्वारा 2200 किलोमीटर की रैली में हिस्सा लिया और पन्द्रह दिन में यात्रा पूरी की। उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, जब इस कामयाबी के लिए राष्ट्रपति ने उन्हें आशीर्वाद दिया। निशान्त ने कराटे में हाथ आजमाया तो वे राष्ट्रीय स्तर तक पहुचे और योगासनों में अंतरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की।

स्केटिंग का नया नाम 'निशान्त'

के.एल.ई. इंटरनेशनल स्कूल में कक्षा 8 के छात्र निशान्त सिंह लिम्बो स्केटिंग में अपना अलग ही मुकाम बनाने में तब कामयाब हुए, जब उन्होंने अपने पैरों को 180 डिग्री पर फैलाकर (स्ट्रेच) स्केटिंग कर, 2 किलोमीटर की दूरी को 48 मिनट 35 सेकेण्ड और 80 माइक्रो सेकेण्ड में पूरी की। इस उपलब्धि के लिए उनका नाम वर्ल्ड रिकार्ड एकेडमी में दर्ज हो गया। यह रिकार्ड निशान्त ने 28 मई 2012 के दिन बेलगाम महाराष्ट्र के लिंगराज कालेज कैम्पस के.एल.ई. सोसाइटीज स्केटिंग रिंक में शहीद जवानों की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में बनाया। सेना के मेजर जनरल चंद्रशेखरन ने इस रिकार्ड के लिए उन्हें ट्राफी प्रदान की।

28 मई, 2012 को लिंगराज कालेज कैम्पस के के.एल.ई. सोसायटीज स्केटिंग रिंक के आसपास तमाम स्कूल व कालेज के छात्र, शिक्षक, खिलाड़ी व सेना के जवान निशान्त की हौसला अफजाई कर रहे थे। वे लगातार नारे लगा रहे थे। निशान्त को लग रहा था कि अब कोई भी ताकत उसे रिकार्ड बनाने से नहीं रोक सकती। निशान्त ने देश के अमर शहीदों को याद किया और सुबह 10:10 मिनट पर अपना अभियान शुरू किया। उन्होंने अपने पैर 180 डिग्री में फैला कर दोनों हाथों से शरीर को धकेलना करना शुरू किया। पैरों में बंधे लाइन स्केट्स अपनी गति से आगे बढ़े तो रुकने का नाम नहीं था। न कोई बाधा, न कोई रुकावट। 48 मिनट 35 सेकेण्ड और 80 माइक्रो सेकेण्ड में यात्रा पूरी कर एक नया रिकार्ड सेट होने पर निशान्त के पिता सोनू सिंह व दादा तारकेश्वर सिंह की आंखें भर आयीं। माता कंचन देवी के कंठ

ही सूख गये। उनके गले से आवाज ही नहीं निकल रही थी। इसके बाद तो जैसे पुरस्कारों की झड़ी सी लग गयी। लिम्का बुक आफ रिकाड्र्स, इंडिया बुक आफ रिकाड्र्स के अलावा अनेक पदक उनकी झोली में आ गये। योग और कराटे में भी निशान्त ने हाथ आजमाये। अंतरराष्ट्रीय योग कम्पटीशन में स्वर्ण पदक, राष्ट्रीय स्तरीय कराटे प्रतियोगिता में तृतीय स्थान, इंद्रधनुष अवार्ड के अलावा कई बार स्वर्ण व रजत सम्मान से नवाजे गये।

दादा तारकेश्वर सिंह का कहना था कि मैंने भी सेना में रहकर देश सेवा की, लेकिन जितना मान मेरे पोते ने मुझे दिलाया, उतना आज तक नहीं मिला। मेरे पास शब्द नहीं है अपने निशान्त की तारीफ में। पिता सोनू सिंह बताते हैं, "15 अगस्त 2012 को बेलगाम से दिल्ली राष्ट्रपति भवन तक की 2200 किलोमीटर की रैली 30 अगस्त 2012 को पूरी कर उसने एक नया कीर्तिमान बनाया। इस कामयाबी पर राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने उसे आशीर्वाद दिया। यह एक मैराथन अभियान था, जिसमें निशान्त को रोज 125 से 150 किलोमीटर स्केटिंग करनी होती थी।"

मां कंचन देवी को अपने बेटे की कामयाबी की बेहद खुशी है। वे कहती हैं, "आज मेरा इकलौता बेटा जिस मुकाम पर पहुंचा है, उसमें उसके गुरु और परिवार का बहुत बड़ा सहयोग है। उसने कराटे व योग में भी महारथ हासिल की है। मिठाई खाने का बहुत शौकीन है। उसे मेरे हाथ की बनी खीर, सेवइयां और पनीर के व्यंजन बहुत पसंद हैं।" बेलगाम रोलर स्केटिंग अकादमी के कोच सूर्यकान्त हिंडालगेकर कहते हैं कि निशान्त हमेशा से यही चाहता था कि वह कुछ अलग करे। निशान्त में सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह हार नहीं मानता। जो ठान लेता है, कर दिखाता है। उसका आत्मविश्वास काफी ऊंचा है।

2 जून, 2003 को जन्मे निशान्त का कहना है कि उम्मीद और स्वयं पर भरोसा कभी नहीं छोड़ना चाहिए। गुरु के बताये मार्ग का सच्चाई से पालन करने वाला ही मंजिल तक पहुंचता है। निशान्त चाहते हैं कि वे "स्ट्रेच स्केटिंग" में चार किलोमीटर का कीर्तिमान बनायें, जिसके लिए वे कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वैसे वे पायलट बनने का सपना भी संजोये हुए हैं।

●

एक तीन साल दो माह और पंद्रह दिन की नन्ही सी बच्ची को अगर आप चेस के दांव–पेंच और शह–मात देते देखते तो शायद आपको अपनी आंखों पर भरोसा ही नहीं होता। यदि आपको यह बताया जाए कि वह राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता में तीसरे स्थान पर रही है तो शायद आप सामने वाले से नाराज होकर झगड़ा ही कर बैठें। लेकिन यह कोई कालपनिक कथा नहीं, . . . सचमुच की परी कथा है।

जी हां, यह कथा बिहार की परी सिन्हा की कथा है। परी ने बोधगया में प्रथम लार्ड बुद्धा अंतरराष्ट्रीय शतरंज रेटिंग टूर्नामेंट में पचास साल के एक अनुभवी खिलाड़ी को मात दे दी जो परी को नासमझ समझ रहे थे। परी ने उनकी पेशानी पर बल ला दिये थे और 2.5 अंक भी अर्जित कर लिये थे।

"लिटिल ग्रैंड मास्टर" परी सिन्हा

तीन साल दो माह और मात्र पंद्रह दिन की कोई प्यारी सी मासूम बच्ची शतरंज बोर्ड पर बिछी मोहरों को आत्मविश्वास के साथ आगे–पीछे कर रही हो तो आप कतई विश्वास नहीं करेंगे की यह दुनिया की सबसे छोटी शतरंज खिलाड़ी है। अगर आपको पता चले कि यह बच्ची राष्ट्रीय महिला चेस प्रतियोगिता में अपने ग्रुप में तीसरे स्थान पर रही है तो सम्भव है कि आप अपने दांत तले उंगली दबाने के बजाए काट ही लें। जी हां, मिलिए इस नन्ही परी से। परी सिन्हा आज पूरे बिहार की शान बन चुकी हैं। पिछले दिनों बोध गया में हुई प्रथम लार्ड बुद्धा फीडे अन्तरराष्ट्रीय रेटिंग चेस प्रतियोगिता में आयी इस नन्ही खिलाड़ी को सभी कौतूहल से देख रहे थे। अन्तरराष्ट्रीय ओपेन रेटिंग के लिए आपके सामने किसी भी उम्र का खिलाड़ी आ सकता है। परी के सामने भी पचास साल के एक माहिर खिलाड़ी थे। पहले तो परी ने खेलने से ही इंकार कर दिया लेकिन पिता जेपी सिन्हा के समझाने पर वह समय से पंद्रह मिनट देर से खेलने को तैयार हुई। सभी सोच रहे थे कि वह एक भी अंक अर्जित नहीं कर पायेगी लेकिन आश्चर्यजनक तरीके से परी ने दस में से दो दशमलव पांच अंक हासिल कर सबको आश्चर्य में डाल दिया।

29 जनवरी 2010 को जन्मी परी पटना के हेलो किड लिटिल चैम्प स्कूल में कक्षा एलकेजी की छात्रा हैं। जिस उम्र में बच्चियां गुड्डे–गुड़ियों से खेलती हैं, परी माथे पर हाथ धरे, हाथी–घोड़ों–ऊंट को अपनी नन्ही उंगलियों से चलना सिखाती हैं। कभी शतरंज बोर्ड पर उन्हें दौड़ाती हैं। राजा–रानी की कथा सुनने की उम्र में परी शतरंज बोर्ड पर राजा–रानी को महल

में सुरक्षित रखने की तरकीब निकाल रही होती हैं। परी के चाचाजी वेद प्रकाश सिन्हा राष्ट्रीय शतरंज खिलाड़ी रहे हैं। परी की बुआजी रंजीता करन भी बिहार राज्य महिला शतरंज विजेता रही हैं। पैदाइश से डीएनए में मिले चेस के शौक का ही कमाल है कि परी इतनी छोटी उम्र में अपने निराले दांव से अपने से काफी बड़ी उम्र के अनुभवी खिलाड़ियों की पेशानी पर पसीने की बूंदें ला देती हैं। नाजों में पली परी को अपनी मां के हाथ की बनी आलू की रसेदार सब्जी और रोटी पसंद है। नन्ही परी के नाम से घर में पुकारी जाने वाली परी को शैतानी करना, चित्रकला, कार्टून चैनल में डोरेमॉन, छोटा भीम और मोटू–पतलू भाते हैं।

विज्ञापन एजेंसी चलाने वाले पिता जेपी सिन्हा बताते हैं कि उनका परिवार 'शतरंजियों का परिवार' के नाम से जाना जाता है। बचपन में ही हम सब को परी शतरंज खेलते देखती आ रही है। धीरे–धीरे इसका भी रुझान पैदा हो गया। इसमें अगली चाल का गणित सोचने की सलाहियत अपने आप ही पैदा होने लगी। हम उसे कम उम्र से स्पर्धाओं में डालना चाहते थे। किशनगढ़ में हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हम इसे परीक्षण के रूप में ले गये, जहाँ परी ने अपने से काफी बड़ी लड़की को हरा कर तीसरा स्थान हासिल कर लिया। प्रशिक्षक शुभेन्दु चक्रवर्ती कहते हैं कि परी में सीखने की गजब की ललक है। वह बहुत जल्दी सामने वाले की अगली चाल को समझ जाती है और अपनी चाल से उसे परेशान करने की कोशिश करती है, जिससे वह गलती करे और उसे उसका लाभ मिल जाए।

मां मंजू सिन्हा कहती हैं कि बेटी को शतरंज में सहयोगी की जरूरत होती थी इसलिए मैंने भी खेलना सीखा। अब वह मुझे बाकायदा हरा देती है। मुझे उससे हारना काफी आनन्द देता है। हम उसे कभी शतरंज खेलने के लिए दबाव नहीं डालते हैं। वह पढ़ाई में भी अव्वल आती है। कहते हैं कि शतरंज से बच्चे का दिमाग काफी तेज हो जाता है। यह दिमाग तेज करने का सबसे अच्छा उपाय भी है। परी को वर्ल्ड अमेजिंग रिकार्ड, बिहार गौरव गाथा पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। परी आगे चल कर क्या बनना चाहती हैं, अभी कहना जरा मुश्किल है।

●

प्रियांशु मिट्टी के जादूगर हैं। वह मिट्टी को छू भर देते हैं और वह बोलने लगती है। तारीफ की बात यह है कि अपनी ही धुन के पक्के प्रियांशु ने किसी से स्टोनवेयर सिरेमिक स्कल्पचर का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है लेकिन वह बच्चों को स्कल्पचर की बारीकियां सिखाने स्कूलों में बुलाये जाते हैं। पढ़ाई में, फुटबाल में व गिटार बजाने में माहिर प्रियांशु हमेशा कुछ अलग हटकर करने के आदी रहे हैं। वह जब सिरेमिक में जूता बनाने लगे तो उनके इस फन को देश में ही नहीं बल्कि विदेशों से प्रशंसा मिलने लगी। आज भी अक्सर मेल मिलते हैं, जिनमें पूछा जाता है कि कोई नया डिजाइन तैयार हुआ क्या! अबकी हमारी बारी है। हमें ही मिलना चाहिए।

मिट्टी में जान डालते प्रियांशु

प्रियांशु ने महज 14 साल की उम्र में मूर्तिकला व स्टोनवेयर सेरेमिक की एक से बढ़कर एक कलाकृतियां बना कर देश में ही नहीं विदेशों में अपनी कला की धाक जमा दी है। प्रियांशु ने किसी से प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया लेकिन वह बच्चों को स्कल्पचर की ट्रेनिंग देने के लिए निरन्तर बुलाये जाते हैं। वह अब तक कई एकल व दर्जन भर ग्रुप शो और छोटे–बड़े अनेक पुरस्कार अपने खाते में डाल चुके हैं। इनमें अमेरिका के अरकंसास में आयोजित स्प्रिंग क्रिक फेस्टीवल में 'बेस्ट स्टूडेंट स्कल्पचर अवार्ड' व पोगो अमेजिंग किड अवार्ड–2013 उनके लिए काफी महत्व रखते हैं।

दीवारों पर बनने वाली कलाकृतियों (म्यूरल) में माहिर मां कविता ठाकुर बताती हैं कि प्रियांशु जब मात्र पांच साल के थे, तभी से मिट्टी से खेलने लगे थे। प्रियांशु ने जब पहली बार गणेश जी बनाये तो मुझे लगा कि इसको सही शिक्षा और मार्गदर्शन की जरूरत है। घर, किचेन और बाहर वह जो कुछ भी देखता, अपनी तरह से गढ़ देता। तभी मैंने और मेरे चित्रकार पति प्रमोद ठाकुर ने मूर्तिकार लक्ष्मा गौड़ का काम इसको दिखाया। उनसे वह बहुत प्रभावित हुआ। सिरेमिस्ट डॉमनिक एलायंस का राकू फायरिंग वर्क भी देख कर उसे काफी प्रेरणा मिली। एक दिन मार्केट में घूमते हुए उसने जूता देखा। उसे वह देर तक देखता रहा। बाद में उसने स्टोनवेयर चीनी मिट्टी में तरह–तरह के जूते बनाये जो उसकी पहचान बन गये। अब विदेशों से भी उसके जूतों के खरीदारों की मांग आती रहती है। उसके बनाये जूतों के संग्रहकर्ता बच्चे ही नहीं बल्कि दुनिया के तमाम देशों के बड़े

लोग भी हैं। अभी वह किसानों और उनके परिवार पर काम कर रहे हैं जो विदेशों में बहुत पसंद किया जा रहा है। उनकी चित्रकला और रेखांकन भी अच्छा है। वह जो भी बनाते हैं, पूरे मन और दिल से बनाते हैं।

मुम्बई के सेंट एनस हाईस्कूल के कक्षा 11 के छात्र प्रियांशु क्ले, मिट्टी व स्टोनवेयर चीनी मिट्टी के साथ प्रयोग तक सीमित नहीं रहे। वे चिकनी मिट्टी, पेपर मैसी, लकड़ी, ब्रॉंज व फाइबर से भी अनेक आकृतियां उकेरने लगे जैसे बच्चा, जानवर, राजा, रानी आदि बना कर सबको आश्चर्य में डाल देते। प्रियांशु की प्रयोगधर्मिता यहीं तक बंध कर नहीं रही बल्कि अपने पर्यावरण प्रेम के अनुरूप प्रकृति में पाये जाने वाली वस्तएं यथा जूट, लेदर, पत्तियों आदि का इस्तेमाल कर अपनी कलाकृति में जान डाल देते। ग्लेज रंगों व राकू फायरिंग का उपयोग कर जो कलाकृति तैयार होतीं, उनमें इन्द्रधनुष का सा प्रभाव आ जाता। कभी वह सोने जैसी दिखतीं तो कभी चमकीली धातु जैसी दिखने लगतीं। यही कारण था कि नेह डिग्री सेंटर आर्ट गैलरी में जब पहली बार प्रियांशु के काम की प्रदर्शनी लगी तभी से उसे प्रायोजक मिलने लगे। इसके बाद काला घोड़ा आर्ट फेस्टिवल–2010–2012, पूना में लवासा आर्ट फेस्टिवल–2010, प्रकृति आर्ट गैलरी (चिन्नई) व आर्टिस्ट सेंटर आर्ट गैलरियों में उनका काम प्रदर्शित हुआ और सभी ने दिल खोलकर तारीफ की। प्रियांशु इतनी कम उम्र में ही कई कला प्रदर्शनियों व कार्यशाला में मूर्तिकला के बारे में व्याख्यान भी देते रहे हैं। पिता प्रमोद ठाकुर कहते हैं कि जब वह बचपन में हमारी कूची और रंग लेकर कुछ आड़ी–तिरछी लकीरें खींचा करता था तो उन रेखाओं में काफी गति व लय हुआ करती थी। वह जो भी बनाता, उसमें सोच व रचनात्मकता होती थी। अगर हम कुछ कहते कि यह बनाओ तो वह कुछ दूसरा ही बना लाता। वह जो भी बनाता है, अपनी खुशी व मर्जी से ही बनाता है।

14 अगस्त 1999 को जन्मे प्रियांशु को मां के हाथ का बना चायनीज व चिकन लॉलीपॉप बहुत पसंद है। सादगी से रहना और डिस्कवरी व हिस्ट्री चैनल देखना उनकी पसंद में शामिल है। फुटबाल के शौकीन प्रियांशु गिटार बजाने में भी महारथ रखते हैं। बड़े भाई आटोमोबाइल इंजीनियरिंग पढ़ने चिन्नई गये हुए हैं। प्रियांशु उन्हें बहुत याद करते हैं। कहते हैं कि भाई और चीनी मिट्टी के साथ खेलने में मुझे बेहद आनन्द आता है। मैं अपने अंदर की खुशी, दुख, अह्लाद, उत्साह, जिजीविषा, एकात्मकता व मानवीय संवेदनाओं को मनमुताबिक मूर्ति में उकेर सकता हूं, उनमें रंग भर सकता हूं।

●

कुशलिया का 'आर्यभट्ट' राशिद

गाजियाबाद की तहसील मसूरी के गांव कुशलिया में रहने वाले राशिद बेग को आज गांव ही नहीं, जिले का बच्चा–बच्चा बाल 'आर्यभट्ट' के नाम से जानता है। जब वे मात्र छह साल के थे तो अपने पिता का कैलकुलेटर लेकर बोले कि कोई भी सवाल आप इस पर दर्ज करो, देखो कौन जल्दी बताता है। पिता जी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब राशिद ने कैलकुलेटर को पीछे छोड़ दिया।

उनकी प्रतिभा यहीं तक सीमित नहीं रही। देश दुनिया के किसी भी सामान्य ज्ञान के प्रश्न का उत्तर झट से देकर वे सबको निरुत्तर कर देते हैं। राशिद की इसी प्रतिभा का सम्मान करते हुए 2013 में उन्हें लिमका बुक आफ रिकाड्र्स में स्थान मिला।

गाजियाबाद में मसूरी तहसील में एक गांव है कुशलिया। इस गांव की पहचान यही है कि यहां बाल 'आर्यभट्ट' राशिद बेग रहते हैं। उम्र कोई तेरह साल। कामयाबी ऐसी कि अच्छे–अच्छे उसके सामने बच्चे लगें। कोई भी कठिन से कठिन सवाल पूछ लो, न कागज न कैलकुलेटर . . . पलक झपकते सही उत्तर देकर सबको निरुत्तर कर देते हैं। यही नहीं, किसी भी राज्य की राजधानी, मुख्यमंत्री, किसी भी देश की राजधानी व उनकी मुद्राएं भी राशिद पलक झपकते बता देते हैं। उनकी इसी खूबी के लिए उन्हें 2013 में लिमका बुक आफ रिकाड्र्स में स्थान मिला। पूर्व राज्यपाल वीके जोशी ने राजभवन में बुला कर सम्मानित किया और पुरस्कार स्वरूप एक कम्प्यूटर भी दिया। गृहमंत्री राजनाथ सिंह, राहुल गांधी, सचिन तेन्दुलकर, ऐश्वर्या राय, जनरल वीके सिंह भी राशिद की इस काबिलियत के कायल हैं और उन्होंने सम्मान व प्रशस्ति पत्र दिये। सचिन तेन्दुलकर ने तो यश राज स्टूडियो, मुम्बई में अपना हस्ताक्षरयुक्त बल्ला देकर सम्मानित किया। प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भी सिर पर हाथ रखा और भविष्य में सभी तरह की मदद का आश्वासन दिया।

3 सितम्बर, 2002 में जन्मे राशिद गाजियाबाद के डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल में कक्षा आठ के छात्र हैं। इस महंगे इंग्लिश माध्यम स्कूल में एडमीशन भी उनकी प्रतिभा ने दिलवाया है। दिल्ली का एक एनजीओ अभी तक उनकी फीस की जिम्मेदारी उठाये था। पढ़ाई में अव्वल आते हैं। गांव के स्कूल में पढ़े होने के कारण अंग्रेजी में थोड़े कम नम्बर मिलते हैं।

राशिद के पिता कज्जाफी बेग की माली हालत

खराब होने के कारण वे अपने बच्चों राशिद और बेटी हिफ्जा का दाखिला अच्छे स्कूल में नहीं करा सके। वे गांव के एक स्कूल में जाने लगे। स्कूल के टीचर राशिद की आश्चर्यजनक प्रतिभा देखकर दांतों तले उंगली दबा लेते। कज्जाफी बेग बताते हैं कि वे मुझसे कहते कि राशिद को शहर के किसी अच्छे स्कूल में पढ़ाओ। यहां तो इसकी प्रतिभा नष्ट हो जाएगी। बरसात में मेरा जर्जर मकान टपकता, जिससे बच्चों की कापी किताब भीग जातीं और उन्हें स्कूल में मार पड़ती। हमारे टोले में लड़कियों और लड़कों को जमात पांच तक ही पढ़ाते हैं। मैं भी इतना ही पढ़ा हूं। मेरे ऊपर दबाव डालते हैं कि लड़के व लड़की को ज्यादा मत पढ़ाओ। मेरे पास केवल साढ़े चार बीघा खेती है। उसी से किसी तरह घर का खर्च चलाते हैं। अब तो दिल्ली के एनजीओ ने जो बच्चों की महंगी पढ़ाई का खर्च उठाती थी, मदद जारी रखने से मना कर दिया है। मुख्यमंत्री और गृहमंत्री जी ने भी आश्वासन दिया था कि बच्चों की पढ़ाई रुकने नहीं देंगे, अब उनसे फिर गुजारिश करेंगे।

मां रजिया बेग का कहना है कि दो बच्चों के बाद और परिवार न बढ़ाने का संकल्प लेने पर भले ही हमारे टोले वालों ने हमारा बहिष्कार कर दिया हो और बच्चों को ज्यादा न पढ़ाने का दबाव बनाया हो, हम अपने कौल से पीछे नहीं हटेंगे। हम सब कुछ बेंच कर उन्हें उनकी मंजिल तक जरूर पहुंचायेंगे। छोले–भटूरे के शौकीन शुद्ध शाकाहारी राशिद को ताइक्वांडो सीखना अच्छा लगता है। उन्हें जंगलों में घूमने का भी शौक है। कहते हैं इससे सेहत अच्छी रहती है। राशिद बड़े होकर आईएएस अधिकारी बनना चाहते हैं। बताते हैं कि एक बार मैं डीएम साहब से मिला था, तभी सोच लिया था कि अगर बनना है तो आई.ए.एस. ही बनेंगे।

●

तीन बार दर्ज हुआ गिनीज बुक में नाम

रोलर स्केटिंग में तीन बार गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करा चुके रोहन गरीबी के आलम में पले लेकिन कभी जीवन की कठिनाइयों से हार नहीं मानी। रोहन जब स्केटिंग सीखना चाहते थे तो उनके पिताजी के पास इतने पैसे नहीं होते थे कि वे स्केट्स खरीद कर दे सकें। रोहन अपने दोस्तों से स्केट्स उधार मांग कर सीखा करते थे। आज भी वे बेहद तंगहाली में जीवन बिता रहे हैं। रोहन अब तीन नये गिनीज वर्ल्ड को तोड़ने की तैयारी कर रहे हैं।

फरवरी 2011 में मुम्बई में रोहन 21 कारों के नीचे से निकल कर नया रिकार्ड बनाने वाले थे। पैरों पर स्केट बांध कर तैयार थे। गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड के अधिकारी की स्टार्ट की आवाज कान में पड़ते ही चारों तरफ तालियों की गड़गड़ाहट गूंजी उठी। रोहन ने अपने कोच सूर्यकांत हिंडालगेकर और अपने पिता अजित कोंकणे की तरफ हाथ हिलाया और फिर पूरे उत्साह के साथ कदम बढ़ा दिये। अब जो कुछ वहां घट गया था, वह किसी अचम्भे से कम नहीं था। रोहन 9 इंच की ऊंचाई से कारों के नीचे से निकल गये थे। उन्होंने नया विश्व कीर्तिमान बना दिया था। उनका नाम गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड के लिए ओके हो चुका था।

चारों तरफ उल्लास व खुशी का शोर मच गया। पिता की आंखों से खुशी के आंसू बह निकले। रोहन रुके नहीं। 2012 में इटली में फिर एक बार उसकी परीक्षा थी। वह दूसरी बार गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज होने को तैयार थे। 24 सेंटीमीटर की ऊंचाई पर लगे दस बार के नीचे से उन्हें निकलना था। इस बार भी वह अपना नाम दर्ज करने में सफल रहे। रोहन को तो जैसे गिनीज बुक में नाम दर्ज कराने की धुन सी लग गयी थी। अब वह तीसरी बार तैयार थे। जुलाई 2013 में टर्की के इस्ताम्बूल में उनका कारनामा देखने के लिए अपार भीड़ जुट गयी थी। रोहन आत्मविश्वास से लबरेज जैसे ही पहियों पर बिजली की सी फूर्ती से दौड़े, तो दुनिया के सबसे पहले विजयी बच्चे बन गये। उन्होंने मात्र 4.1.6 सेकेन्ड में दस 'बार' (बाधाएं) पार कर लीं। ये उनका तीसरा गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड था।

रोहन भारत के पहले बाल खिलाड़ी बनें, जिन्होंने रोलर स्केटिंग में तीन बार अपना नाम तीन बार गिनीज बुक आफ रिकार्ड में दर्ज करवा लिया था। रोहन

का नाम दुनिया के दस हुनरमंद रोलर स्केटर्स में दर्ज हो चुका है। रोहन ने पिछले साल जर्मनी के लुडिसबर्ग में एक टीवी शो के लिए अपने हुनर का प्रदर्शन किया था।

इलेक्ट्रिक की छोटी सी दुकान चलाने वाले रोहन के पिता अजित कोंकणे को अपने बेटे को विदेश भेजना आसान नहीं था लेकिन बेलगाम की जनता ने पूरा सहयोग किया और हर मौके पर उनका हौसला बढ़ाया। अजित कहते हैं कि इस बच्चे को आगे बढ़ाने में मुझे सरकार से कोई मदद आज तक नहीं मिली। मैंने अपनी पत्नी के गहने बेचकर इसे विदेश भेजा। आज हम एक कमरे के छोटे से मकान में रहते हैं। यहां तक कि रोहन को मिले पुरस्कारों को जगह न होने के कारण बोरे में भर कर रखना पड़ा है। रोहन को इनलाइन स्केटिंग के लिए हमने किसी तरह उधार मांगकर 70 हजार के स्केट्स दिये हैं। ये मेरे पिछले जन्म के अच्छे कर्म थे जो हमें रोहन जैसा होनहार बेटा मिला।

15 अगस्त 2000 को जन्मे रोहन कर्नाटक में बेलगाम स्थित सेंट जेवियर हाई स्कूल में नवीं कक्षा के छात्र हैं। स्केटिंग में अव्वल दर्जे पर रहने वाले रोहन अपने क्लास में भी हमेशा प्रथम आते हैं। रोहन के कोच गुरु और पथ प्रदर्शक, बेलगाम रोलर स्केटिंग एकेडमी में पिछले 18 साल से अपनी सेवाएं दे रहे, सूर्यकांत हिंडालगेकर का कहना है कि रोहन की शारीरिक बनावट काफी लचीली है। मैंने अब तक करीब दो सौ बच्चों को सिखाया है लेकिन रोहन जैसा प्रतिभाशाली बच्चा पहली बार मुझे मिला। अब वह स्टिक बैलेंसिंग आन चिन, लिम्बोस्पिंनिंग 125 राउंड इन ए मिनट व इनलाइन स्केटिंग का वर्ल्ड रिकार्ड तोड़ने की तैयारी कर रहा है।

रोहन की मां अनुपमा कोकाणे कहती हैं कि हमारे घर में कोई भी स्केटिंग नहीं करता था। रोहन जब छोटा था तो स्केटिंग करने वालों को बड़े गौर से देखा करता था। एक बार वह अपने पिता के साथ जा रहा था तो भीड़ देखकर रुक गया। स्कूटर की पिछली सीट पर खड़े होकर उसने देखा कि एक बच्चा स्केट पहने कार के नीचे से निकल गया। रोहन ने अपने पापा से कहा कि वह स्केटिंग सीखने की इच्छा रखता है। हमारे पास इतनी आमदनी नहीं होती है कि घर का खर्च भी ठीक से चल सके। रोहन अपने दोस्तों से स्केट्स मांग कर सीखता था। वह तो बेलगाम की जनता का रोहन के प्रति प्रेम है कि जब भी जरूरत पड़ी, वे मदद के लिए खड़े हो गये। अमय पावसकर को अपना प्रेरक व्यक्तित्व मानने वाले रोहन बड़े होकर आईएएस अधिकारी बनना चाहते हैं।

●

बचपन में जूनियर 'बालामुरली कृष्णा' यानी एस.ए. विनायक अपनी मां की गोद में बैठ कर उन्हें संगीत सीखते ध्यान से देखते थे। जब तक संगीत की कक्षा चलती, वे खामोशी के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराते थे। मां के साथ वे भी अपनी भाषा में रियाज करते। जब वे साढ़े तीन साल के हुए तो मां शशिकला ने सोचा कि उन्हें किसी गुरु के सानिध्य में संगीत की शिक्षा दिलायी जाए तो उनकी बाल अवस्था को देख कर सभी ने शार्गिद बनाने से इंकार कर दिया। फिर खुद ही मेहनत की और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में उन्होंने अपने नन्हे कदम बढ़ाए तो अब तक 250 से अधिक छोटे–बड़े अवार्ड व पदक अपने नाम कर चुके हैं।

विनायक यानी 'जूनियर बालामुरली कृष्णा'

एस.ए. विनायक 'जूनियर बालामुरली कृष्णा' यूं ही नहीं कहलाते हैं। कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में इतनी कम उम्र में विनायक ने 250 छोटे–बड़े अवार्ड व मेडल जीतकर साबित कर दिया है कि वे लम्बी रेस के घोड़े हैं। विनायक जब मात्र साढ़े तीन साल के थे, तभी से संगीत के प्रति उनकी अभिरुचि ऐसी बढ़ी कि वे आज तक कर्नाटक संगीत के रागों से बंधे हुए हैं।

'उन दिनों मैंने संगीत की कक्षाएं लेनी शुरू की थीं। विनायक छोटा था इसलिए उसे भी गोद में उठा कर ले जाया करती थी। विनायक संगीत क्लास में खामोशी के साथ सुनता और घर आकर जब मैं रियाज करती तो वह भी अपनी धुन में वैसा ही गाने का प्रयास करता। पहले तो मैंने ध्यान नहीं दिया लेकिन जब मैंने उसे अकेले ही गाते सुना तो मैं समझ गयी कि इसे संगीत में खास रुचि है।' बताती हैं विनायक की मां शशिकला जी। 'उस समय विनायक की उम्र मात्र साढ़े तीन साल थी। इतने छोटे बच्चे को सिखाने के लिए कोई गुरु तैयार नहीं हुआ। तब मैंने सोचा कि मैं ही इसे संगीत सिखाऊंगी। इस तरह विनायक का संगीत का सफर शुरू हुआ। जब विनायक पांच साल का हुआ तो उसे विजयलक्ष्मी मंजुनाथ की शागिर्दी मिली। स्कूल स्तर के कम्पटीशन में उसे मेडल मिलने शुरू हुए तो घर में मेडलों की बाढ़ सी आ गयी। कर्नाटक स्टेट के, अपने आयु वर्ग के, शास्त्रीय संगीत कम्पटीशन में विनायक नौ साल तक लगातार प्रथम पुरस्कार लेते रहे। इसके अलावा विनायक बंगलुरु के विवेकानन्द इंस्टीट्यूट द्वारा नेशनल भारत रत्न अवार्ड, महिला व बाल कल्याण मंत्रालय द्वारा आउटसैंडिंग एचीवमेंट्स अवार्ड, श्री नित्तूर

श्रीनिवास राव अवार्ड, स्वर्ण कर्नाटका चेतना अवार्ड, श्री कृष्णदेव आर्या अवार्ड, श्री बसवा ज्योति स्टेट अवार्ड, बुद्ध भारत रत्न अवार्ड, डा. शिवराम कर्णनाथ सद्भावना अवार्ड, एपीजे अब्दुल कलाम अवार्ड, सुगम संगीतश्री अवार्ड, श्री एच. नारायना राव अवार्ड, जवाहर लाल नेहरू डिग्री अवार्ड व सुमा सौरभ अवार्ड से नवाजे जा चुके हैं। एक समय था कि जब मैं विनायक को संगीत सिखाया करती थी, अब वही मुझे संगीत की शिक्षा देता है। उससे संगीत सीखने में मुझे बहुत आनन्द आता है।'

26 अप्रैल 1998 को जन्मे विनायक मैसूर महाजन प्री यूनिवर्सिटी से बारहवीं पास कर चुके हैं। वे जितना अच्छा सुर लगाते हैं, उतना ही अच्छा क्रिकेट भी खेलते हैं। उनकी छोटी बहन वीनाश्री जो क्लास आठ की छात्रा हैं, विनायक उन्हें नियमित संगीत सिखाते हैं। मजेदार बात यह है जब वीनाश्री कुछ गलत करती है तो विनायक प्यार से चपत भी लगा देते हैं। दोनों में झगड़ा हो जाने पर मां को न्यायाधीश की भूमिका निभानी पड़ती है। मां के हाथ का बना आलू–भात विनायक का पसंदीदा भोजन है। भगवान में असीम आस्था रखने वाले विनायक आंख बंदकर गाते हैं और कहते हैं इसी रूप में उन्हें भगवान के दर्शन होते हैं।

ट्रेवलिंग के व्यवसाय से जुड़े पिता एस.जे. अशोक बताते हैं कि मुझे गर्व है कि विनायक ने इतने कम समय में इतना ऊंचा मुकाम पा लिया। मुझे उस दिन बेहद खुशी मिली, जब रोम (इटली) में विनायक को अन्तरराष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में निर्णायक मण्डल में शामिल होने के लिए निमंत्रित किया गया। 53 देशों के नुमाइदों में वह भारत का प्रतिनिधित्व कर रहा था। उस समय उसकी आयु मात्र 14 साल थी।

विनायक ने 2011 में केएसईईबी द्वारा आयोजित जूनियर गायन परीक्षा में 150 में से 149 नम्बर लाकर सबको हैरत में डाल दिया। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व नोबेल पुरस्कार विजेता डा. डेविड ग्रॉस से प्रभावित विनायक अपनी मां को अपना पहला उस्ताद मानते हैं। महान शास्त्रीय गायक बालामुरली कृष्णा को अपना प्रेरक व्यक्तित्व मानने वाले विनायक आगे चलकर कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में ही अपना भविष्य बनाना चाहते हैं।

●

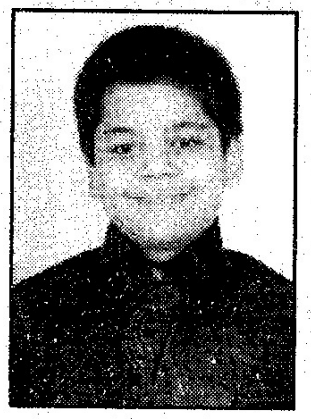

सार्थक जब मात्र ढाई साल के थे और प्लेवे स्कूल में जाते थे तो उन्होंने 85 अंग्रेजी की कविताएं न सिर्फ याद कर ली थीं बल्कि सबकी लय भी कंठस्थ कर ली थी। बचपन में वे कभी शायद ही रोये होंगे क्योंकि जब भी वे रोते तो उनकी मां गाना गाने लगतीं या कैसेट बजा देतीं तो वे गीत में खो जाते और रोना भूल जाते। पंद्रह साल के सार्थक को आज संगीत की दुनिया का हर बड़ा कलाकार जानता–पहचानता है। सार्थक पोगो अमेजिंग किड अवार्ड, मास्टर मदन मोहन अवार्ड, जूनियर सुपर स्टार सिंगर अवार्ड व इंडिया गॉट टेलेंट, बिग बाल कलाकार व इंडियन आयडल जूनियर में अपना जलवा दिखा चुके हैं। सार्थक अपना जीवन तभी सार्थक मानेंगे, जब वे पार्श्व गायन में अपना मुकाम बना लेंगे। जाहिर है कि इसके लिए आज भी वह दिन–रात समर्पित है। निश्चय ही इसका फल उन्हें मिलेगा।

नन्हा संगीतविद सार्थक

सार्थक कल्याणी ने कम उम्र में ही गायन के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बना ली है। संगीत से जुड़े बड़े–बड़े गायक सार्थक के हुनर से परिचित हैं। सार्थक को संगीतज्ञ वर्ग का पोगो अमेजिंग किड अवार्ड 2013 में दिया गया। संगीत का सुप्रसिद्ध मास्टर मदन मोहन अवार्ड भी उनके नाम हो गया है। सार्थक को अब तक अनेक सम्मान मिल चुके हैं, जिनमें जूनियर सुपर स्टार सिंगर 2010, डीडी–1 पर उमंग 2011, इंडिया गॉट टेलेंट (सीजन थ्री) 2011, बिग बाल कलाकार 2012 आदि प्रमुख हैं। डीडी–1 पर नाद भेद 2013, लिमका बुक आफ रिकाड्र्स 2013 में सबसे अधिक देशों द्वारा उस पर डाक टिकट जारी करने के लिए दर्ज हुए, गायन का राष्ट्रीय बाल पुरस्कार तथा इंडियन आयडल 2013 में भाग लेकर वे अपनी अलग पहचान छोड़ चुके हैं।

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के दिन (12 जनवरी) को सन 2000 में इंदौर में जन्मे सार्थक को बचपन से ही संगीत से लगाव था। जब वह रोते थे तो मां संगीता कल्याणी 'ट्विंकल–ट्विंकल लिटिल स्टार' का कैसेट लगा देती थीं, जिसे सुन कर वह चुप हो जाते थे। संगीता बताती हैं कि जब हमने उसे ढाई साल की उम्र में प्लेवे स्कूल में डाला तो उसने 85 कविताएं लय के साथ कंठस्थ कर लीं। अध्यापिका ने कहा कि आपको बच्चे को संगीत में डालना चाहिए। हम सार्थक को लेकर संगीत गुरु श्याम सुन्दर शर्मा के पास ले गये तो उन्होंने इतनी छोटी उम्र के बच्चे को सिखाने से इंकार कर दिया। बाद में जब सार्थक पांच साल के हुए, तब उन्हें संगीत की शिक्षा मिलनी शुरू हुई। कोलम्बिया कांवेंट पब्लिक स्कूल में कक्षा 11 में पढ़ रहे सार्थक हमेशा अव्वल आते हैं। साथ ही

वे शास्त्रीय संगीत महाविद्यालय से 'डिप्लोमा इन इंडियन क्लासिकल म्यूजिक' विधिवत शिक्षा ग्रहण कर संगीतविद भी बन चुके हैं।

मां के हाथ के बने आलू के पराठे व पिज्जा खाने के शौकीन सार्थक खाली समय में टेबल टेनिस व शतरंज खेलते हैं। टीवी पर संगीत सम्बंधी रियाल्टी शोज देखना पसंद है। सार्थक हमेशा सार्थक फिल्में देखना ही पसंद करते हैं। नेट सर्फिंग और नये–नये इलेक्ट्रानिक उपकरणों के बारे में नयी–नयी जानकारियां हासिल करना सार्थक का प्रिय शगल है। सार्थक के पसंदीदा गायक कलाकारों की सूची तो बहुत लम्बी है लेकिन वह मोहम्मद रफी, सोनू निगम, राहत फतेह अली खान और शंकर महादेवन के दीवाने हैं। उस्ताद राशिद खान साहब को वे अपना प्रेरक व्यक्तित्व मानते हैं।

अपनी धुनें तैयार कर सबको आश्चर्य में डालने वाले सार्थक बड़े होकर पार्श्व गायक बनना चाहते हैं। अभिनय व मॉडलिंग में भी हाथ आजमा चुके सार्थक गायक बनने के लिए जमकर तैयारियां कर रहे हैं। गजल, शास्त्रीय गायन, भजन, सूफी, भक्ति संगीत, सुगम संगीत व फिल्मी गीत सार्थक सहजता से गाते हैं। उन्हें शास्त्रीय संगीत व सूफी गायन उन्हें विशेष पसंद है। संगीत को लेकर सार्थक का कहना था कि जब आप पूरी तैयारी से शास्त्रीय संगीत का आधार लेकर आगे बढ़ते हैं तो आप अपनी अलग पहचान बनाते हैं।

सार्थक के संगीत गुरु श्रीप्रकाश सुजालपुरकर आकाशवाणी में उच्च पद पर रह चुके हैं, कहते हैं कि मेरी संगीत यात्रा के दौरान बहुत से बच्चे आये और सीखकर चले गये लेकिन सार्थक उन सब में अलग है। वह जो बताया जाता है उससे आगे बढ़कर पेश कर देता है। सार्थक सूफी गायन में खुद को बेहतर मानते हैं। चूंकि सूफी गायन को थोड़ा मुश्किल माना जाता है और कठिन काम ही उसे भाता है। उसे हर प्रकार की चुनौती स्वीकार करने की आदत सी पड़ गयी है।

एक निजी कम्पनी में ब्रांच मैनेजर पिता कुशल कल्याणी मानते हैं कि सार्थक की संगीत शिक्षा एकदम सही राह पर है। कभी–कभी सार्थक जब कहता है कि संगीत के कारण कहीं मेरी पढ़ाई खराब तो नहीं हो जाएगी, तो मैं उसे कहता हूं कि तुम्हारा जुनून तो संगीत है, फिर उसको कैसे छोड़ दोगे। बस तालमेल बनाओ। वही वह कर रहा है।

●

सबसे कम उम्र की सी.ई.ओ. श्रीलक्ष्मी

तीन साल की कच्ची उम्र में जब बेटियां गुड़िया के घर बसाने की तैयारी कर रही होती हैं, ऐसे में श्रीलक्ष्मी कम्प्यूटर के एमएस पेंट प्रोग्राम से तरह–तरह के चित्र गढ़ने में लगी हुई थीं। थोड़ी बड़ी हुईं तो छुपन–छुपाई में दौड़ने की जगह की बोर्ड पर उंगलियां दौड़ने लगीं। वेब डिजाइन से नाता जुड़ा तो अपने स्कूल के लिए ही एक वेबसाइट डिजाइन कर डाली। तब वे क्लास चार में थीं। दस साल की होते ही उन्होंने अपनी कम्पनी 'ईडिजाइन टेक्नोलॉजी' बनायी और खुद बन गयीं कम्पनी की सीईओ। श्रीलक्ष्मी ने अब तक 250 से ज्यादा वेबसाइट डिजाइन की हैं। उनकी कम्पनी में स्टाफर भी हैं, जो उनसे बड़ी उम्र के हैं।

कम ही लोग यकीन करेंगे की आठ साल की उम्र में कोई अपने स्कूल की वेबसाइट डिजाइन कर सकता है। यकीन यह भी नहीं होगा कि कोई बच्ची मात्र तीन साल की अबोध आयु में गुड़िया और खिलौनों को एक तरफ रख, कम्प्यूटर में चित्र और आकृतियां बनाकर खेले। मेधावी श्रीलक्ष्मी सुरेश के लिए कम्प्यूटर ही खिलौना बन गया और हमजोली भी। स्कूल होमवर्क के बाद जितना भी समय मिलता, कम्प्यूटर के खाते में ही जाता। श्रीलक्ष्मी को जब स्कूल में वाक्य बनाना सिखाया जा रहा था उससे पहले वे की बोर्ड पर लिखना सीख चुकी थीं।

बेहतरीन चित्रकला और लिखने की निपुणता उन्हें वेबसाइट डिजाइन की ओर ले गयी। ये बात तो गले के नीचे से भी नहीं उतरेगी कि वे जब मात्र आठ साल की थीं तो दुनिया की सबसे कम उम्र की सीईओ बन गयीं। उन्होंने 'ईडिजाइन टेक्नोलॉजी' नामक कम्पनी लांच की। उन्होंने अपने स्कूल की आफिशियल वेबसाइट डिजाइन की और जिसे 2006 में केरल सरकार के मंत्री बिनॉय विशोम के हाथों लांच किया गया। इस उपलब्धि के लिए उन्हें भारत सरकार के नेशनल चाइल्ड अवार्ड फार एक्सेप्शनल एचीवमेंट से कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के हाथों नवाजा गया। अमेरिका की प्रतिष्ठित संस्था अमेरिकन वेबमास्टर्स ने उन्हें गोल्ड वेब अवार्ड से सम्मानित किया और अपना सदस्य बनाया जबकि उस संस्था का सदस्य बनने के लिए कम से कम 18 साल की आयु होना जरूरी है। केरल सरकार के समाज कल्याण विभाग की ओर से 'बेस्ट वूमेन इटरप्रेन्योर' के सम्मान से सम्मानित किया। इसके अलावा दो–दो बार

लायंस क्लब का 'बिग एचीवर अवार्ड' व लायंस डिस्ट्रिक का एक्सीलेंस अवार्ड, रोटरी क्लब का यंग अचीवर अवार्ड, बार काउंसिल की ओर से स्वर्ण पदक जैसे अनेक सम्मान उनकी झोली में आ चुके हैं। श्रीलक्ष्मी देश–विदेश के अनेक इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट कालेजों में अपने से काफी बड़े बच्चों को व्याख्यान दे चुकी हैं। श्रीलक्ष्मी के दुनिया भर में फैले 200 से अधिक ग्राहक हैं और वे 250 से अधिक वेबसाइट डिजाइन कर चुकी हैं। जिसमें केरल के 40 हजार वकीलों वाली वेबसाइट, केरल सरकार के पर्यटन विभाग के लिए तैयार वेबसाइट 'स्टेट आफ केरला' को अब तक एक करोड़ लोग देख चुके हैं।

5 फरवरी 1998 को जन्मीं श्रीलक्ष्मी ने प्रजेन्टेशन हायर सेकेंडरी स्कूल से इंटर पास किया है। मां विजु सुरेश बताती हैं कि हमारी एक ही बेटी है और हमें खुशी है कि उसने इतनी कम उम्र में जो मुकाम हासिल किया है, वह बिरले ही हासिल कर पाते हैं। मैं स्वयं मांस नहीं खाती लेकिन उसके लिए चिकन बिरयानी बनाती हूं। मुझे उसकी सभी आदतें पसंद हैं, बस उसका देर से सो कर उठना कम पसंद है।

बिल गेट को अपना रोल मॉडल मानने वाली श्रीलक्ष्मी वेब डिजाइनिंग की क्षेत्र में आने वाले बच्चों को सलाह देती हैं कि आपके पास नये विचार हों, आप मेहनती हों, आपमें सहनशीलता हो, तभी आप अपना कोई मुकाम बना सकते हैं और दुनिया पर राज कर सकते हैं। श्रीलक्ष्मी आगे चलकर वेबसाइट डिजाइनिंग में उच्च शिक्षा ग्रहण कर कुछ नया करने का विचार रखती हैं।

●

कीर्तिमानों का दूसरा नाम सृष्टि

अगर घर में कोई किसी खेल में निपुण है और कोच भी घर का ही शख्स हो तो बच्चे जरूर उसमें नाम कमा लेते हैं। सृष्टि धर्मेन्द्र शर्मा ने भी जब चलना सीखा तो अपनी बड़ी बहन सिद्धि को रोलर स्केटिंग पर पाया। पांच साल की रही होंगी जब उनके पिताजी धर्मेन्द्र बालकेश्वर शर्मा जो स्वयं रोलर स्केटिंग में निपुण थे, दोनों को स्केटिंग की बारीकियां सिखाने लगे। बड़ी बेटी रोलर हॉकी में आगे बढ़ गयी तो छोटी सृष्टि ने लिम्बो स्केटिंग में नये--नये झण्डे गाड़ने शुरू कर दिये। सृष्टि जब मात्र सात साल की थीं तो लिम्बो स्केटिंग में दोनों पैरों को 180 डिग्री में फैलाकर तीन किलोमीटर की यात्रा 20:17:85 मिनट में पार कर अपनी उम्र की लड़कियों के लिए एक नया कीर्तिमान बना दिया। यह दिन था 15 नवम्बर 2013 का। सृष्टि इस कीर्तमान के साथ ही यूनिक वर्ल्ड रिकार्ड, एसिस्ट वर्ल्ड रिकार्ड, वर्ल्ड रिकार्ड इंडिया, इंडिया बुक आफ रिकार्ड, रिकार्ड होल्डर रिपब्लिक, आरएसएफआई स्टेट चौम्पियनशिप, डीएसओ स्टेट मुम्बई व अन्य कई सम्मानों पर अधिकार कर चुकी हैं।

पिता धर्मेन्द्र बालकेश्वर शर्मा जो डब्ल्यू सी एल उमरेड (नागपुर, महाराष्ट्र) में गाड़ी चालक की नौकरी करते हैं, बताते हैं कि मैंने पहले ही से सोच रखा था कि चाहे लड़का हो या लड़की, मैं अपने बच्चों को खेल में जरूर डालूंगा। चूंकि मुझे स्केटिंग आती थी और उमरेड छोटी जगह है, इसलिए मैंने यहां एक आम वैली स्पोर्टिंग एसोसिएशन बनाया और स्केटिंग की शुरुआत की। यहां स्केटिंग के लिए कोई रिंक भी नहीं है। सब लोग सड़क पर ही सीखते हैं, लेकिन लगन और मेहनत से आदमी कुछ भी कर सकता है।

छोटी सी सृष्टि ने बड़े--बड़े कीर्तिमान बनाकर यह स्थापित कर दिया है कि प्रतिभा के लिए उम्र कोई मायने नहीं रखती। सृष्टि जब मात्र पांच साल की थीं, तभी से स्केटिंग के प्रति उनके प्यार और लगाव ने उन्हें आज गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड के द्वार पर ला खड़ा कर दिया है। कर्नाटक के रोहण कोंकणे ने 23 सेमी ऊंची बार (बाधा) के नीचे से निकलकर विश्व कीर्तिमान बनाया था। सृष्टि अब कड़ी मेहनत कर इस ऊंचाई को बहुत कम कर मात्र 16.5 सेमी के बार के नीचे से निकलकर सबको हैरत में डालने जा रही हैं। इस तैयारी के दौरान उनके कान भी घायल हो गये लेकिन उनकी हिम्मत और लगन में कोई कमी नहीं आयी है। लिम्बो स्केटिंग में वे अब तक कई सम्मान अपने नाम कर चुकी हैं। बड़े होकर डाक्टर बनने का सपना देख रही सृष्टि पढ़ाई में भी अव्वल आती हैं।

मेरी बेटी सृष्टि ने भी वह कर दिखाया जो लोग काफी मेहनत और अभ्यास के बाद कर पाते हैं। इसके लिए मैं बेलगाम के कोच सूर्यकांत हिंडालगेकर का शुक्रगुजार हूं, जिन्होंने हमें सही दिशा दिखायी और हमारी बेटी का हौसला बढ़ाया। उन्होंने बताया कि इनलाइन स्केट्स पर ही आजकल सारी प्रतियोगिताएं जीती जातीं हैं। हमारे पास इतने पैसे नहीं थे कि दस हजार के इनलाइन स्केट्स खरीद सकें। सूर्यकांत जी ने हमारी मदद की और इनलाइन स्केट्स मेरी बेटी को दिलवा दिये। अब अगर मेरी बच्ची इस खेल में है तो मैं खुद को बेंचकर भी उसे जरूर आगे लेकर जाऊंगा।

मां शिखा धर्मेंद्र शर्मा बताती हैं कि मेरी दो ही बेटियां हैं। हमारी ससुराल सासाराम बिहार से ताल्लुक रखती है। हमारे ऊपर भी दबाव था कि हमें एक बेटा जरूर पैदा करना चाहिए, लेकिन हमारा पहले से ही विचार बन चुका था कि चाहे लड़का हो या लड़की, हम दो बच्चों से ज्यादा नहीं पैदा करेंगे। अगर दोनों लड़कियां हुईं तो उन्हें ही लड़कों की तरह बड़ा करेंगे। भगवान की दया से हमें कभी लड़के की कमी नहीं खली। शिखा बताती हैं कि सृष्टि जितना खेल में उस्ताद हैं, पढ़ाई में भी अव्वल ही आती हैं। हमेशा 95 से 97 प्रतिशत अंक लाती हैं।

4 जुलाई 2004 में जन्मी सृष्टि डब्ल्यूसीएल माडर्न स्कूल की कक्षा सात की छात्रा हैं। खाने में टुकटुक (घर में सब उसे प्यार से इसी नाम से पुकारते हैं) को सबसे ज्यादा अण्डे पसंद हैं। वे अण्डे उबले हों या कच्चे, सभी तरह से खा लेती हैं। खाली समय में ड्राइंग, बैडमिन्टन के बाद टीवी पर पोगो चैनल व 'तारक मेहता का उलटा चश्मा' उनका प्रिय सीरियल है। सृष्टि बताती हैं कि सूर्यकांत हिंडालगेकर अंकल बहुत अच्छे हैं। उन्होंने ही मुझे आगे बढ़ने के गुर सिखाये। अब मैं उनके निगरानी में गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में अपना नाम दर्ज कराने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रही हूं। अभी तक लिम्बो स्केटिंग में जो लोग बार (बाधा) के नीचे से निकले हैं, उनकी ऊंचाई 23 सेमी या 21 सेमी रही है। मैं 16.5 सेमी ऊंचाई के बार के नीचे से निकल कर दिखाऊंगी। एक बार अभ्यास के दौरान मेरा कान सड़क से रगड़ खाकर घायल हो चुका है, पर इससे विचलित नहीं हुई हूं।

सृष्टि बताती हैं कि वे बड़ी होकर डाक्टर बनकर गरीबों की सेवा करना चाहती हैं और साथ में स्केटिंग प्रशिक्षक भी बनना चाहती हैं।

●

कमाल के स्केटर हैं शुभन

वह अपने करतबों के लिए कर्नाटक में प्रसिद्धि पा चुके हैं। उन्हें लिमका बुक आफ रिकार्ड्स, रिकार्ड होल्डर रिपब्लिक में स्थान मिल चुका है। वे नेशनल और स्टेट स्केटिंग में अपना जलवा दिखा चुके हैं। उसके घर वाले जब बाहर निकलते हैं तो लोग इशारे से कहते हैं कि देखो शुभन का परिवार जा रहा है। जी हां, शुभन ही है उनका नाम जो अभी मात्र साढ़े दस साल के हैं और कर्नाटक के कैगा नगर में रहते हैं। लोगों को इंतजार रहता है कि शुभन इस बार क्या नया करतब दिखाने जा रहे हैं। शुभन बड़े होकर प्रसिद्ध स्केटर बनना चाहते हैं।

शुभन हनबर जब मात्र चार साल के थे तो स्केटिंग की ओर आकर्षित हुए। यह आकर्षण बड़ी बहन अमीषा के कारण हुआ। अमीषा ने स्केटिंग में बहुत सारे अवार्ड लिये हैं और हर बार उसे लगता था कि वह भी बहन की तरह ऐसा कर सकता है। घर का ही प्रेरक व्यक्ति और घर का ही प्रशिक्षक, फिर क्या कहने, शुभन की तो जैसे लाटरी ही निकल आयी। एक दिन पापा दिलीप हनबर से कहा कि मुझे भी स्केट्स लाकर दो, मैं भी अभ्यास करूंगा। पापा तो शायद इसी दिन का इंतजार कर रहे थे। उन्होंने फिर भी एक शर्त रखी कि पढ़ाई में रुकावट नहीं आनी चाहिए। शुभन ने वादा किया और आज भी वे अपना वादा निभा रहे हैं। सेंट्रल स्कूल कैगा (कर्नाटक) में कक्षा सात में पढ़ने वाले शुभन हमेशा प्रथम आते हैं।

न्यूक्लियर पावर कारपोरेशन में सुपरवाइजर के पद पर कार्यरत पिता दिलीप हनबर बताते हैं कि शुभन में सीखने की गजब की ललक है। उसके शरीर में लोच व लचक है जो लिम्बो स्केटिंग में उसकी मदद करती है। जितना बताया जाता है, वह तो पूरा करता ही है और आगे बढ़कर करना चाहता है। कई बार इसकी कम उम्र को देखकर मुझे मना भी करना पड़ता है। मुझे याद है कि जब वह और उसकी बहन 'सेव टाइगर' रोड रैली के लिए कैगा से करवार 45 किलोमीटर लम्बी यात्रा स्केटिंग के द्वारा तय कर रहे थे तो हम चाहते थे कि वे बीच में एक जगह पांच मिनट सुस्ता लें लेकिन शुभन ने साफ मना कर दिया और बोला – 'हम बिना रुके स्केटिंग करने का कीर्तिमान बनाएंगे।' उसने अपनी जिद के आगे किसी की भी बात नहीं सुनी। आखिर उसने कर दिखाया। लिम्का बुक आफ रिकार्ड व रिकार्ड होल्डर्स रिपब्लिक (इंडिया) में तो नाम आया ही, साथ ही राष्ट्रीय व राज्य के सभी

आयोजनों में शुभन ने शानदार प्रदर्शन से अपने नगर का नाम ऊंचा किया। कैगा रोलर स्केटिंग क्लब की ओर से आशा धरन प्रतिभा पुरस्कार के रूप में दस हजार रुपये दिये गये। यही नहीं लोहे की तपती छड़ (फायर बार) जिसकी ऊंचाई मात्र 5.6 इंच थी, उसके नीचे से शरीर को खींचकर लिम्बो स्केटिंग का प्रदर्शन कर, शुभन ने सबको दांतों नीचे उंगली दबाने पर मजबूर कर दिया। इंडिका कार के नीचे से निकलकर भी उन्होंने वाहवाही लूटी। उन्हें तो बस कीर्तिमान बनाने की लत सी लग गयी है। छह घंटे लगातार लिम्बो स्केटिंग (180 डिग्री स्ट्रेच) कर, उन्होंने सबको आश्चर्य में डाल दिया। यह विश्व कीर्तिमान बना और इसे रिकार्ड होल्डर रिपब्लिक में दर्ज भी किया गया। यही नहीं, 25 बच्चों के दल में कैगा से करवार तक 38 किलोमीटर की दूरी स्केट्स पर छह घंटे में पूरी कर सबको चौंका दिया।

मां विमला हनबर बताती हैं कि आज से पहले मेरी अपनी कोई पहचान नहीं थी लेकिन शुभन की बदौलत आज मुझे सब 'शुभन की मम्मी' कह कर सम्बोधित करते हैं, तो बहुत अच्छा लगता है। शुभन को खाने में चावल की रोटी और चिकन बेहद पसंद है। इसके अलावा वे फास्ट फूड के भी शौकीन हैं। स्केटिंग व पढ़ाई से समय बचने पर शुभन कबड्डी व क्रिकेट पर दो–दो हाथ आजमा लेते हैं। टीवी पर सिर्फ कार्टून चैनल ही देखना पसंद है। बहन से उनका कभी कोई झगड़ा नहीं होता है। शुभन अपने को बहुत लकी मानते हैं कि उनके दो उस्ताद हैं। एक पापा और एक अमीषा। बहन के साथ उनकी सबसे अच्छी दोस्ती है। शुभन से पूछा गया कि वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं तो वे बड़ी मासूमियत से बोले, अभी सोचा नहीं। फिर जैसे कुछ याद कर बोले कि बेहतरीन स्केटर बनना चाहता हूं।

●

खेत में अभ्यास करके गोल्फर बना शुभम

शुभम के खानदान में सभी कुश्ती के सूरमा हैं। ज्यादातर लोग अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के पहलवान हैं। किसी ने गोल्फ का नाम तक नहीं सुना था, खेलना तो दूर की बात है। खानदानी खेल से इतर जब पांच साल के शुभम ने गांव में खुली गोल्फ एकेडमी में प्रवेश दिलाने की बात कही तो दादाजी को छोड़कर सभी विरोध में खड़े हो गये। सभी को नाराज कर प्रवेश दिला दिया गया। कुछ समय बाद एकेडमी बंद हो गयी। शुभम की दिल्ली जाने की जिद के आगे परिवार को झुकना पड़ा। सब कुछ बेंच–बांच कर परिवार दिल्ली चला आया। शुभम की लगन और मेहनत रंग लायी और आज वह अपने आयु वर्ग में दुनिया और देश में नम्बर वन पर है। उन्होंने अब तक 120 टूर्नामेंट खेले हैं, सबमें वे स्वर्ण पदक लेकर आये हैं।

विश्व विजेता गोल्फर शुभम जगलान की कामयाबी की कहानी 'सत्यमेव जयते' में दिखायी गयी। आपने शायद देखी हो। शुभम पानीपत हरियाणा के इसराना गांव से ताल्लुक रखते हैं जहां उनके घर व रिश्तेदार सब पहलवानी करते हैं, और अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के पहलवान हैं। ऐसी पहलवानी की उर्वरक जमीन में आंख खोलने वाले शुभम जब पांच साल के थे, उनके गांव में एक एनआरआई कपूर सिंह ने अपनी गोल्फ एकडमी शुरू की। घर के इकलौते शुभम ने अपने दादाजी से कहा कि वह भी गोल्फ एकेडमी में प्रवेश लेना चाहते हैं। घर में किसी ने इससे पहले गोल्फ का नाम तक नहीं सुना था, खेलना तो दूर की बात। सभी चाहते थे कि शुभम भी अपने पुश्तैनी खेल को आगे बढ़ाये। बच्चे की जिद के आगे परिवार झुक गया। लेकिन इसे शुभम का सौभाग्य कहें या दुर्भाग्य, जल्द ही एकेडमी बंद हो गयी। कपूर साहब ने शुभम से कहा कि वह दिल्ली जाकर वहां अपने गोल्फ को जारी रख सकता है।

उसके पिता जगपाल बताते हैं कि इस तरह शुभम का कठिन सफर शुरू हुआ। 'शुभम ने कहा कि वह गोल्फ खेलना चाहता है तो मैं भी विरोध में था। कह दिया कि न मैं लेने जाऊंगा और न छोड़ने। एक दिन एकेडमी से फोन आया कि बच्चे को ले जाएं, उसका सिर फट गया। किसी बच्चे की स्टिक उसके आंख के पास लग गयी थी। उसके सात टांके आये थे। अगले दिन वह फिर तैयार हो गया प्रैक्टिस के लिए। उसकी लगन को देखकर हमारा विचार भी बदल गया। बच्चे की जिद के आगे हम अपनी डेयरी

बंद कर और गाय–भैंसें बेचकर शहर तो आ गये लेकिन हमें आगे की राह दिखाने वाला कोई न था। एक साल तक तो बच्चे का एडमिशन ही किसी स्कूल नहीं लिया। एक टूर्नामेंट में हमें लक्ष्मण पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्या मिलीं और कहा कि हमारे स्कूल में लेकर आओ, हम इसे सभी सुविधाएं देंगे। उन्होंने बहुत मदद की। उसके लिए रात्रि कक्षाएं लगायीं, इंग्लिश में बोलचाल के लिए टीचर लगाया। फिर हमारी मुलाकात ओलम्पियन अमित लूथरा जी से हुई। वे ऐसे ही आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए दि गोल्फ फेडरेशन चलाते हैं। उन्होंने शुभम की परीक्षा ली और उसे अपने फेडरेशन द्वारा मदद दिलाने के लिए चयनित कर लिया। फिर तो जैसे हमारी किस्मत ही बदल गयी।'

शुभम जब मेरे पास आया था तो कोई साढ़े–पांच या छह साल का होगा। वह तब गांव के किसी सरकारी स्कूल में पढ़ता था। उसके पिता पढ़े–लिखे नहीं थे। हमने उसे महंगा से महंगा गोल्फ का जरूरी साजो–साामान दिलवाया। आने–जाने के लिए महंगी गाड़ी दी। हमने उसे किसी भी टूर्नामेंट में जाने के लिए सही सहूलियतें मुहैया करायीं। अर्जुन अवार्ड विजेता कोच नोनीता लाल कुरैशी की देख–रेख में उसका एडमीशन दिल्ली गोल्फ क्लब में करा दिया। बताते हैं ओलम्पिक पदक विजेता अमित लथूरा। टूर्नामेंट के लिए दो बार पिता के साथ अमेरिका भी भेजा। मुझे खुशी है कि शुभम ने वहां काफी अच्छा प्रदर्शन किया। यही नहीं, छोटे से शुभम ने ही पूरी यात्रा खुद सम्भाली। शुभम अब तक अपने एज ग्रुप सब जूनियर में 120 टूर्नामेंट में गोल्ड मेडल जीत चुके हैं। उन्होंने अमेरिका के अलावा थाईलैंड में भी अपना सिक्का जमाया। गोल्फ की डी कैटेगरी में पिछले दो साल से विश्व विजेता, यूरोप चैम्पियन व एशिया में नम्बर वन (अण्डर–11) व सत्यमेव जयते में आमिर खान द्वारा सम्मानित हो चुके हैं शुभम।

16 अगस्त 2004 को जन्मे शुभम लक्ष्मण पब्लिक स्कूल में आठवीं के छात्र हैं और हमेशा 90 से 95 प्रतिशत तक अंक लाते हैं। मां के हाथों की बनी राजमा दाल, चावल व भिण्डी की सब्जी बड़े शौक से खाने वाले शुभम की मां अंजना कहती हैं कि हमें अपने शुभी (घर पर सब उसे इसी नाम से पुकारते हैं) पर बेहद नाज है। हम उसके लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। मैं उसे हमेशा गाय का दूध देती हूं। हमारे घर से गोशाला काफी दूर है। मैं तीन दिन का इक्ट्ठा दूध ले आती हूं। जी हां, मैं अपना गांव बहुत याद करती हूं लेकिन बच्चे की खुशी के लिए हम दो साल से दिल्ली में हैं।

शुभम अपना रोल मॉडल कोच नोनीता लाल कुरैशी को मानते हैं। उसका कहना है कि वह आज जो कुछ भी है, उसमें उनके कोच का बहुत बड़ा हाथ है।

अमेरिका यात्रा उसके जीवन का सबसे बड़ा लम्हा था। वह बताते हैं कि जब उनके गांव की एकेडमी बंद हो गयी तो उन्होंने साठ प्रतिशत गोल्फ यू–ट्यूब से सीखा। हमारे गांव में तो खेत में ही अभ्यास करना पड़ता था और होल की जगह कटोरी रख लिया करते थे, जिसकी आवाज मेरी मां को बिलकुल पसंद नहीं थी। कभी–कभी कटोरी टूट भी जाती थी। हमें डांट भी खानी पड़ती थी। शुभम बड़े होकर गोल्फ ही खेलना चाहते हैं और देश के लिए और भी पदक जीतना चाहते हैं।

●

सालसा नृत्य में टीवी चैनलों की जानी–मानी हस्ती बन चुकीं सोनाली मजूमदार आज किसी भी परिचय की मोहताज नहीं हैं। आज से दो साल पहले सोनाली भारत–बांग्लादेश बार्डर के निकट के गुमनाम से गांव में रहती थीं और 'जंगल में मोर नाचा, किसने देखा' की तरह थीं। कोलकाता पहुंच कर गुरु बिवास चौधरी मिले और उन्होंने बिना कोई गुरुदक्षिणा लिये उनको इंडिया गॉट टेलेन्ट के लिए तैयार किया। उन्होंने समर्थ के साथ सोनाली की जोड़ी बनायी और खिताब अपने नाम कर लिया। बाद में उन्हें 'झलक दिखला जा' में भी अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिला, जहाँ उसे दुनिया की सबसे बेहतरीन नृत्यांगना के साथ 'सालसा प्रिंसेस' कहा गया। सोनाली बड़ी होकर फिल्मों में नृत्य निपुण अभिनेत्री बनना चाहती हैं।

'सालसा प्रिंसेज' सोनाली मजूमदार

2012 में इंडिया गॉट टेलेंट सीजन 4 की विजेता नन्ही सी डांसर का चेहरा शायद ही किसी को भूला हो। वह अपने सालसा डांस को अपने साथी कलाकार माराजू सुमंथ के साथ इतनी गति के साथ करती हैं कि देखने वाला पलक तक नहीं झपका पाता है। मूल रूप से भारत व बांग्लादेश के बार्डर के एक गुमनाम से गांव में जन्मी और अभाव में पली सोनाली मजूमदार बिजली की गति से चक्कर लगाने में तो शायद वे विश्व की सबसे तेज बाल नृत्यांगना हैं। कई बार तो शक होता है कि उनके शरीर में हड्डियां हैं भी या नहीं। आठ साल की यह नन्ही सी डांसर, जब भी अपने साथी सुमंथ के साथ स्टेज पर आती हैं तो घर पर टीवी देख रहीं महिलाएं व बच्चे किसी से बात करना भी पसंद नहीं करते। फिर वह 2013 में 'झलक दिखला जा' सीजन 6 में भी सुमंथ के साथ अवतरित हुई तो कार्यक्रम की दर्शक संख्या (टीआरपी) भी बढ़ गयी। वह जब तक स्टेज पर रहतीं, सबकी निगाहें अपलक उसी तरफ जमी रहतीं। उनके 'मूव्स' व 'लिफ्ट्स' देखकर मुंह खुला का खुला रह जाता था। इस प्रतियोगिता में वे तीसरे स्थान पर रहीं।

सोनाली का जन्म 2 जून 2004 में भारत–बांग्लादेश बार्डर के उत्तरी 24 परगना के एक छोटे से कस्बे बोंगा के एक गुमनाम से गांव शोलारदरी में हुआ। पिता संन्यासी बेहद गरीब हैं। मेहनत मजदूरी करते हैं और जो कुछ भी मिलता, उससे परिवार का भरण पोषण करने की कोशिश होती। संन्यासी बताते हैं कि आज उनकी बेटी मुम्बई में रहकर बिवास जी के डांस स्कूल से विधिवत ट्रेनिंग ले रही है। अब वह गांव केवल अपनी परीक्षा देने आती है। वह जब भी

कोलकाता आती है, हम उसका मनपसंद चिकन बनाकर ले जाते हैं। मां अल्पना केवल बांग्ला बोलती हैं। उन्होंने टूटी–फूटी हिन्दी में बताया कि उनकी बेटी किसी बेटे से कम नहीं है। वे उसे बहुत याद करती हैं।

सोनाली जब मात्र चार साल की थीं, तभी से डांस के प्रति उनका रुझान बढ़ने लगा। जिस परिवार में दो जून की रोटी के लाले हों, वहां सोनाली के लिए नृत्य गुरु की कल्पना भी आसमान से तारे तोड़ने से कम नहीं थी। माना यह जाता है कि जिनको गुरु नसीब नहीं होते, वे टीवी देखकर कापी करते हैं। लेकिन सोनाली की झोपड़ी में टीवी का तो सवाल ही नहीं उठता। जब वह क्लास दो में शोलारदरी शिशु शिक्षा केन्द्र में पढ़ती थीं तो स्कूल के हर कार्यक्रम में अपने नृत्य से सबका दिल जीत लेती थीं। यही नहीं, उसे डांस का इतना ज्यादा शौक था कि वह विवाह समारोह व जन्मदिन के अवसर पर बिना बुलाये ही नाचने पहुंच जातीं। गांव के संतोष मंडल बताते हैं कि जिस रात सोनाली ने इंडिया गॉट टेलेंट शो जीता था, उस रात गांव में सभी की आंखों में खुशी के आंसू थे। हमें पूरी उम्मीद थी कि सोनाली जरूर विजयी होगी।

कोलकाता में पहुंचकर तो सोनाली की तो जैसे किस्मत ही बदल गयी। यहां बिवास चौधरी इंस्टीट्यूट आफ परफार्मिंग आर्ट में उसे एडमिशन मिल गया। गुरु बिवास बताते हैं कि उनके माता पिता काफी गरीब थे और वे फीस नहीं दे सकते थे। हमारा इंस्टीट्यूट प्रतिभावान बच्चों को मुफ्त में नृत्य सिखाता है। हमने उसकी छिपी प्रतिभा को देखा और 'इंडिया गॉट टेलेंट' के लिए तैयार किया। तीन माह में वह स्टेज पर आते ही छा गयी। उसने हमें निराश नहीं किया। हम उसे लेकर सिंगापुर, कतर, मलयेशिया में कार्यक्रम दे चुके हैं।

जब सोनाली छोटी जगह से इतने बड़े 'इंडिया गॉट टेलेंट' के स्टेज पर पहुंची तो इस बदलाव के साथ जैसे उसका भाग्य भी बदल गया। जहां उसके पिता संन्यासी 25 रुपये स्कूल फीस नहीं जुटा पाते थे, आज उनके हाथ में 15 लाख थे। यह राशि उसे शो जीतने के बाद मिली थी। संन्यासी कहते हैं कि वे अब अपनी बेटी की हर वह इच्छा पूरी करना चाहते हैं, जिसके लिए वह बचपन में तरसी है। सोनाली अब मशहूर नृत्यांगना बनना चाहती हैं लेकिन अगर अभिनय का मौका मिलेगा तो वे फिल्मों में भी भाग्य आजमायेंगी।

●

जो भी सुनता, आश्चर्य से अपनी उंगली दांतों तले रख लेता। एक आश्चर्यमिश्रित स्वाभाविक सा सवाल मन में आता है 'क्या केवल 13 साल की उम्र में आईआईटी में रैंक ले आया सत्यम।' सत्यम इतनी कम उम्र में 'बिहारी हो तो ऐसा' और 'पोगो अमेजिंग किड अवार्ड' भी अपने खाते में डाल चुके हैं। एनडीटीवी इंडिया ने 'सपोर्ट माई स्कूल' के तहत महान क्रिकेटर सचिन के हाथों उन्हें सम्मान मिला जो वह कभी नहीं भूल सकते . . .।

सत्यम ने कर दिया कमाल

सत्यम ने जो हासिल किया है, उससे केवल बिहार का बल्कि देश का भी नाम रोशन हुआ है। सत्यम ने मात्र 13 साल की उम्र में आईआईटी प्रवेश परीक्षा पास कर सबको हैरत में डाल दिया। उनकी रैंक 679 आयी। जब वे मात्र 12 साल के थे, तब भी उन्होंने प्रवेश परीक्षा दी थी और उनकी रैंक 8137 आयी थी। यही नहीं सत्यम ने इसी 2013 जेईई मेन की परीक्षा में 292 अंक लेकर न सिर्फ सफलता प्राप्त की बल्कि सबसे कम उम्र का प्रतियोगी होने का भी गौरव हासिल किया।

सत्यम का जन्म 20 जुलाई 1999 को बिहार के भोजपुर जिले के बखोरापुर गांव में हुआ था। गांव के ही स्कूल में उसकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। जब वह छोटी कक्षा में थे, तभी उनके सवाल स्कूल के अध्यापकों को परेशान करने लगे थे। मास्टर साहब ने उनके पिता सिद्धनाथ सिंह से कहा था कि इस बच्चे को शहर में पढ़ाओ। यहां इसकी प्रतिभा खत्म हो जाएगी। सत्यम भाग्यशाली रहे। उनके एक चाचा कोटा में कोचिंग करके इंजीनियर बने थे। सत्यम अपने चाचा के बुलावे पर अपने दूसरे चाचा रामपुकार सिंह के साथ 2007 में कोटा पहुंच गये।

वहां रेजोनेन्स कोचिंग के सर्वेसर्वा आरके वर्मा से मुलाकात तय हुई। वर्मा जी ने सत्यम से पहले सरल सवाल किये, जिनका सत्यम ने तड़पड़ जवाब दे दिया। फिर कठिन सवालों का सिलसिला शुरु हुआ। सत्यम यहां भी आगे ही रहे। यह इंटरव्यू तीन दिनों तक चला। सत्यम लगातार सवालों का जवाब देते रहे। वर्मा जी सकते में आ गये। उन्हें दो–तीन रातों को नींद भी नहीं आयी। उन्होंने सत्यम के चाचा से आग्रह किया कि यह बच्चा आप मुझे सौंप दें। यह तो बिहार का नाम ही नहीं बल्कि देश का नाम भी रोशन करेगा। उन्होंने सत्यम को राजस्थान बोर्ड से आठवें की परीक्षा दिलवायी। सत्यम प्रथम

स्थान लाये। फिर उसका प्रवेश माडर्न हायर सेकेण्डरी स्कूल में करा दिया गया। यहां भी दिक्कत पेश आयी कि हाईस्कूल में उसकी उम्र केवल दस साल थी। विशेष आज्ञा के आधार पर उन्होंने हाईस्कूल किया और फिर मात्र 12 साल की उम्र में इंटर कर सबको हैरत में डाल दिया। सत्यम के आईआईटी में आने पर वर्मा जी सबसे ज्यादा प्रसन्न हुए। उन्होंने सत्यम से वादा किया है कि वह जितना पढ़ना चाहे, जहां पढ़ना चाहे, उसका पूरा खर्च वे ही उठायेंगे।

सत्यम की विशेष योग्यता को देखते हुए 2006 में मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने उसे 'बिहारी हो तो ऐसा' के अवार्ड से सम्मानित किया। इसके अलावा 2013 में पोगो चैनल द्वारा 'पोगो अमेजिंग किड' का अवार्ड मिला। एनडीटीवी व कोकाकोला के सौजन्य से 'सपोर्ट माई स्कूल' अभियान के तहत क्रिकेटर व ब्रांड एम्बेसेडर सचिन के हाथों सत्यम को सम्मान मिला, जो वह कभी नहीं भूल सकते। इस मौके पर ऐश्वर्या बच्चन ने भी अपना आशीर्वाद दिया। सत्यम का सपना है कम्प्यूटर साइंस के क्षेत्र में टेक्नोक्रेट बन, फेसबुक जैसी ही अपनी सोशल साइट डेवलेप करने का। यही नहीं, वह अपने प्रदेश के उन उदीयमान छात्रों के लिए जगह–जगह कार्यशाला भी करना चाहते हैं जो पैसे की कमी व सही दिशा निर्देश के अभाव में आईआईटी प्रवेश परीक्षा में नहीं आ पाते।

सत्यम अपने पिता सिद्धनाथ सिंह व मां प्रमिला देवी को बहुत याद करते हैं। उन्हें मां के हाथ की बनी लिट्टी–चोखा बहुत पसन्द है। सत्यम ने अपनी सफलता के बारे में बताया कि मैं कोचिंग के अलावा 5 से 6 घंटे रोज पढ़ता था। मेरा मानना है कि जो भी बच्चा नियमित पढ़ाई व होमवर्क के साथ टीचर की बतायी बातों पर चलें तो सफलता मिलना तय है। किसान परिवार में जन्मे सत्यम आईआईटी कानपुर में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं। सत्यम को जब भी मौका मिलता है, गांव जरूर जाते हैं। सत्यम का छोटा भाई भी कोटा में ही पढ़ाई कर रहा है। सत्यम की मां गांव में बिना बच्चों के रहती हैं। कहती है, 'बच्चों की जिन्दगी बन जाए, बस यही चाहती हूं। याद तो आती ही है लेकिन दिल को समझाना पड़ता है।'

●

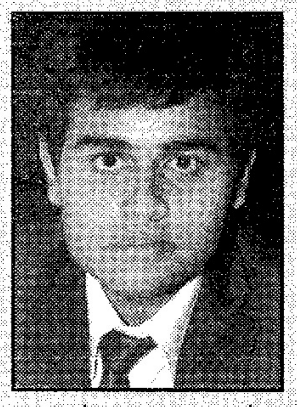

स्टेशन पर सैकड़ों लोग प्यारा तिरंगा लिये जिसकी आगवानी करने को बेताब थे, वे स्वप्निल चीन से विश्व चैम्पियन बनकर लौट रहे थे। कुंगफू में स्वर्ण व कांस्य पदक लेकर आ रहे थे। स्वप्निल ने विश्व विजेता बनने का सपना बचपन में ही देखा था लेकिन लगातार भयानक बीमारियों ने उनकी राह में रोड़े अटकाये। वे पांच साल कुंगफू से दूर रहे और जब लौटे तो डेढ़ साल में ही विश्व चैम्पियन बन गये। स्वपनिल की विजय गाथा किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं है.. स्वप्निल के जज्बे के आगे बड़ी से बड़ी बाधाओं को सिर झुकाना पड़ा। स्वप्निल के इस हौसले को देश का सलाम . . . !

स्वप्निल की विजय गाथा

चीन में आयोजित विश्व कुंगफू चैम्पियनशिप में स्वर्ण और कांस्य पदक जीतकर लौटे स्वप्निल कुमार अपने नगर लखनऊ लौटे से स्टेशन पर भारी भीड़ हाथ में प्यारा तिरंगा लिये खड़ी थी। गाड़ी रुकते ही प्रशंसकों ने उन्हें फूल मालाओं से लाद दिया और कंधे पर बैठा लिया। स्वप्निल के लिए ये क्षण अभिभूत कर देने वाले थे। स्टेशन पर उनकी मां मधु और पिता विजय कुमार आंखों में खुशी के आंसू लिये एक कोने में हाथों में तिरंगा लिये खड़े थे। उन्होंने अपने पिता को वह कर दिखाया जो वो सोचा करते थे। स्वप्निल की कहानी किसी फिल्म की कहानी से कम नहीं है।

वे जब मात्र 11 साल के थे तो अपने मामा विजय कुमार से मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग लेने लगे थे। मामाजी मार्शल आर्ट में पारंगत थे। देश के लिए कुछ कर गुजरने का सपना लिये स्वप्निल अभी मैदान में उतरा ही था कि अचानक बीमारियों ने उसे घेर लिया। उनके स्पाइनल कॉर्ड में कोई नस फंस गयी और मां–बाप के इकलौते बेटे स्वप्निल लम्बे समय के लिए बिस्तर पर लिटा दिये गये। हिल–डुल तक नहीं पाते थे। डाक्टर सहित परिवार के सभी ने मान लिया था कि स्वप्निल अब कभी भी नहीं खेल सकेंगे। लम्बे इलाज, मां की मेहनत और भगवान के आशीर्वाद से स्वप्निल ठीक हो गये। मन बहुत करता कि मैदान में जाकर कुंगफू का अभ्यास करें लेकिन पिताजी की न खेलने की सख्त हिदायत इच्छा का दमन कर देती। मामाजी से सिफारिश करायी गयी लेकिन बात नहीं बनी। मां ने थोड़ी कोशिशें कीं तो बात कुछ बनती सी दिखी लेकिन कुदरत को तो कुछ और ही मंजूर था।

स्वप्निल ब्रेन में कैल्शियम जमा हो जाने के कारण भयंकर सिरदर्द से पीड़ित

हो गये। फिर मैदान की जगह अस्पताल का कमरे की चाहरदीवारी में वे कैद हो गये। अब लगता था कि कुंगफू उनके लिये हमेशा–हमेशा के लिए दूर हो गया है। ये सोचकर आंखों में आंसू आ जाते। आन्तरिक विश्वास ने फिर कमाल दिखाया और तीन महीने में वे ठीक होकर वापस घर आ गये। अब वे क्लास ग्यारह में पहुंच चुके थे। लम्बे अर्से से सक्रिय कुंगफू से दूर रहने के बाद स्वप्निल के जज्बे में कोई कमी नहीं आयी थी। मामाजी और माताजी को विश्वास में लेकर पिताजी को बिना बताये उन्होंने ड्रेगन एकेडमी में कोच ज्ञान प्रकाश के शार्गिद बनकर नियमित अभ्यास करना शुरू कर दिया। स्वप्निल बताते हैं कि जब मैंने राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीती तो पिताजी को पता चला। उन्होंने पहले तो काफी देर तक बात ही नहीं की, फिर सब कुछ जानने के बाद उन्होंने कभी मुझे नहीं रोका।

अपना पोल्ट्री फार्म चलाने वाले पिता विजय कुमार बताते हैं कि मुझे अपने बच्चे को चीन भेजने के लिए सवा लाख रुपये की जरूरत थी। मैंने अपने रिश्तेदारों व दोस्तों से मांग कर किसी तरह पैसा जोड़ा, तब जाकर स्वप्निल का सपना पूरा हुआ। हम पैसे की तंगी के कारण नहीं जा सके। मां मधु बताती हैं कि अक्सर तलवारबाजी में सोनू (घर में प्यार से सब उसे इसी नाम से बुलाते हैं) को चोट लग जाती। मन कांप उठता लेकिन दिल को कड़ाकर मैंने कभी उस पर जाहिर नहीं होने दिया कि मैं उसके इस खेल से अंदर से डरती हूं। मेरी आंखों को पढ़कर सोनू कहता, आप मुझे कमजोर बना देंगी। चलिये मुस्कुराइये।

कोच ज्ञान प्रकाश बताते हैं कि ज्यादातर बच्चे प्रमाण पत्र पाने और विदेश घूमने की इच्छा लेकर अकादमी में आते हैं। लेकिन स्वप्निल इनमें सबसे अलग हैं। उसने किसी से ज्यादा मेलजोल नहीं बढ़ाया और अपने अभियान पर कायम रह कर अभ्यास में ही मन प्राण से लगे रहे। मुझे भी उम्मीद कम थी लेकिन स्वप्निल ने जो कर दिखाया, वह काबिले तारीफ है।

मां के हाथ का बना छोला भठूरा और भरवां करेला स्वाद लेकर खाने वाले स्वप्निल ने ली कोले डू मोंडे स्कूल से 12वीं की परीक्षा अच्छे नम्बरों से पास की है। स्वप्निल ने विश्व कूंगफू चौम्पियनशिप की वेपन स्पर्धा (तलवारबाजी) में स्वर्ण पदक और जूनियर सांडा में कांस्य पदक जीतने से पहले 2013 नवम्बर में हुई राज्य प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक व राष्ट्रीय प्रतियोगिता में लाइट सांडा व साउलू में स्वर्ण पदक लेकर सबको चौंका दिया था। स्वप्निल चीन के अनुभवों को साझा करते हुए बताते हैं कि वहां मुकाबला काफी कठिन था। मैंने रूस, अजरबैजान, कनाडा, अमेरिका और उक्रेन के प्रतिद्वंद्वियों का पछाड़ कर यह सफलता हासिल की। बीजिंग यूं तो काफी साफ–सुथरा और विकसित शहर है लेकिन वहां खाना

और भाषा सबसे बड़ी मुसीबत थी। नानवेज के शौकीन होने के बाद भी मुझे डर रहता था कि पता नहीं किसका मांस परोसा जाएगा। स्वप्निल किसी को अपना रोल मॉडल नहीं मानते लेकिन अपने मामा सुजीत व विनय को अपना पथ प्रदर्शक जरूर मानते हैं। स्वप्निल बड़े होकर वैज्ञानिक बनना चाहते हैं और इस क्षेत्र में आने वाले बच्चों से कहते हैं कि मार्शल आर्ट में लगन और मेहनत करें। यह कुछ दिलाये या न दिलाये आपको अनुशासित रखता है और आत्मविश्वास का स्तर बढ़ाता है।

●

108 राग गाकर बनाया रिकार्ड

2009 में जिन्होंने सारेगामापा लिटिल चैम्प देखा होगा तो वे आठ साल के उस बच्चे को आज तक नहीं भुला पाये होंगे जो दुनिया की किसी भी भाषा में गाये गये गीत का नोटिफिकेशन पलक झपकते ही तैयार कर देते थे। निर्णायक अभिजीत भट्टाचार्या हों या अल्का याज्ञनिक या फिर सुरेश वाडकर हों, सभी उसकी इस अद्भुत प्रतिभा के कायल हो गये थे। इंदौर के इस बच्चे का नाम है स्वरित शुक्ल। स्वरित भले ही गायन के इस रियलटी शो में चौथे स्थान पर रहे हों लेकिन उनकी ख्याति विजेता से कम नहीं रही। स्वरित की मधुर आवाज में गुजराती भक्ति संगीत में पांच अलबम भी आये और संगीत प्रेमियों को खूब पसंद किये। 29 दिसम्बर 2013 को जूनागढ़ में हुए स्वामीनारायण महामंत्र महोत्सव में स्वरित ने लगातार 108 राग गाकर रिकार्ड बना दिया। गोल्डेन बुक आफ रिकाड्र्स ने इस उपलब्धि पर उसका नाम दर्ज किया। गायक सुखविंदर सिंह भी स्वरित की इस प्रतिभा से बेहद प्रभावित हुए और उन्होंने एक पंजाबी फिल्म 'आई एम सिंह' में अपने साथ पार्श्व गायन का मौका दिया। उसके बाद फिल्म '69 स्टेप' में भी गीत गाया। फिल्म 'बाल गणेशा' में भी उन्होंने एक गीत गाया।

स्वरित के संगीत गुरु उनके पिताजी जो पिछले तीन दशक से सरकारी संगीत विद्यालय में अध्यापक हैं, बताते हैं कि स्वरित जब पैदा हुआ तो हमने उसके कान में सबसे पहले संगीत के सात सुर गाये। कहते हैं, इससे बच्चे का कंठ सुरीला हो जाता है। स्वरित जब मात्र डेढ़ साल का था तो उसने जी टीवी पर राग केदार गाया था। मेरी पत्नी शकुन भी संगीत सिखाती

2009 सारेगामापा लिटिल चैम्प में आये सभी प्रतिभागियों में सबसे छोटे से प्रतिभागी स्वरित शुक्ल को आप नहीं भूले होंगे जो दुनिया की किसी भी भाषा में गाये गये गीत का नोटिफिकेशन फटाफट बना दिया करते हैं। ये अलग बात है कि वे इस रियलटी शो में चौथे स्थान पर आये लेकिन उनकी ख्याति विजेता से कम नहीं रही। स्वरित ने कई फिल्मों में गीत भी गाये और मातृ भाषा मराठी होने के बावजूद गुजराती भाषा में भी उनके पांच अलबम आये। स्वरित ने पिछले साल जूनागढ़ में हुए स्वामी नारायण महामंत्र महोत्सव में लगातार 108 राग गाकर कीर्तिमान बनाया और इस महान उपलब्धि के लिए उनका नाम गोल्डेन बुक आफ रिकाड्र्स में दर्ज हो गया।

हैं। स्वरित जब बहुत छोटा था तो हम उसके सामने रियाज करते। हमने देखा कि वह उस गीत का नोटिफिकेशन गुनगुना रहा है। बाद में हम किसी भी भाषा का गीत गाते, वह उसका नोटिफिकेशन बना देता। हम चाहते थे कि ऊपर वाले की देन उसकी यह अनोखी कला दुनिया के सामने आये। इसके लिए सारेगामा लिटिल चैम्प का प्लेटफार्म था। जब यह छह साल का था तो हम इसे ऑडीशन में लेकर गये। चयन तो हुआ लेकिन यह कहकर बाहर कर दिया गया कि यह अभी बहुत छोटा है। हम अगले साल फिर गये। फिर वही राग दोहराया गया। उसके बाद जब यह आठ साल का हो गया तो फिर उनके पास रिजेक्ट करने का कोई आधार नहीं रह गया था।

मां शकुन बताती हैं कि स्वरित बहुत ही गम्भीर, सृजनशील व उत्साही है। उसको संगीत के अलावा और कोई चीज पसंद नहीं है। वह हर समय बस गाता और गुनगुनाता रहता है। मैं घर में ही बच्चों को संगीत की शिक्षा देती हूं। स्वरित आज भी शिष्य भाव से मेरी कक्षा में आता है। अगर यह कहा जाए कि उसे संगीत का ज्ञान उसके पिता ने दिया है तो संस्कार मैंने दिये हैं।

1 मार्च 2001 को जन्मे स्वरित इंदौर के भारतीय अकेडमी स्कूल में क्लास 10 में पढ़ते हैं। पढ़ाई में अव्वल स्वरित दाल चावल, दाल बाटी और खिचड़ी के शौकीन हैं। रोज चार घंटे रियाज करने वाले स्वरित के प्रेरक व्यक्तित्व कुमार गंधर्व हैं और वे भीमसेन जोशी के गायन से बेहद प्रभावित हैं। घर के इकलौते होने पर बोर नहीं होते, इस पर स्वरित का कहना था कि संगीत ही मेरा सखा है भाई–बहन है। इसी से रूठते हैं और इसी को मनाते हैं। स्वरित अब अपने बनाये रिकार्ड को तोड़ना चाहते हैं और इसके लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। आगे चल कर संगीत में ही नाम कमाना चाहते हैं।

●

जीत का नाम है 'तनिष्का'

तनिष्का कोटिया जब 9 साल की थीं तो उस वक्त उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, जब उन्होंने थाईलैंड में डब्ल्यू एफ एम के तहत '14 वीं एशियान चेस चैम्पियनशिप' जीत ली। सिर्फ जीती नहीं बल्कि देखने वालों को हैरत में डाल दिया क्योंकि उन्होंने कुल नौ राउंड में लगातार सात चरण अपने प्रतिद्वंद्वी को हराकर दो चरण पहले ही जीत दर्ज कर ली। खास बात यह रही कि 9 अंक की गुंजाइश में हर बार आठ अंक अर्जित कर सामने वाले को 1.5 अकों के अंतराल से हराया। इस प्रतियोगिता में 14 देश बांगलादेश, चीन, हांगकांग, इंडोनेशिया, लाओस, मलयेशिया, मंगोलिया, वियतनाम, फिलीपींस, सिंगापुर, थाइलैंड, ताइपेई व रूस के कुल 426 चोटी के खिलाड़ियों का अपने–अपने ग्रुप से मुकाबला था। इससे पहले 2011 में हुई 12वीं एशियान चेस चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता। उसके बाद उन्होंने इंडोनेशिया, ब्राजील, वियतनाम और थाईलैंड में हुए शतरंज स्पर्धा में भारत का प्रतिनिधित्व किया। 2008 में जब तनिष्का मात्र 3 साल ग्यारह माह की थीं तो उन्हें 'यंगेस्ट चेस प्लेयर' के रूप में लिम्का बुक आफ रिकाड्र्स में दर्ज किया गया। उनकी इस उपलब्धि ने हवाना (क्यूबा) के रहने वाले पूर्व ग्रांड मास्टर रोज राउर कैपाब्लांका का 114 साल पुराना कीर्तिमान तोड़ दिया था। यही नहीं, मात्र 6 साल की कम उम्र में उन्हें इंटरनेशनल रेटिंग मिली। इस उम्र में तमाम विश्व चैम्पियन खेलना शुरू करते हैं।

6 अगस्त 2003 को जन्मी तनिष्का को खेल का इतना जुनून रहता है कि वे क्लास में पढ़ाई के समय भी चालें (मूव) सोचा करतीं। वह सनसिटी वर्ल्ड स्कूल

खिलौनों से खेलने वाली उम्र में कनिष्का जब मात्र तीन साल ग्यारह माह की नन्ही बच्ची थीं तो हरियाणा स्टेट चेस चैम्पियनशिप में खेल–खेल में उतरीं और टूर्नामेंट जीत कर चैम्पियन बन गयी थीं। इसके लिए 2008 में उनका नाम लिमका बुक आफ रिकाड्र्स में यंगेस्ट चेस प्लेयर के रूप में दर्ज किया गया। यही नहीं, जब वे मात्र 6 साल की थीं तो इंटरनेशनल रेटिंग मिली, इस उम्र में दुनिया के तमाम ग्रैंडमास्टर्स खेलना शुरू करते हैं। हरियाणा स्टेट चेस चैम्पियनशिप व ओलिंपियाड में लगातार छह साल गोल्ड मेडल पर अपना कब्जा जमाए हुए हैं। अब वे 18 स्वर्ण पदक व 5 अन्य पदक अपने खाते में जोड़ चुकी हैं। तनिष्का का ख्वाब इंटरनेशनल मास्टर का खिताब अपने नाम करने का है।

गुड़गांव में क्लास 9 की स्टूडेंट हैं। कनिष्का जब मात्र ढाई–तीन साल की थीं तो अपने पिता के चेस बोर्ड पर सारी गोटियां (पीसेज) उसी क्रम में सजा दिया करती थीं, जैसी सजायी जाती हैं। पिता अजीत कोटिया जो रूरल इलेक्ट्रिफिकेशन कार्पोरेशन लिमिटेड में मैनेजर (आईटी) हैं, बताते हैं कि कनिष्का की याददाश्त और कल्पना गजब की है। वह किसी भी बात को जल्दी ही याद कर लेती। हमने जब खेल–खेल में उसे हरियाणा स्टेट चैम्पियनशिप के सात वर्ष से कम श्रेणी में उतारा तो उसने सभी को मात देकर चैम्पियनशिप अपने नाम कर ली। यह उसका पहला प्रदर्शन था। उसके बाद लगातार छह साल से वह हरियाणा राज्य शतरंज स्पर्धा व हरियाणा स्टेट चेस ओल्पियाड में स्वर्ण पदक ला रही हैं। अब तक वे 18 स्वर्ण पदक व 5 अन्य पदक अपने खाते में जोड़ चुकी हैं।

गृहणी मां निधि बताती हैं कि जब तनिष्का कोई पुरस्कार जीतती हैं तो हमें लगता है जैसे हमने इनाम जीता हो। हां, इनाम जीतने के बाद उसे केवल पनीर के आइटम चाहिए। कनिष्का को पनीर के आगे दुनिया की कोई भी चीज नहीं भाती। हमारे घर में लगभग हर रोज पनीर जरूर बनता है। मुझे तो लगता है कि पनीर खाने से ही उसकी बुद्धि कुछ ज्यादा ही तेज हो गयी है। कनिष्का अपने पापा को देखकर शतरंज खेलने लगीं तो उसकी छोटी बहन रिद्धिका जो अभी केवल साढ़े छह साल की है, भवानी (हरिणाया) में हुए राज्य प्रतियोगिता में नौ वर्ष से कम श्रेणी में चौम्पियन बनीं। हमारे घर के हर कोने में चेस बोर्ड मिल जाएगा। कनिष्का के स्कूल सनसिटी वाले काफी सहयोग करते हैं और कनिष्का भी पढ़ाई में भी किसी से कम नहीं हैं। वे पढ़ाई और शतरंज के बीच बेहतर तालमेल रखती हैं। आजकल तो नेट पर उपलब्ध तमाम साइट्स पर काफी कुछ मिल जाता है सीखने को और उसी की बदौलत वह बड़े–बड़ों को पलक झपकते ही हरा देती हैं।

विश्वनाथ आनन्द को अपना रोल मॉडल और पापा को गुरु मानने वाली एक छोटे भाई व एक छोटी बहन की चहेती कनिष्का बताती हैं कि वे बड़ी होकर ग्रैंड मास्टर बनाना चाहती हैं। कनिष्का में एक खूबी और भी है कि वे कलाचित्र बहुत ही बेहतरीन बनाती हैं।

●

वैष्णवी जब दो साल की थीं तो चारपाई से नीचे गिर पड़ीं और कोमा में चली गयी थीं। डाक्टरों ने उन्हें पांच साल तक कोई भी दिमागी जोर डालने से मना किया था। लेकिन जब वह चार साल की थीं, अपनी मौसी की लड़की को भरतनाट्यम करते देखती और छुप कर नकल करतीं। एक दिन सबके सामने राज खुला तो विधिवत शिक्षा भी शुरू हो गयी। वैष्णवी ने नृत्य के सभी रियालटी शोज में अपनी प्रतिभा के न सिर्फ झण्डे गाड़े बल्कि कई खिताब भी अपने नाम कर लिये। पिछले साल उन्हें उत्कृष्ट नृत्यांगना का प्रतिष्ठित पोगो अमेजिंग किड अवार्ड दिया गया। देश विदेश में पांच सौ से ज्यादा कार्यक्रम दे चुकीं वैष्णवी का सपना है भरतनाट्यम में डाक्टरेट कर, अपने नाम की डांस अकादमी खोलना। . . .

बेमिसाल नृत्यांगना वैष्णवी पाटिल

टेलीविजन की दुनिया में 'छोटी माधुरी' के नाम से प्रसिद्ध वैष्णवी पाटिल ने इतनी कम उम्र में नृत्य में जितने पुरस्कार व सम्मान अपने खाते में किये हैं, वह आसान बात नहीं है। डांस तो सभी करते हैं लेकिन वैष्णवी ने जहां कहीं भी प्रदर्शन किया, दर्शक दांतों तले उंगली दबाने को मजबूर हो गये। वैष्णवी अब तक पांच सौ से ज्यादा प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले चुकी हैं। अवार्ड तो जैसे उसके पीछे–पीछे चलते हैं। दम दमा दम, बूगी वूगी (दो बार) ईटीवी का सुपर डांसर, डांस के सुपर स्टार जैसे खिताब तो उसने हासिल ही किये हैं, साथ ही डीआईडी लिटिल मास्टर में सेकेण्ड रनरअप, नचले वे विद सरोज एंड टेरेंस में फर्स्ट रनरअप व इंडिया गॉट टेलेंट की फाइनलिस्ट बनने का सम्मान भी मिला। पिछले साल उसे डांसिंग कैटेगरी में पोगो अमेजिंग किड अवार्ड से नवाजा गया था।

20 मई 1999 को पुणे में जन्मी वैष्णवी एनएमवी ने मराठी गर्ल्स स्कूल से इंटर पास किया है। भरतनाट्यम की वह मध्यमा की परीक्षा पास कर चुकीं हैं और पढ़ाई में भी अव्वल आती हैं। वैष्णवी थ्रो बाल, बेस बाल की स्कूल कैप्टन हैं और कबड्डी के खेल में भी हाथ आजमाने में किसी से पीछे नहीं हैं।

वैष्णवी ने भरतनाट्यम स्वाती दातार व प्राजक्ता माली से, वेस्टर्न डांस शामक डावर व फोक, बालीवुड व फ्यूजन डांस की शिक्षा सचिन गायकवाड से ली है। सालसा के लिए वह संदीप सोपालकर से कोचिंग ले रही हैं। संदीप सोपालकर व शामक डावर की अकादमी से उन्हें स्कालरशिप भी मिल रही है। डांस की लगभग सभी विधाओं पर कमांड हासिल कर

चुकीं वैष्णवी को फ्यूजन, बालीवुड, कंटम्प्रेरी, वेस्टर्न, फ्री स्टाइल, लेटिन सालसा, क्लासिकल में भरतनाट्यम व फोक में लावनी स्टाइल काफी भाती हैं। वैष्णवी की शास्त्रीय नृत्य अध्यापिका स्वाती दातार बताती हैं कि वह पिछले दो वर्षों से हमारे पास नृत्य सीखने आ रही हैं। एक छात्रा में लगन, समर्पण व जुनून होना बेहद जरूरी है जो वैष्णवी में कूट–कूट कर भरा है। वैष्णवी की नस–नस में नृत्य है। वह एक दिन बहुत बड़ी नृत्यांगना बनेगी और देश का नाम रोशन करेगी।

वैष्णवी जब दो साल की थीं तो सोते समय चारपायी से नीचे गिर गयीं थीं और कोमा में चली गयी थीं। पिता मधुकर चंद्रकांत पाटिल जो एक निजी अस्पताल में वार्ड ब्वाय हैं, बताते हैं कि चूंकि मैं अस्पताल का कर्मचारी था इसलिए डाक्टरों ने दिन–रात मेहनत करके उसे बचा लिया। डाक्टर ने कहा था कि पांच वर्ष की होने तक उसका विशेष ख्याल रखना होगा। दिमाग पर जोर व धमक न पड़े। जब वह चार साल की हो गयी तो हमने उसे शहर उसके चाचा विजय पाटिल के पास पढ़ने भेज दिया। वहां उसकी एकमात्र बड़ी बहन मनाली पहले से पढ़ाई कर रही थी। ज्योति पाटिल जो वैष्णवी की मौसी और चाची दोनों हैं, का कहना था कि उनकी बेटी गिरिजा पाटिल भरतनाट्यम सीखा करती थी। डॉल (वैष्णवी का प्यार वाला नाम) उसे छुप–छुप कर कॉपी करती थी। एक दिन उसकी चोरी पकड़ी गयी और गुरुजी ने सबके सामने नृत्य करने को कहा। डॉल की लगन देखकर सब दंग रह गये और फिर उसी दिन से उसकी विधिवत शिक्षा शुरू हो गयी।

वैष्णवी को अपनी दादी के हाथ का बनी बाजरे की रोटी व मिर्ची का ठेका (चटनी) बेहद पसंद है। वे अपनी मां मीनाक्षी मधुकर पाटिल को बहुत याद करती हैं। जब भी छुट्टी मिलती है उनसे मिलने गांव जरूर जाती हैं। माधुरी दीक्षित को वह अपना रोल मॉडल मानती हैं और सलमान खान की प्रशंसक हैं। उसने कई देशों की यात्रा की हैं।

वैष्णवी को आज भी वह दिन नहीं भूलता, जब पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल से उनकी मुलाकात पुणे राजभवन में हुई थी। उन्होंने जिन्दगी में हमेशा आगे बढ़ने और नयी ऊंचाइयां छूने का आशीर्वाद भी दिया। वैष्णवी कहती हैं कि जब तक वे नाच नहीं लेतीं, तब तक उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता। वैष्णवी भविष्य में भरनाट्यम में डाक्टरेट करना चाहती हैं और अपने नाम की डांस अकादमी खोलना चाहती हैं।

●

यशी : उम्र कम, लक्ष्य बड़ा

यशी का नाम ताइक्वांडो सर्किट में पहचान का मोहताज नहीं है। कानपुर में बिलाबाँग हाई इंटरनेशनल स्कूल की कक्षा सात में पढ़ने वाली यशी अभी केवल 11 साल की हैं और ब्लैक बेल्ट धारक हैं। यशी जब पांच साल की थीं, तभी से ताइक्वांडो से नाता जोड़ लिया था। यशी 2009 में शुरू हुए सुपर फिन नामक नये अंडर–16 ग्रुप में लगातार तीन बार स्वर्ण पदक जीतकर एक नया कीर्तिमान बना चुकी हैं। अब कोई इस कीर्तिमान कोई तोड़ पायेगा, फिलहाल दिखायी नहीं दे रहा है। यशी 2009 में बदायूं में आयोजित 27 वीं सब जूनियर (अंडर–14) में ताइक्वांडो चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक, इसी साल लखनऊ में आयोजित तृतीय यूपी राज्य ताइक्वांडो प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल, 2010 में ग्रेटर नोएडा में आयोजित 28वीं सब जूनियर चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक और 2013 में रायबरेली में आयोजित 31वीं सब जूनियर ताइक्वांडो प्रतियोगिता में रजत पदक जीत चुकी हैं।

यशी के स्कूल के खेल अध्यापक व ताइक्वांडो प्रशिक्षक प्रयाग सिंह बताते हैं कि यशी मेरी बेटी है और जब पांच साल की थी, तभी से ताइक्वांडो में विशेष रुचि लेने लगी थी। वह नियमित अभ्यास में आतीं और जमकर तीन से चार घंटे तक पसीना बहाती। उनमें कुछ नया सीखने की ललक और समझदारी अद्‌भुत है। यशी अगर ऐसे ही मेहनत करती रही तो देश का नाम रोशन करेगी।

13 दिसम्बर 2004 को जन्मी यशी को अपनी मां रोहनी सिंह के हाथों के बने आलू के पराठे बेहद पसंद हैं। मांसाहार में उसे मुर्गा पसंद है। जब वह अवार्ड लेकर आती हैं तो चार टाइम पिज्जा मंगवा कर

ताइक्वांडो में आज यशी किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। उन्होंने एक नये ग्रुप सुपर फिन (अंडर–16) में लगातार तीन बार गोल्ड मेडल जीतकर एक नया रिकार्ड बनाया है। यशी ने जब आंख खोली तो अपने पिता और बुआजी को ताइक्वांडो सिखाते पाया। दोनों ट्रेनर हैं और उनके सिखाये तमाम बच्चे आज नाम कमा रहे हैं। यशी के सामने अपने ही घरवाले चुनौती थे। उसने इस चुनौती को स्वीकार किया और आज वे यूपी स्टेट की तीन चैम्पियनशिप में गोल्ड व एक सिल्वर लेकर यूपी का नाम रोशन कर रही हैं। वे बड़े होकर देश के लिए ओलम्पिक में स्वर्ण पदक लाना चाहती हैं और डाक्टर बनकर गरीबों की सेवा करना चाहती हैं।

खाती हैं। यशी खाली समय में नृत्य का अभ्यास करती हैं। उन्हें हिप–हॉप नृत्य बेहद पसंद है। इसके अलावा कार्टून चैनल देखना भी अच्छा लगता है। पढ़ाई में भी अव्वल रहने वाली यशी बताती हैं कि हर लड़की को अपनी सुरक्षा के लिए कोई न कोई मार्शल आर्ट सीखनी ही चाहिए। मौज मस्ती रूप में इसे सीखने में आपमें एक अलग ही आत्मविश्वास पैदा होता है।

यशी बताती हैं कि उसे इसकी प्रेरणा ताइक्वांडो खिलाड़ी अपनी बुआजी से मिली। यशी को ताइक्वांडो विशेषज्ञ बनाने में उनकी ब्लैक बेल्ट धारक व ताइक्वांडो की राष्ट्रीय खिलाड़ी बुआ जी राखी सिंह का प्रमुख सहयोग रहा है। उनका कहना है कि यशी एक दिन मुझसे भी आगे निकलेगी। मेरी तो तमन्ना है कि वह अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ी बने। यशी को नृत्य भी काफी अच्छा आता है। उसने स्कूल व बाहर कार्यक्रम दिये हैं और बहुत से अवार्ड भी जीते हैं। इस बार हम उसे डीआईडी में डालने चाहते थे लेकिन थोड़ा असमंजस की स्थिति रही और समय निकल गया। स्कूल में सब उसे 'फाइटर' बुलाते हैं। अगर किसी पर गुस्सा आ जाता है कि एक–दो किक घुमा देती हैं। यशी डाक्टर बनना चाहती हैं। उसका एक और सपना है कि वह ओलम्पिक में स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रोशन करे।

●

हेमन्त का बड़ा कमाल

2009 में जब सारेगामा लिटिल चैम्प का निर्णायक समारोह हुआ तो किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि पुनः प्रवेश से कार्यक्रम में लौटे मथुरा के हेमंत ब्रिजवासी बाजी मार लेंगे। हेमन्त की मेहनत और उनके लोकगायक पिता का मार्गदर्शन आखिर रंग लाया। फिर तो हेमन्त की गाड़ी चल निकली। उनके गाये भक्ति संगीत के पांच एल्बम आये और उनमें "मेरे ब्रज की माटी चंदन है", काफी लोकप्रिय हुआ। पिछले सालों में उन्होंने पार्श्व गायन में कदम रखा और फिल्म "अर्जुन द वारियर" में ...हीर न छड मैनू, फिल्म "सिंह साहब दि ग्रेट" में ...समय तू चलता आगे व "बाल गनेशा" में . . . "दे ताली दे ताली, बोलो गनेशा" गाकर यह स्थापित कर दिया कि वह आने वाले समय का फिल्मी गायक हैं। पिछले दिनों लिटिल चैम्प का शीर्षक गीत गाने के लिए आइफा अवार्ड से सम्मानित किये गये। लिटिल चैम्प के अलावा हेमन्त ने "कामेडी का डेली सोप" व "जो जीता वही सिकंदर" जैसे चर्चित रियाल्टी शो में अपनी अलग पहचान बनायी।

हेमन्त को याद है कि मथुरा के नौगांव में उन्हें ढाई किलोमीटर दूर संत श्री ब्रज मोहनलाल स्कूल के लिए पैदल ही जाना पड़ता था। पांच साल की उम्र से संगीत से जो नाता जुड़ा तो आज तक जुड़ा हुआ है। बचपन में एक बार पिता जी के साथ स्टेज पर कार्यक्रम देने का अवसर मिला। पिता हुकुम चंद्र ब्रजवासी बताते हैं कि पहले ही कार्यक्रम में हेमन्त छा गया। मैंने गले लगाकर पूछा कि बताओ, तुम्हें क्या चाहिए। "साइकिल दिला दो बापू, स्कूल जाने आने में थक जाता हूं।" फकीरी के आलम में दायें–बायें से जुगाड़ कर साइकिल दिलायी। हेमन्त की खुशी का

2009 में हेमन्त ब्रजवासी ने जब सारेगामा लिटिल चैम्प का खिताब अपने नाम किया था तो सुरेश वाडकर जी ने कहा था कि यह लड़का अपनी मेहनत व लगन से बहुत आगे जाएगा। हेमन्त अभी मात्र पंद्रह के हैं और उनके भक्ति संगीत के पांच एल्बम आ चुके हैं। तीन फिल्मों में गीत गा चुके हैं। दुनिया के शायद ही कोई शहर छूटा हो, जहां उन्होंने अपनी गायिकी का लोहा न मनवाया हो। हेमन्त की आवाज बदल गयी है। अब वे काफी परिपक्वता के साथ गाते हैं। उनकी आवाज में एक अद्भुत अंदाज है जो उन्हें सभी गायकों से अलग करता है। हेमन्त आगे चलकर साउंड इंजीनियरिंग का कोर्स करना चाहते हैं और एआर रहमान सरीखे संगीत निर्देशक बनने का सपना पूरा करना चाहते हैं।

ठिकाना न रहा और उसने जो रफ्तार पकड़ी तो सीधे मुम्बई नगरी में आकर समाप्त हुई। जी चैनल के साथ हेमंत को अमेरिका, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, स्वीटजरलैंड, सिंगापुर, हालैंड, मलयेशिया और भी अनेक देशों में लगातार चार महीनों तक घूम–घूमकर कार्यक्रम पेश करने का मौका मिला। चर्चित गायक सोनू निगम व महान संगीतकार एआर रहमान का साथ मिला। विदेशों में मैं भी हेमन्त के साथ–साथ जहां भी गया, लोगों ने उसे बहुत सराहा। वहां भारतीय संगीत के कद्रदानों की संख्या बहुत है।

30 नवम्बर, 1998 को जन्मे हेमन्त ने हाई स्कूल की परीक्षा 9.3 सीजीपीए से पास कर यह भी बता दिया कि वे जिस काम में हाथ डालते हैं, उसमें शिखर पर रहते हैं। क्रिकेट व तबला के दीवाने हेमन्त बताते हैं कि वे गांव के स्कूल में पढ़े होने के कारण अंग्रेजी से कोसों दूर थे। शुरू–शुरू में बहुत डर लगता कि कोई अंग्रेजी में कुछ पूछ न ले। जहां भी जाता तो मेरी कोशिश यह रहती कि सबसे पीछे खड़ा हो जाऊं। कोई सवाल न कर दे। मुझे अपनी इस कमजोरी पर विजय पानी थी सो मैंने भी प्रण किया कि जब इसी लाइन में रहना है तो अंग्रेजी से क्या डरना। अब हेमन्त फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते हैं।

बहन के बाद घर में तीन भाइयों में सबसे बड़े हेमन्त नुसरत फतेह अली खां को अपना प्रेरक व्यक्तित्व मानते हैं। हेमन्त बताते हैं कि पिछले पांच सालों में मैंने अपने अंदर काफी बदलाव महसूस किये हैं। अब मैं ज्यादा खुलकर लोगों से मिलता हूं और मेरे गायन में भी काफी आत्मविश्वास आया है। अब मैं चिन्नई में एआर रहमान साहब की एकेडमी से साउंड इंजीनियरिंग का कोर्स करना चाहता हूं। अगर आप अच्छे संगीत निर्देशक बनना चाहते हैं तो आपको साउंड इंजीनियरिंग आनी बहुत जरूरी है।

●

नन्ही ब्लागर पाखी की ऊंची उड़ान

'मेरा नाम अक्षिता है। मेरा निक नेम पाखी है। पाखी यानी पक्षी या चिड़िया। मैं भी तो एक चिड़िया हूं जो दिन भर इधर–उधर फुदकती रहती हूं। मेरा जन्म 25 मार्च 2007 को कानपुर में हुआ और फिलहाल मैं कक्षा तीन की विद्यार्थी हूं।' . . . यह है "पाखी की दुनिया" की नन्ही ब्लागर अक्षिता यादव उर्फ पाखी के ब्लाग की चंद लाइनें। पाखी देश की पहली सबसे कम उम्र की हिन्दी ब्लागर के रूप में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (2011) विजेता हैं। उन्हें यह पुरस्कार मात्र चार साल की उम्र में महिला व बाल विकास मंत्रालय की तत्कालीन मंत्री कृष्णा तीरथ द्वारा प्रदान किया गया। इसी साल नयी दिल्ली के हिन्दी भवन में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय ब्लागर सम्मेलन में "बेस्ट बेबी ब्लागर अवार्ड" से नवाजा गया। हिन्दुस्तान टाइम्स वूमेन अवार्ड (2013) के लिए भी उन्हें नन्ही ब्लागर के रूप में अभिनेत्री शबाना आजमी, सांसद डिम्पल यादव व संगीतकार साजिद द्वारा सम्मानित किया गया। लखनऊ में आयोजित द्वितीय अंतरराष्ट्रीय ब्लागर सम्मेलन (2012) में विशेष रूप से सम्मानित किया गया। काठमांडो में आयोजित तृतीय अन्तरराष्ट्रीय ब्लागर सम्मेलन में सबके आकर्षण का केन्द्र रहीं और वहां के पूर्व मंत्री व विधानसभा अध्यक्ष अर्जुन नरसिंह ने सम्मानित किया।

पाखी का जन्म कानपुर में हुआ। उस वक्त उनके पिता केके यादव डाक सेवा में निदेशक थे। मां आकांक्षा और पापा अपने ब्लाग में कुछ न कुछ पोस्ट किया करते थे। पाखी ने पूछा कि आप लोग मेरी पेंटिंग्स क्यों नहीं पोस्ट करते! पाखी की बात सबको जंच गयी। 24 जून 2009 को शुरू हुआ "पाखी की

अक्षिता यादव उर्फ पाखी देश की सबसे छोटी हिन्दी ब्लागर के रूप में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से (मात्र चार की उम्र में) सम्मानित हो चुकी हैं। दिल्ली के हिन्दी भवन में अन्तरराष्ट्रीय ब्लागर सम्मेलन में जब हिस्सा लेने गयीं तो सभी ने उन्हें गोद में उठा लिया। यहां उन्हें "बेस्ट बेबी ब्लागर" का अवार्ड दिया गया। हिन्दुस्तान टाइम्स वूमेन अवार्ड भी अपनी झोली में डाल चुकी हैं। अब तो जहां भी ब्लागरों का सम्मेलन होता है, तो पाखी को जरूर बुलाया जाता है। लखनऊ व काठमांडो भी अंतरराष्ट्रीय ब्लागर सम्मेलन में हो आयीं। जब कुछ नया बनाती तो तत्काल अपने ब्लाग पर पोस्ट कर देती हैं। पाखी बड़ी होकर आईएएस अफसर बनकर गरीबों की मदद करना चाहती हैं।

दुनिया" का ब्लाग। शुरू–शुरू में ड्राइंग अपलोड किया गया। पाखी की सृजनशीलता यहीं तक सीमित नहीं रही। उन्होंने अपने किस्से–कहानी लिखना शुरू किये। फिर कविताएं और विचार भी पोस्ट होने लगे। पिता ने कैमरा लाकर दिया तो पाखी के खींचे बेहतरीन चित्र भी ब्लाग में जगह पाने लगे। विविधता लिये पाखी का ब्लाग बेहद पसंद किया जाने लगा। देश की सीमा को लांघकर लगभग सौ देशों में 272 लोग नियमित पाठक बन गये। जब पाखी की पहुंच फेसबुक में हुई तो वहां तो लगभग 1000 मित्र बन गये। गूगल प्लस में भी 240 फालोअर पाखी के ब्लाग के पक्के पाठक बन गये। पाखी की इसी सृजनशीलता और लोकप्रियता से प्रभावित होकर राजस्थान के मशहूर बाल साहित्यकार दीनदयाल शर्मा ने अपनी बाल कविता की किताब "चूं–चूं" पर पाखी का चित्र ही लगा लिया।

पाखी के ब्लाग में शब्द शिखर, शब्द सृजन की ओर, डाकिया डाक लाया, सतरंगी प्रेम, बाल दुनिया, उत्सव के रंग, अपूर्वा जैसे स्तम्भ हैं, जिनमें बेहद रोचक जानकरियां, कलाचित्र, फोटोग्राफ, कविताएं, संस्मरण, विचार, पत्र, यात्रा वृतांत व स्कूल की गतिविधियों के अलावा परिवार में होने वाली छोटी–छोटी घटनाएं भी निरंतर जगह पा रही हैं। पाखी के कुछ पोस्ट यथा "बेटियों को मारो नहीं", "ममा का जन्मदिन आया" "पाखी माने पंछी या चिड़िया" व अंडमान–निकोबार के 62वें वनमहोत्सव पर "पाखी का गुलाब" आदि पोस्ट सचमुच पठनीय हैं।

पाखी की मम्मी आकांक्षा यादव बताती हैं कि पाखी बेहद शरारती हैं लेकिन उससे ज्यादा सृजनात्मक है। उसे पेंटिंग के अलावा फोटोग्राफी, कम्प्यूटर खेल, नृत्य व पढ़ना भाता है। वह हैप्पी ऑवर्स स्कूल, जोधपुर में क्लास तीन की छात्रा हैं। शाकाहारी पाखी को पनीर पुलाव, पनीर पराठे, पनीर पकौड़े व आइसक्रीम बेहद पसंद हैं। पाखी की एक छोटी बहन अपूर्वा भी हैं, जिनके साथ उनकी खूब छनती है। पाखी अडंमान निकोबार को काफी याद करती हैं, जहां उन्होंने काफी मस्ती की और अपने ब्लाग में शेयर भी किया। पाखी के पिता केके यादव बताते हैं कि पाखी जब मात्र दो साल की थीं तभी से मोबाइल, टेबलेट और लैपटॉप से दोस्ती कर ली थी। अगर देखा जाए तो आज ये बच्चों के खिलौने बदल गये हैं।

पाखी बड़ी होकर आईएएस अफसर बनना चाहती हैं। पाखी को अपनी किताबें फेंकना या बेंचना पसंद नहीं है वे अपनी किताबें, खिलौने और कपड़े जरूरतमंद को देना पसंद करती हैं। पाखी अपनी साम्रगी अपने ब्लाग (http://pakhi-akshita.blogspot.in) पर स्वयं अपलोड करती हैं।

●

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

बाल साहित्य सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
• महापुरुषों की जीवनियाँ	सम्पा. लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'	80.00
• प्रेरक लघुकथाएँ	डॉ. ए.के. अग्रवाल	165.00
• भारतीय बाल साहित्य के विविध आयाम	श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' (60%छूट)	250.00
• बालगीत साहित्य (इतिहास एवं समीक्षा)	निरंकार देव सेवक	245.00
• <u>प्रेमचन्द की दस कहानियाँ</u>		
रामलीला, गुल्ली डण्डा, ईदगाह,		
पंच परमेश्वर, मंत्र, कजाकी, परीक्षा,		
प्रेरणा, आत्माराम, दो बैलों की कथा	प्रत्येक प्रति का मूल्य रु. 15.00	

सम्पर्क सूत्र

निदेशक

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

6, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ - 226001

ISBN : 978-93-82175-66-7

मूल्य रु. 60=00